
२०

[illegible]

5434

Part - 3 333 — 476

Double Pages # 335

Total No of Folios. 144

Sharma

नं० ५८३४-घ
मनुस्मृतिः भाषाटीकोपेता (धर्मशास्त्रम्)
मूल कर्ता मनु महर्षिः
लिपिकः पं० गुलज़ार शर्मा
पत्राणि उद्धृत: १४७६ = (सम्पूर्णम्)
पत्राणि १४२

3

रात्रिदिन अपने पुरुषोंसे स्त्रियोंको अस्वतंत्र अर्था-
त् पराधीन करना विषयोंमें जो लगीहै उनको
अपने वशमें स्थापन करना २ बाल्यावस्थामें पि-
ता युवावस्थामेंपति वृद्धावस्थामें पुत्र स्त्रियोंकीर-
क्षाकरतेहैं स्त्री स्वतंत्र अर्थात् अपने अपने आ-

अस्वतंत्राः स्त्रियः कार्याः पुरुषैः
स्वैर्दिवानिशं विषयेषु च सज्ज-
न्त्यः संस्थाप्या आत्मनो वशे २
पिता रक्षति कौमारे भर्ता र-
क्षति यौवने रक्षन्ति स्थाविरे
पुत्रा न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति ३
कालेऽदाता पिता वाच्यो वाच्य-
श्चानुपयन् पतिः मृते भर्तरि
पुत्रस्तु वाच्यो मातुररक्षिता
४ ॥



धीन होनेके योग्य नहीं होतीहै ३ दान समय
में कन्याको न देवै तो पिता दोषी होताहै और
ऋतुकालमें स्त्रीको गमन करै पति तो दोषी होता
है भर्ताके मरे संते माताकी रक्षा पुत्र न करै तो
दोषी होताहै ४ थोड़े प्रसंगसेभी विशेष करके

न पति

स्त्रीयोंकी रक्षा करना और स्त्री अरक्षित नहीं तो
दोनों कुलको अर्थात् पितृकुलको भर्तृकुलको
शोक देतीहै ५ सब वर्णोंकी इसउत्तम धर्मको
देखतेहुए दुर्बल भर्ताभी भार्याकी रक्षार्थ य

सूक्ष्मेभ्योपि प्रसंगेभ्यः स्त्रियो
रक्ष्याविशेषतः द्वयोर्हिकुल॰
योःशोक मावहेयुररक्षिता ५
इमंहि सर्ववर्णानां पश्यंतो
धर्म मुत्तमं यतंते रक्षितं भा॰
र्या भर्तारो दुर्बलामपि ६ स्वां
प्रसूतिं चरित्रं च कुलमात्मा
नमेवच स्वंच धर्मं प्रयत्नेन
भार्यां रक्षन्हि रक्षति ७ ॥

त्नकरतेहैं ६ अपनी संतति और चरित्र कु॰
ल आत्मा अपना धर्म इनसबको भार्या रक्ष॰
ण करते संते रक्षा करैहै ॥ ७ ॥
ता

पति भार्यामें प्रवेश करके गर्भ होके संसारमें उत्पन्न होताहै जायामें जायात्व धर्म वही है । कि जायामें आप उत्पन्न होवे ८ जैसे मनुष्यका स्त्री सेवन करती है इसलिये संततिके विशुद्ध

पतिर्भार्यां सम्प्रविश्य गर्भो भूत्वेह जायते जायायास्तद्धि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः यादृशं भजते हि स्त्री सुतं सूते तथाविधं तस्मात्प्रजाविशुद्ध्यर्थं स्त्रियं रक्षेत्प्रयत्नतः ९ न कश्चिद्योषितः शक्तः प्रसह्य परिरक्षितुं एतैरुपाययोगैस्तु शक्यास्ताः परिरक्षितुम् १० ॥

र्थ बलपूर्वक स्त्रीकी रक्षा करने चाहिये ९ हठसे कोई पुरुष स्त्रीकी रक्षा करनेमें समर्थ नही होताहै आगे कहैंगे जो उपाय उससे रक्षा करनेके समर्थ पुरुष होताहै १० अर्थका

म॰
स्म॰टी॰
भा॰
३३४

334

संग्रह व्यय कर्म अर्थात् खर्च पवित्रता धर्म ।
अन्न बनाना गृहकी सामग्रीको देखना इन
सभ कर्मोंमें अधिकार देना ॥ आज्ञा करने वा
ले अच्छे पुरुषोंसे गृहमें रोकीहो स्त्री तिसपर
भी रक्षित नहीं होती अपनीको आपजो रक्षा

अर्थस्य संग्रहे चैनां व्यये चैव ।
नियोजयेत् शौचे धर्मे ऽन्नपक्त्या
च पारिणाह्यस्य चेक्षणे ॥ ।
अरक्षिताः गृहे रुद्धाः पुरुषैरा
प्तकारिभिः आत्मानमात्मना
यास्तु रक्षेयुस्ता सुरक्षिता ॥
पानं दुर्जन संसर्गः पत्याच
विरहोऽटनं स्वप्नोऽन्य गेहवास
श्च नारी संदूषणानि षट् ॥

करतीहै वही सुरक्षित होतीहै ॥ मद्यपान
दुर्जन संग पतिका विरह इधर उधर घूमना
अकालमें सोना औरके गृहमें वास यें छः नारी
के दूषणहैं ॥ १२ ॥

स्त्री रूप और वय इसको नहीं देखती सुरूपहो
अथवा कुरूपहो परंतु पुरुषहो उसीका भोग
करती है ॥१४॥ यत्न पूर्वक रक्षित भी स्त्रीहो परं
तु पुंश्चली पना चलचित्तता प्रेमका अभाव

नैता रूपं परीक्षंते नासां वय
सि संस्थितिः सुरूपम्वा विरू
पम्वा पुमानित्येव भुंजते ॥१४॥
पौंश्चल्याच्चलचित्ताच्च नैस्ने
ह्याच्च स्वभावतः रक्षिता यत्न
तोपीह भर्तृषेता विकुर्वते
॥१५॥ एवं स्वभावं ज्ञात्वासां प्रजा
पति निसर्गजं परमं यत्नमा
तिष्ठे पुरुषो रक्षणं प्रति ॥१६॥

स्वभाव इन करके भर्त्ताका विकार करतहीं
है ॥१५॥ ब्रह्माके सृष्टि समयमें स्त्रियोंका यह
स्वभाव जानके रक्षाके लिये पुरुष यत्नको
करै ॥१६॥ शय्या आसन अलंकार इन्होंको ब

नानेके स्वभाव काम क्रोध कठोरता द्रोहभाव
कुचाल इन सभको स्त्रियोंके लिये मनुजीने सृ
ष्टिके आदिमें कल्पना किया अर्थात् दिया इस
लियेयत्नसे रक्षा करना चाहिए १७ मंत्रो कर

शय्यासन मलंकारं कामं क्रो
धं मनार्जवं द्रोहभावं कुचर्यां
च स्त्रीभ्योमनुरकल्पयत् १७

नास्ति स्त्रीणां क्रियामंत्रै रि॰
तिधर्मो व्यवस्थितः निरिंद्रि॰
याह्य मंत्राश्च स्त्रियोऽन्टत मि
तिस्थितिः १८ ॥

को क्रिया स्त्रियोंकी नहीं है यह धर्म व्यवस्था
के अर्थमें है इंद्रिय और मंत्र इन दोनों स्त्री रहित॰
हैं असत्यकी नाईं अशुभ है यह शास्त्रकी
मर्यादा है १८ ॥

स्त्रियोंका व्यभिचारशीलता स्वभावहै यह कहा ति
समें श्रुतिप्रमाण देतेहैं बहुत श्रुति वाक्यमे लिखा
है कि हम नही जानते ब्राह्मणहै कि अब्राह्मणहै
यह आदि वेदमें लिखाहै उसमें प्रायश्चित्त रूप जो
श्रुतिहै उसको सुनो १९ कोई पुरुष माताका मा
नसव्यभिचार देखके कहताहै कि मन वाणी का

तथा च श्रुतयो बह्व्यो निगी
ता निगमेष्वपि स्वालक्षण्य
परीक्षार्थं तासां शृणुत नि
ष्कृतीः १९ यन्मे माता प्रलुलु
भे विचरन्त्यपतिव्रता तन्मे
रेतः पिता वृङ्क्ता मित्यस्यैत
न्निदर्शनं २० ध्यायत्यनिष्टं य
त्किञ्चित्पाणिग्राहस्य चेतसा
तस्यैष व्यभिचारस्य निह्न
वः सम्यगुच्यते २१

यकर्मकर के पतिको
छोड़कर दूसरे पुरुषकी इच्छा नकरै सो पतिव्रता
कहलातीहै उससे भिन्न अपतिव्रता कहलातीहै मेरे
माता अपतिव्रता होकर परपुरुषमे लोभकिया
वह परपुरुष संकल्प हुए माताका रजरूप वीर्य
को मेरा पिता शुद्ध करै इसश्लोकरूपमंत्रका प्रथम
मे तीन पाद स्त्रियोंके व्यभिचार शीलताका बोधकहै

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
335/2

यह मंत्र चातुर्मास्य यागमें काम आती है २० जिन क
रके पतिका अनिष्ट जो कुछ ध्यान करती है उसव्य
भिचारका पूर्व कथित मंत्र सुन्दर शोधन है यह मंत्र
आदि ऋषियोंने कहा २१ जिसविधिकरके जैसे पुरु
षसे संयोग स्त्री करती है वैसाही आपहोती है जैसे
समुद्रकरके नदी २२ प्रथम योनिसे उत्पन्न अक्षमा
ला नामकी स्त्रीने वशिष्ठ ऋषिका संयोग किया

यादृग्गुणेन भर्त्रा स्त्री संयुज्ये
त यथाविधि तादृग्गुणा सा
भवति समुद्रेणैव निम्नगा २२
अक्षमालावशिष्ठेन संयुक्ता
धमयोनिजा शारङ्गी मन्द
पालेन जगामाभ्यर्हणीयता
२३ एताश्चान्याश्च लोकेऽस्मि
न्नपकृष्टप्रसूतयः उत्कर्षं
योषितः प्राप्ताः स्वैः स्वैः भर्तृ
गुणैः शुभैः २४ ॥

और सारंगी ने मंदपालका संयोग किया दोनों पूजि
त हुई २३ इन्हें आदि और भी स्त्री नीच योनिसे उत्पन्न
हुई इस लोकमें अपने अपने भर्ताके गुणोंसे बडाई
को प्राप्त हुई २४ ॥

स्त्री पुरुषोंकी नित्य शुभयात्रा को मैंने कहा अब इसलोकमें परलोकमे उत्तरकालमें सुखहो तो जो धर्मसंज्ञाहै उसकोजानो २५ गृहमें उत्पत्तिके लिये बड़ी भाग्यवाली पूजाके योग्य गृहकी दी

एषोदिता लोकयात्रा नित्यं स्त्रीपुंसयोः शुभा प्रेत्येह च सुखोदर्कान् प्रजाधर्मान्निबोधत
प्रजनार्थं महाभागाः पूजार्हा गृहदीप्तयः स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन
२६ उत्पादन मपत्यस्य जातस्य परिपालनं प्रत्यहं लोकयात्रायाः प्रत्यक्षं स्त्री निबंधनं २७ ॥

प्ति स्त्री और लक्ष्मीहै इन्होंमें विशेष कुछ नही है दोनो समानहै २६ संतति धर्मकार्य उत्तम से वा अपना और पितर इन दोनोंका स्वर्ग ये सब स्त्रीके अधीनहै २७ पुत्र और कन्या इन्होंकी उ

त्पत्ति उत्पन्न भये का कारण नित्यही लोकया
भा इन सभोंका प्रत्यक्ष आदिकारणस्त्री है २८
मन वाणी देहसे संयत अर्थात् दोष रहित
होकर अपने पतिको छोडकर दूसरे पुरुष
का संयोग जोस्त्री नहीकरते सो भर्तृलोक

अपत्यंधर्मकार्याणि शुश्रूषा
रतिरुत्तमा दाराधीन स्तथा
स्वर्गः पितॄणा मात्मनश्चह
२८ पतिं यानाभिचरति मनो
वाग्देह संयता साभर्तृलोका
नाप्नोति सद्भिः साध्वीतिचो॰
च्यते २९ व्यभिचारात्तु भर्तुः
स्त्री लोके प्राप्नोति निंद्यतां
शृगालयोनिं चाप्नोति पापरो
गैश्च पीड्यते ३॰ ॥

को पातीहै और लोकमें भले लोग उसको सा
ध्वी कहतेहैं २९ लोकमें भर्ताके व्यभिचारमें स्त्री
निंदित होतीहै और सियारकी योनिको पाती॰
है पापरोगीकरके पीडित होतीहै । ३॰ ॥

पुत्रोंने पूछे बडे ऋषियोंने पुत्रकी प्रति संसा
रके हित प्रसिद्ध रूप जो धर्म कहा उसको ज्ञा०
नो ३१ भर्ताका पुत्रहै ऐसा सभ जानतेहैं और
भर्तामें दो प्रकारकी श्रुतिहै बीजवालेका पुत्र

पुत्रे प्रत्युदिते सद्भिः पूर्वजैश्च
महर्षिभिः विश्वजन्य मिमं पु०
ण्य मुपन्यासं निबोधत ३१
भर्तुः पुत्रंविजानंति श्रुति
द्वैधं तु भर्तरि प्राहु रुत्पादकं
केचि दपरे क्षेत्रिणं विदुः ३२
क्षेत्रभूता स्मृता नारी बीजभू
तः स्मृतः पुमान् क्षेत्रबीज
समायोगा त्संभवः सर्वदेहि
नाम् ३३

है ऐसा कोई कहतेहैं क्षेत्रवालेका पुत्रहै ऐसा
कोई कहतेहैं ३२ क्षेत्र भूत नारीहै बीजरूप पुरु
षहै क्षेत्र बीजके संयोगसे सभ देह वालोंकी उ
त्पत्तिहै ३३ कहीं वीर्य बडाहै कहीं योनि बडा

म॰
स्म॰टी॰
भा
३३३

337

है जहां दोनोंसेंमहै सो संततति बहुत सच्छीहै
अथ बीज और योनि इनदोनोंमें बीज बडाहै स
भ जीवोंकी उत्पति बीजके लक्षण करके लक्षि

विशिष्टं कुत्रचिद्बीजं स्त्रीयो
निस्त्वेव कुत्रचित् उभयं तु स
मं यत्र सा प्रसूतिः प्रशस्यते
अथ बीजस्यैव च योन्याश्च बी
जमुत्कृष्टमुच्यते सर्वभूत॰
प्रसूतिर्हि बीजलक्षणलक्ष॰
ति ३४ यादृशं तूप्यते बीजं
क्षेत्रे कालोपपादिते तादृशो
हति तत्तस्मिन्बीजं स्वैर्व्यंजि॰
तं गुणैः ३५ ॥

तैसें ३४ बीज बोनेके समयमें क्षेत्रमें जैसा बीज
योनेहैं तैसा अपने गुणों करके उत्पन्न होताहै
३५ ॥

पंचमहाभूतोंसे आरंभके घास जितने जीवहैं इन्हों की नित्य योनि अर्थात् कारण हैतेहैं और कोईभी योनिके गुणको वृष्टिमें बीज अपेक्षा नहीं करता इसलिये बीजही प्रधानहै ३७ एकही खेतमें बोनेकी समयमें खेती करनेवाले ने यव गेहूं चं ना आदिबीजको बोया और वहबीज अपने स्व

इयं भूमिर्हि भूतानां शाश्वती योनिरुच्यते नच योनि गुणान्कांश्चि द्वीजं पुष्यति पुष्टिषु भूमावप्येक केदारे कालोप्तानि कृषीबलैः नानारूपाणि जायंते बीजानीह स्वभावतः ३८ व्रीहयः शालयो मुद्गा तिला माषास्तथायवा यथाबीजं प्ररोहंति लशुनानीक्षवस्तथा ३९

भावसे नाना प्रकारहोतीहै भूमितो एकरूपहै परंतु बीज एकरूप नहीहोता इसलिये बीजही प्रधानहै ३८ व्रीहि अर्थात् साठी आदिशालि अर्थात् धान आदि मूंग तिल उड़द यव लह सन ऊख ये सब बोये संते नानारूपसे उगतेहैं ३९।

म॰
स्मृ॰टी॰
भा॰
३३८

338

बोया और उगा और यह नहीं होता किंतु जो बोते
है वही उगता है ४० अब क्षेत्रको प्राधान्य देखा
ते हैं इस कारणसे नम्र अच्छे जाननेवाले ज्ञान
अर्थात् वेद विज्ञान अर्थात् व्याकरण शास्त्र आ॰
दि वेदका अंग इन्होंके जानने वाली आयुषके
इच्छा करनेवाले जो मनुष्य है सो परस्त्रीमें बी

अन्यदुप्तं जातमन्य दित्येतं॰
नोपपद्यते उप्यते यद्धि यद्बी
जं तत्तदेव प्ररोहति ४० तत्प्रा
ज्ञेन विनीतेन ज्ञान विज्ञान
वेदिना आयुष्कामेन वप्तव्यं
न जातु परयोषिति ४१ अत्र
गाथा वायुगीताः कीर्तयंति
पुराविदः यथा बीजं न वप्त॰
व्यं पुंसा पर परिग्रहे ४२ ॥

जको कभी न डाले ४१ जिस प्रकारसे परस्त्रीमें
बीजको न देना इस अर्थमें पूर्वकालके जानने
वाले ऋषियोंने वायुका कहा हुआ जो गाथा
अर्थात् छंद विशेषयुक्त वाक्य उसका कीर्तन
किया है ४२॥

आकाशमें बाणसे विद्धरूप पक्षीको फेर बाणसे वेद करने वालेका बाण जिस प्रकारसे नाशके प्राप्तहोताहै अर्थात् प्रथम जितने वेद किया उसीको मृग लाभहोताहै तिसी प्रकारसे परस्त्रीमें बीजनाशके प्राप्तहोताहै अर्थात् जिसकी स्त्रीहै उसको अपत्य लाभहोताहै ॥ इस पृथिवीको पृथुराजाने प्रथम ग्रहण किया पीछे ।

नश्यतीषु यथा विद्धः खे विद्ध-
मनु विध्यतः तथा नश्यति वै
क्षिप्रं बीजं पर परिग्रहे ॥ पृ
थोरपीमां पृथिवीं भार्यां पूर्व
विदो विदुः स्थाणुच्छेदस्य के
दारमाहुः शल्यवतो मृगं ॥
एतावानेव पुरुषो यज्जायात्मा
प्रजेतिह विप्राः प्राहुस्तथा चै
तद्यो भर्ता सा स्मृतांगना ॥

अनेक राजोंके संबंध भए संते भी पृथुकी भार्या है यह अतीतकालके जाननेवालोंने जानाहै और जिसने ऊंच नीच भूमिके सम कियाहै उसीका खेतहै जिसने प्रथम बाणसे वध कियाहै उसीका वह मरा हुवा पक्षीहै यह पूर्व कालके जानने वालोंने कहा ॥ एकही पुरुष नहीं होता किंतु भार्या और अपनी देह अपत्य अर्थात् पुत्र कन्या यह सभ मिलके पुरुष कहाताहै

म॰
स्म॰टी॰
भा॰
३३९

339

यह ब्राह्मणोंने कहा कि जो भर्ता है सोई भार्या है
यह ऋषियोंने कहा ४५ बेचनेसे और त्यागसे ।
स्त्री भार्याके भर्तात्व अर्थात् भार्याका धर्मसे नही
छूटते एवंही ब्रह्माने यह धर्मका निर्णय किया
यह हम सब जानते हैं ऐसा मनुजीने कहा ४६
विभाग कन्यादान देंगे यह तीनों बात भले लो॰

ननिष्क्रय विसर्गाभ्यां भर्तु
र्भार्या विमुच्यते एवं धर्मं वि
जानीमः प्राक् प्रजापति नि
र्मितं ४६ सकृदंशो निपत॰
ति सकृत्कन्या प्रदीयते स
कृदाह ददानीति त्रीण्येता॰
नि सतां सकृत् ४७ यथा
गोश्वोष्ट्रदासीषु महिष्यजा॰
विकासु च नोत्पादकः प्रजा॰
भागी तथैवान्यांगनास्वपि ४८

गोंकी एकही वेर होती है ४७ जिस प्रकारसें गौ
घोड़ा ऊंट दासी भैंसि बकरी भेडि इनोंमें संतति
उत्पन्नकरने वालीका स्वामी उत्पन्नहुई संतति
को नही पाता तिसी प्रकारसे दूसरेकी स्त्रीमें
बीज डालने वाला अपत्य अर्थात् संततिको ।
नही पाता ४८ ॥

दूसरेकी खेतमें बीज बोनेवाला उस बीजके ९
फलको कभी नहीं पाता ४९ दूसरेकी गौमें दू
सरेका वृषभ सौ वछडेको उत्पन्नकरै तो गौ
का स्वामी उस वछडेको पाताहै और वृषभ ९

ये क्षेत्रिणो बीजवन्तः परक्षे
त्र प्रवापिणः ते वै सस्य जा
तस्य न लभंते फलं क्वचित् ४
यदन्य गोषु वृषभो वत्साना
जनयेच्छतं गोमिनामेव ते व
त्सा मोघं स्कंदित मार्षभं ५०
तथैवा क्षेत्रिणो बीजं परक्षेत्र
प्रवापिणः कुर्वंति क्षेत्रिणा
मर्थं न बीजी लभंते फलं
५१ ॥

का वीर्य व्यर्थ हुआ ५० तिसी प्रकारसे दूसरेके
खेतमें बीजबोने वाला खेतवालेका अर्थकर
ताहै आप फलको नहीं पाता ५१ ॥

म॰
स्मृ॰टी॰
भा॰
३६॥॰

340

इस स्त्रीमें जो उत्पन्न हो सो हमारा और तुम्हारा
दोनोंके होवे ऐसा फलको मनमें न रखके जो
उत्पन्न किया सो क्षेत्रवालेका होताहै बीजसे
योनि बहुत बडीहै ५२ इस स्त्रीमें जो उत्पन्न हो
सो हमारा और तुम्हारा दोनोंका होवें ऐसा म

फलं त्वनभिसंधाय क्षेत्रीणां
बीजिनां तथा प्रत्यक्षं क्षेत्रि
णामर्थो बीजाद्योनिर्गरीय
सी ५२ क्रियाभ्युपगमात्त्वेतद्
बीजार्थं यत्प्रदीयते तस्येह
भागिनौ दृष्टौ बीजी क्षेत्रिक
एव च ५३ ओघवाताहृतं बी
जं यस्य क्षेत्रे प्ररोहति क्षेत्रि॰
कस्यैव तद्बीजं न वप्ता लभ
ते फलम् ५४ ॥

नमें रखके जो उत्पन्न किया उसका भागी
क्षेत्रवाला और बीजवाला दोनों होतेहैं ५३ वा
युसे उडिके बीज जिसके खेतमें पडा उसका फ
ल खेतवाला पाताहै बीजवाला नहीपाता ५४ ॥

गौ घोडा दासी ऊंट बकरी भेडि पक्षी भैंसि इन्हों
की उत्पत्तिमें यही धर्मजानना ५५ भृगुजी १
कहतेहैं कि आपलोगोंमें वीज और योनिका
प्राधान्य अप्राधान्यको कहा इसके अनंतरस्त्रि

एषधर्मो गवाश्वस्य दास्युष्ट्रा
जाविकस्यच विहंगमहिषी
णांच विज्ञेयः प्रसवंप्रति ॥ ५५
एतद्वः सारफल्गुत्वं वीजयो
न्योः प्रकीर्तितम् अतःपरं प्र
वक्ष्यामि योषितान्धर्म माप
दि ५६ भ्रातुर्ज्येष्ठस्य भार्या
या गुरुपत्न्यनुजस्य सा यवी
यसस्तु याभार्या स्नुषाज्येष्ठस्य
स सा स्मृता ५७

योंके आपत्कालमें जो धर्महै उसको कहेंगे ५६
जेष्ठभाईकी जो स्त्रीहै सो छोटी भाईकी गुरु
पत्नी कहातीहै और छोटी भाईकी जोस्त्रीहै
सो जेष्ठे भाईकी पतोहू कहातीहै ५७ ॥

म॰
स्क॰ टी॰
भा॰
३४१

आपत्काल नहो और पिता आदिकी आज्ञाभीभ॰
ई हो परंतु ज्येष्ठे भाईकी स्त्रीमें कनिष्टि और कनि॰
ष्ठ भाईकी स्त्रीमें ज्येष्ठ गमनकरै तो दोनो पतित
होतेहै ४८ संतानके स्वभावमें श्वशुर आदिकी
आज्ञाको पाय ऋप स्त्री सपिंडेसे अथवा देवरेसे

ज्येष्ठो यवीयसो भार्यां यवी॰
यान्वा ग्रजस्त्रियं पतितौ भ॰
वतो गत्वा नियुक्ता वप्यना
पदि ४८ देवराद्वा सपिंडाद्वा
स्त्रिया सम्यङ्नियुक्तया प्रजे॰
प्सिताधि गंतव्या संतानस्य प
रिक्षये ४९ विधवायां नियु॰
क्तस्तु घृताक्तो वाग्यतो निशि
एक मुत्पादयेत्पुत्रं न द्वितीयं
कथंचन ६०

रक्षित प्रजाको प्राप्तकरै ४९ विधवा स्त्रीमें पि
ता आदिकी आज्ञाको पाय ऋप पुरुष रातको
मौनहोके देहमें घी लगाके एक पुत्रको कभी
न उत्पन्न करै ६० ॥

एक पुत्र और अपुत्र ये दोनो समहैं ऐसा बड़े लोगों
के प्रवादसे पिता आदिकी आज्ञासे उत्पन्न जो पु
त्रहै उसका प्रयोजन सिद्ध नभया ऐसा मानने
वाले और पिता आदिकी आज्ञासे पुत्रोत्पादन
विधिके जाननेवाले जो दूसरे आचार्यहैं सो
स्त्रियोंमें दूसरे पुत्रकी उत्पत्तिको भी धर्मसे मा

द्वितीयमेके प्रजने मन्यंते
स्त्रीषु तद्विदः अनिर्हते नि
योगार्थे निर्हते तु यथावि
धिः ६१ विधवायां नियोगा
र्थे पश्यंतो धर्मतस्तयोः गु
रुवच्च स्नुषावच्च वर्तेयातां
परस्परं ६२ नियुक्तौ यौ विधिं
हित्वा वर्तेयातां तु कामतः
तावुभौ पतितौ स्यातां स्नुषा
ग गुरुतल्पगौ ६३ ॥

नतेहैं ६१ जब गर्भ उत्पन्न हो चुका तब जेठा
भाई गुरुकी छोटे भाईकी स्त्री पतोहूकी नाई
आपसमें दोनो रहें यह जब जेठा भाईको क
निष्टभाईकी स्त्रीमें पुत्र उत्पन्न करनेकी पिता
आदिकी आज्ञा भईहो तब जानना ६२ पिता
आदिकी आज्ञापाके और विधि छोड़के इच्छासे

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
३४२

जेठा भाई कनिष्ठ भाईकी स्त्रीमें गमन करै अ॰
थवा कनिष्ठ भाई जेठा भाईकी स्त्रीमें गमन क॰
रै तो दोनो पतित होतीहै जेष्ठा भाई पतोहूमें
गमन करने वाला कहातोहै छोटा भाई गुरुप
त्नीमें गमन करनेवाला कहातोहै ६३ अब नि॰
योग अर्थात् पुत्रोत्पत्तिके लिये पिता आदिकी

नान्यस्मिन्विधवा नारी नियु
क्तव्या द्विजातिभिः अन्यस्मि
न्हि नियुञ्जाना धर्मं हन्युः ।
सनातनं ६४ नोद्वाहकेषु
मंत्रेषु नियोगः कीर्त्यते क
चित् न विवाह विधावुक्तं
विधवा वेदनं पुनः ६५ अ
यं द्विजैर्हि विद्वद्भिः पशुध
र्मो विगर्हितः मनुष्याणा
मपिप्रोक्तो वेणे राज्यं प्रशा॰

आज्ञाका नि सति ६६ षेध करतेहैं ब्राह्मण
क्षत्रिय वैश्य इन तीनोंवर्ण विधिवास्त्रीमें पुत्रो॰
त्पत्तिके लिये आज्ञा नदेवै और आज्ञादेनेसे नित्य
धर्मको नाश करतेहै ६४ विवाहके मंत्रमें नियो
गनही लिखाहै और विधवास्त्रीसाथ रमण नही ।
लिखोहै ६५ राजा वेणके राज्य यह पशु धर्मको म
नुष्यों के लिये वेणराजाने कहा उसको पंडित द्विजोंने निंदा कियाहै ६६

पूर्वकालमें कामसे नष्ट बुद्धिवाला राजर्षियों में श्रेष्ठ वेण राजा संपूर्ण पृथिवीका भोगकरता संते वर्णोंका संकर अर्थात् मिलावट किया ६७ उस दिनसे मोहकरके संतानके लिये विधवा स्त्रीको जो आज्ञा देताहै उसकी

समहीमखिलां भुंजन् राजर्षि प्रवरः पुरा वर्णानां संकरं चक्रे कामोपहतचेतनः ६७ ततः प्रभृति यो मोहात्प्रमीतपतिकां स्त्रियं नियोजयत्यपत्यार्थं तं विगर्हंति साधवः ६८ यस्या म्रियेत कन्याया वाचा सत्ये कृते पतिः तामनेन विधानेन निजो विंदेत देवरः ६९

निंदा साधु लोग करते हैं ६८ नियोगकी विधि और निषेधको कहा उसका अवस्था कहते हैं जिस कन्याको वाणीसे किसीको दिया और वह मरगया उसका सहोदर भाई उस कन्याका विवाहको आगे जो विधि कहैंगे उसकरके

करै ६९ पवित्रता सहित व्रतकरनेवाली श्वेतव
स्त्र पहरेहुए कन्याका विधिपूर्वक विवाह करके
सम ऋतुकालकी रात्रिमे एक एक वार गर्भ ग्र०
हण तक उसका गमन करै उसमें जो संतति
होगी सो जिसको वाणीसे प्रथम दियाहै उसी
का कहावेगा ७० बुद्धिमान मनुष्य एकको क

यथा विध्यधि गम्यैनां शुक्ल
वस्त्रां शुचिव्रतां मिथो भजे
ता प्रसवा सकृत्सकृदृता
वृतौ ७० न दत्वा कस्यचित्क
न्यां पुनर्दद्या द्विचक्षणः ०
दत्वा पुनः प्रयच्छन्हि प्रा
प्नोति पुरुषानृतं ७१ विधि
वत्प्रति गृह्यापि त्यजेत्कन्यां
विगर्हितां व्याधितां विप्र
दुष्टां वा छद्मना चोपपादि०
न्यादेके फिर उ तां ७२ सकन्याको दूसरेको
नदेवै कदाचित् देवै तो सहस्र पुरुषके वधको
पातकीहै सप्तपदीके पूर्वभार्याके धर्मकी उत्पत्ति
नहीं होती तब दूसरेके देनेकी शंकाभई इसलिये
इस वचनको कहा ७१ निंदित व्याधियुक्त बहुत उ
ह कपटसे प्राप्त जो कन्या उसको विधिपूर्वक ग्रहण करकेभी त्यागकरना ७२

343

दोष युक्तकन्याके दोषको विनाकहे उसको
देनेवाला दुरात्माका कन्यादान व्यर्थहै ७३ भा
र्याके जीविकाकरके कार्यवाला पुरुष विदेश
जावे क्यौंकि भूखोंसे मरती हुई शीलवती स्त्री
भी परपुरुषको भजन करेगी इसलिये जीविका
करके तब विदेशमें जावे ७४ जीविका विधा-
न करके विदेशमें पुरुषके गई संते सूतकात

विधाय वृत्तिम्भार्यायाः प्रव
सेत्कार्यवान्नरः अवृत्तिकर्षि
ता हि स्त्री प्रदुष्येत्स्थितिम-
त्यपि ७४. यस्तु दोषवतीं क
न्यामनाख्यायोपपादयेत्
तस्य तद्वितथं कुर्यात्क-
न्यादातुर्दुरात्मनः ७३. वि-
धाय प्रोषिते वृत्तिं जीवेन्नि-
यममास्थितः प्रोषिते त्ववि
धायैव जीवेच्छिल्पैरगर्हितैः ७५

नियममें स्थित होके स्त्री जीवै और जीविका विधा
न विना किए हुए विदेशमें पुरुषके गए संते सू
तकातना और अनिन्दित कारीगरी इन्हों आदि
जो कर्महै उसे जीवै ७५ गुरूकी आज्ञा संपाद

344

न आदि धर्म कार्यके लिये विद्याके अर्थ यश॰
के अर्थ कामके लिये विदेशगए पुरुषकी आशा
को क्रमसे आठ छः तीन वर्षतक करे इसके
अनंतर पतिके समीपमें स्त्री जावे ७६ विरोध॰
करनेवाली स्त्रीको प्रतीक्षा अर्थात् आशा एक
वर्षतक पुरुष करे इसके अनंतर भी विरोध कर
तीरहे तो भूषण आदि जो धन दियाहै उसको॰

प्रोषितो धर्मकार्यार्थं प्रतीक्ष्यो ऽष्टौ नरः समाः विद्यार्थं षट् यशोऽर्थं वा कामार्थं त्रींस्तु वत्सरान् ७६ संवत्सरं प्रतीक्षेत द्विषन्तीं योषितं पतिः ऊर्ध्वं संवत्सरात्त्वेनां दायं हृत्वा न संवसेत् ७७ अतिक्रामेत्प्रमत्तं या मत्तं रोगार्तमेव वा सा त्रीन्मासान्परित्याज्या विभूषणपरिच्छदा ७८ ॥

लेकर उसके साथ संभोग नकरे भोजन और व
स्त्रको तोदेवे ७७ जूवा खेलना आदिसे प्रमत्त मद
करने वाली वस्तु सहित रोगसे दुःखित ऐसे प
तिका अपमान जो स्त्री करतीहै उसको तीन म
हीना तक भूषण वस्त्र नदेना ७८ ॥

वायु आदिसे उन्मत्त पतित नपुंसक व्याधिसे वीजर-
हित पापरोगी ऐसे पतिसे विरोध करने वाली स्त्री
का त्यागकरना और उसका धन नलेना ७९ मद्य
पीनी वाली साधुओंके आचरणसे रहित शत्रुता
करने वाली व्याधिसे युक्त घातकरनेवाली निरं-
तर अर्थका नाशकरनेवाली निरंतर अर्थका ना

उन्मत्ते पतिते क्लीव मबीजे
पापरोगिणि न त्यागोस्ति द्विष
न्त्याश्च नच दायाप वर्तनम् ७९
मद्यपासाधुवृत्ता च प्रतिकूले
च याभवेत् व्याधिता वाधिवे-
त्तव्या हिंसार्थघ्नी च सर्वदा ८०
वंध्याष्टमे धिवेद्याब्दे दशमे तु
मृतप्रजा एकादशे स्त्री जन-
नी सद्यस्त्व प्रियवादिनी ८१

श करने वाली ऐसी स्त्रीहो तो दूसरा विवाह कर-
ना ८० वंध्या अर्थात् जिसका संतान हो मृतप्रजा
अर्थात् जिसकी संततिहोहोके मरजाय केवल
कन्याहीको उत्पन्न करने वाली ऐसी स्त्रीके ऊपर
क्रमसे आठएं दसएं ग्यारहे वर्षमें दूसरा विवाह
करना और अप्रियबोलने वाली स्त्रीके ऊपरतो
तुरंत दूसरा विवाह करना ८१ जो स्त्री रोगिणी

हो परंतु हितकरनेवालीहो शीलसे युक्तहो इसी
के आज्ञापाके दूसरा विवाह करना और उसका
अपमान कभी न करना ८२ जिसस्त्रीके ऊपर दूस
रा विवाह पतिने किया और वह स्त्री रुष्टहोके
गृहसे निकलतीहो तो उसको रोकके गृहमें र॰

या रोगिणीस्यात्तुहिता संपन्ना
चैवशीलतः सानुज्ञाप्याधिवे
त्तव्या नावमान्याच कर्हिचि॰
त् ८२ अधिविन्नातुया नारी
निर्गच्छेद्रुषिता गृहात् सास
द्यः सन्निरोद्धव्या त्याज्यावा॰
कुलसन्निधौ ८३ प्रतिषिद्धा
पि चेद्यातु मद्यमभ्युदयेष्व
पि प्रेक्षा समाजं गच्छेद्वा सा
दंड्या कृष्णलानिषट् ८४ ॰

खना अथवा कुलकी समीप त्याग करना ८३
क्षत्रिय आदिकी स्त्री भर्ता आदिसे निवारितहै औ
र विवाह आदि उत्सवमें भी निषिद्ध मद्यको पीवे
अथवा नृत्य आदिस्थान जन समुदायमें गमनक
रे सो छःरत्ती सुवर्ण दंडदेवे ८४ ॥

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ये सभ अपने वर्णकी और दूसरे वर्णकी स्त्रियोंका विचार करें तो उन स्त्रीयोंके विचार करें तो उन स्त्रियोंकी श्रेष्ठ ये सभ वर्ण क्रमसे प्रधान होता है ८५ भर्त्ताके शरीरके सेवा नित्य धर्म कार्य इनको सभ वर्णोंमे अपने वर्णकी जो

यदि स्वाश्च पराश्चापि विंदेरन्
योषितो द्विजाः तासां वर्णक्र
मेणस्या ज्येष्ठ्यं पूजा च वेश्मच
८५ भर्तुः शरीर शुश्रूषां धर्मका
र्यं च नैत्यकं स्वाचैव कुर्यात्स
र्वेषां नास्वजातिः कथंचन ८६
यस्तु तत्कारयेन्मोहात्सजात्या
स्थितयान्यया यथा ब्राह्मण
चांडालः पूर्वदृष्टस्तथैव सः ८७

स्त्री है सोई करे दूसरी वर्णकी स्त्री न करे ८६ उन दोनों कर्मको अपनी वर्णकी स्त्री है रहत संते मोह से दूसरी वर्णकी स्त्रीसे करावे तो जैसा ब्राह्मणीमें शूद्रसे उत्पन्न ब्राह्मण चांडाल है तैसा वह है यह ऋषियोंने कहा ८७ उत्तमाचार आदिसे उत्कृष्ट

स्वरूप अपने जातिवाला ऐसा वर जब मिले तब छो-
टीभी कन्याहोवे अर्थात् विवाहके योग्य नहोवे तो
उसका विधिपूर्वक विवाह करदेना ८८ ऋतुमती
भी कन्या होकर गृहमें मरणतक रैहे परंतु उस-

उत्कृष्टायाभिरूपाय वराय स-
दृशायच अप्राप्तामपि तां त-
स्मै कन्यां दद्याद्यथाविधिः ८८
काम मामरणात्तिष्ठेद्गृहे क-
न्यर्तुमत्यपि नचैवैनां प्रयच्छे-
त्तुगुणहीनाय कर्हिचित् ८९ त्री-
णि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतु-
मती सती ऊर्द्ध्वं तु कालादेत-
स्माद्विन्देत सदृशं पतिम् ९०

कन्याको गुणहीन पुरुषको कभी नदेवै ८९ तीन
वर्ष तक ऋतुमती कन्या अच्छी वरके आशाकरै
इसके अनंतर सदृश पतिको प्राप्तहोवे ९० ॥

पिता आदि नहीं देते और कन्या आपसे भर्ता का
स्वीकार करे तो उस कन्या वरको दोष नहीं ९१
स्वयंवरा अर्थात् आपसे पति का स्वीकार करने
वाली कन्या माता पिता भाई का दिया हुआ भू
षण को न लेवे तो चोर कहाती है ९२ ऋतुम
ती कन्या का विवाह करने वाला वर कन्या के

अदीयमाना भर्तारं मधिग
च्छेद्यदि स्वयं नैनः किंचिद
वाप्नोति नचयं साधिगच्छ
ति ९१ अलंकारं नाददीत पि
त्र्ये कन्या स्वयंवरा मातृकं
भ्रातृदत्तं वा स्तेन स्याद्यदितं
हरेत् ९२ पित्रे न दद्याच्छुल्कं
तु कन्या मृतुमतीं हरन् स
हि स्वाम्याद तिक्रामेदृतूनां
प्रतिरोधनात् ९३ ॥

पिता को शुल्क अर्थात् जिस वस्तु को देकर क
न्या ग्रहण करे न देवे क्यों कि ऋतु के प्रतिरो
धसे अर्थात् पहिले ही विवाह होता तो ऋतु
कालमें गर्भ धारण होता उसके रुकावटसे
पिता अपनी स्वामी भावसे छूट जाता है ९३

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
३४१
347

तीस वर्षका वर हृदयके प्रिय बारह वर्षकी क
न्याका विवाह करै अथवा चौवीस वर्षका वर
आठवर्षकी कन्याका विवाहकरै यह योग्यका
ल दिखायेहै नियम नहीहै इतने दिनमे वेदग्र
हण करचुकताहै तब गृहस्थाश्रममें आनेको
विलंबन करै ९४ देवतोंकी दिई हुई कन्याको

त्रिंशद्वर्षो वहेत्कन्यां हृद्यां
द्वादशवार्षिकीं अष्टवर्षोऽष्ट
वर्षां वा धर्मे सीदति सत्वरः
९४ देवदत्तां पतिर्भार्यां विंद
तेनेच्छयात्मनः तां साध्वीं बि
भृयान्नित्यं देवानां प्रियमाच॰
रन् ९५ प्रजनार्थं स्त्रियः सृष्टाः
संतानार्थं च मानवाः तस्मा॰
त्साधारणो धर्मः श्रुतौ प॰
त्न्या सहोदितः ९६ ॥

पति पाताहै अपनी इच्छासे नही इसलिये देवतों
का हितकरत संते उस साध्वी स्त्रीका पोषण नित्य
हीकरै ९५ गर्भ धारणकेलिये स्त्रीको और गर्भस्था
पनके लिये पुरुषको उत्पन्न किया इसलिये वेद
मे स्त्री पुरुषका साधारण धर्महै अर्थात स्त्रीकेसा
थही अग्निहोत्रादि धर्मको पतिकरै ९६ ॥

कन्याका शुल्क देके शुल्कदेनेवाला मरजाय
तो उसके भाईके साथ उस कन्याका विवाह
करना परंतु वह कन्या जबमाने ९७ शूद्रभी
कन्याको देती संती शुल्क नलेवे उसके ले-
नेसे छंपा हुआ कन्या विक्रय कहाताहै ९८

कन्यायां दत्त शुल्कायां म्रि-
यते यदि शुल्कदः देवराय
प्रदातव्या यदि कन्यानुमन्य-
ते ९७ आददीत न शूद्रोपि
शुल्कं दुहितरं ददन् शुल्कं
हि गृह्णन् कुरुते छन्नं दु-
हितृ विक्रयम् ९८ एतत्तु न प-
रे चक्रु र्नापरे जातु साधवः
यदन्यस्य प्रतिज्ञाय पुनर-
न्यस्य दीयते ९९ ॥

एकको कहके दूसरेको देना इस बातको कोई
छोटे बडेने कभी नही किया ९९ शुल्कनाम
जो मोलहै उसकरके छंपा हुआ कन्या विक्रय
इसको पूर्वजन्ममेंभी कभी न सुना १०० मरण

तक दोनोंका वियोग नहोवै यह संक्षेपसे स्त्री पु
रुषका परम धरम जानना १०१ जिसमें परस्पर
वियोग न होवे ऐसा यत्न किया करके स्त्री पुरु
ष करें १०२ स्त्री पुरुषका आपसका प्रेम अर्थात्

नानुशुश्रुम जात्वेतत् पूर्वेष्वपि हि जन्मसु
शुल्कसंज्ञेन मूल्येन छन्नं दुहितृविक्रयम् १००

अन्योन्यस्या व्यभिचारो भवे॰
दा मरणांतिकः एषधर्मःस॰
मासेन ज्ञेयः स्त्री पुंसयोः परः
१०१ तथा नित्यं यते यातां स्त्री
पुंसौ न कृतक्रियौ यथाना
भिचरेतां तौ वियुक्ता वितरे
तरम् १०२ एष स्त्री पुंसयो रु
क्तो धर्मो वोरति संहितः आ
पद्य पत्य प्राप्तिश्च दायधर्मं
निबोधत १०३ ॥

परस्परानुराग युक्त जो यह धर्म है और आपत्का
लमें संतानकी प्राप्ति इन दोनोंको कहा इसके अ
नंतर दायभाग अर्थात् हिस्साको जानो १०३ ॥

स्त्री पुत्रवका आपसका प्रेम अर्थात् परस्परानुरा
ग युक्त जो यह धर्म है और आपत्कालमें संतान
की नाशि इन दोनोंको कहा इसके अनन्तर दाय
भाग अर्थात् हिस्साको जानो ९४ माता पिताके

एवस्त्री पुंसयो रुक्तो धर्मो
वो रति संहितः आपद्यपत्य
प्राप्तिश्च दायधर्मं निबोधत
९४ ऊर्द्ध्वं पितुश्च मातुश्च स
मेत्य भ्रातरः समं भजेरन् पै
त्रिकं रिक्थ मनीशास्ते हि
जीवतोः ९५ ज्येष्ठ एवतु गृ
ह्णीयात्पित्र्यन्धन मशेषतः
शेषास्त मुपजीवेयु र्यथैव
पितरं तथा ९५ ॥

मरणान्तर सभ मिलके माता पिताके द्रव्यको
सम विभाग करें माता पिताके जीते हुए सभ
लड़के असमर्थ हैं ९५ पिताके संपूर्ण धनको जे
ठाही लेवे और मध्यम भाई छोटे भाई ये सभ जेटे

से जीवनको पावे जैसे पितासे पातेरहे १०५ जेठ पु
त्र उत्पन्न होनेसे मनुष्य पुत्रवान् कहाताहै और
पितरोंके ऋणसे छूट जाताहै इस लिये ज्येष्ठ पु
त्र सभ धन लेनेके योग्य होताहै १०६ जिसके भ
ये सेते ऋणको पिता शोधन करताहै और मो

ज्येष्ठेन जातमात्रेण पुत्री भ
वति मानवः पितृणा मनृ
णश्चैव स तस्मात्सर्व मर्हति
१०६ यस्मिन्नृणं सन्नयति ये
नचानन्त्य मश्नुते स एवा ध
र्मजः पुत्रः कामजानितरा
न्विदुः १०७ पितेव पालयेत्पु
त्रान् ज्येष्ठो भ्रातृन् यवीय
सः पुत्रवच्चापि वर्तेरन् ज्येष्ठे
भ्रातरि धर्मतः १०८ ॥

त्तको पाताहै सोई धर्मसे जायमान पुत्रहै और
सभ कामसे जायमानहै यह ऋषियोने कहा १०७
पिताकी नाई जेठ पुत्र सभ भाईयोंकी रक्षाकरे
और जेष्ठ भाईमे पुत्रकी नाई छोटे भाई रहे १०८ ॥

जेठही जलको वढातीहै ओर विनाश करतीहै ओर लोकमें बहुत पूज्य जेठहीहै सज्जन लोगोंने उसकी निंदा नहीं कोईहै ९५ जो ज्येष्ठताका आ चरन करताहै सोमाता पिताकी नांईहै ओरजो

ज्येष्ठः कुलं वर्द्धयति विना॰ शयतिवा पुनः ज्येष्ठः पूज्य तमोलोके ज्येष्ठः सद्भिरगर्हि तः ९५ यो ज्येष्ठो ज्येष्ठवृत्तिः स्यान्मातेव स पितेव सः अज्ये ष्ठवृत्तिर्यस्तुस्यात्सम्पूज्य॰ स्तु बंधुवत् ९६ एवं सह वसे युर्वा पृथग्वा धर्मकाम्यया पृथग्विवर्द्धते धर्मस्तस्माद्ध र्म्या पृथक्क्रिया ९७ ॥

ज्येष्ठताका आचरण नहीं करताहै सो बंधुकी नांई पूज्यहै ९६ इस रीतिसे सभ एकमें रहै अथ वा धर्म करनेकी इछ्याकरके पृथक रहै पृथकर हनेसे धर्म बढताहै इसलिये पृथक रहना धर्॰

मेंसे एकहै ॥१११॥ संपूर्णद्रव्यमें श्रेष्ठद्रव्य और बीसवां
अंश ज्येष्ठको और मध्यमको चालीसवां भाग क
निष्ठको अस्सीवां भागदेके जो बचे उसका सम॰
भागकरके सबकोई लेवे ॥११२॥ ज्येष्ठ और कनिष्ठ
को जैसा कहाहै तैसाही देना मध्यमको मध्यम

ज्येष्ठस्य विंशउद्धारः सर्वद्रव्या
च्च यद्वरम् ततोर्द्धं मध्यमस्य
स्यात्तुरीयं तु यवीयसः ॥११२॥
ज्येष्ठश्चैव कनिष्ठश्च संहरेतां
यथोदितं येन्ये ज्येष्ठकनिष्ठा
भ्यां तेषां स्यान्मध्यमं धनं ॥११३॥
सर्वेषां धनजातानामाददी
ताग्र्यमग्रजः यच्च साति॰
शयं किंचिद्दशतश्चाप्नुयाद्व
रम् ॥११४॥

धनभी देना ॥११३॥ सर्वधनमें जो श्रेष्ठ धनहै और
सजातीय धनमें श्रेष्ठ धनहै और गौ आदि जो प
शुहैं उनमें दशोंमेंसे एक श्रेष्ठ पशु इन तीनों व
स्तुको अग्रजलेवे परंतु यह विभाग ज्येष्ठ गुणी हो औ
र कनिष्ठ मध्यम निर्गुणी हो तब जानना ॥११४॥

सम भाई अपने कर्ममें सम्पन्न होवे तो जो उद्धार पीछे कह आए हैं सो करना किंतु जेठेका मान रखनेके लिये कुछ एक छोटी वस्तु देना ॥५॥ इस प्रकारसे ज्येष्ठको उद्धार देके अवशिष्ट धन

उद्धारो न दशस्वस्ति सम्पन्नानां स्वकर्मसु यत्किंचिदेव देयं तु ज्यायसे मानवर्द्धनं ॥५॥ एवं समुद्धृतोद्धारे समानंशान्प्रकल्पयेत् उद्धारेऽनुद्धृते त्वेषामियं स्यादंशकल्पना ॥६॥ एकाधिकं हरेज्ज्येष्ठः पुत्रोऽध्यर्द्धं ततोऽनुजः अंशमंशं यवीयांस इति धर्मो व्यवस्थितः ॥७॥

का समविभाग करना और उद्धार न देवे तो आगे जो अंश कल्पना करेंगे सो करै ॥६॥ दो अंश ज्येष्ठ लेवे उससे कनिष्ठ डेढ़ अंश लेवे सभसे छोटा एक अंश लेवे यह धर्म व्यवस्था है अर्थात् अवस्थाके

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
२५।

भागहै ।१७। पृथक पृथक अपने अंशमें चतुर्थां
श सब भाई भगिनी को देवें न देवे तो पतित
होतेहैं ।१८। बकरी भेड एक खुरवाले अर्थात्
घोडा आदि ये सब विषमहों अर्थात् चार भाईहैं
और पांच घोडा हों तो विषम विभागहो न क

स्वेभ्योंशेभ्यस्तु कन्याभ्यः
प्रदद्युर्भ्रातरः पृथक् स्वा॰
त्स्वादंशाच्चतुर्भागं पतिताः
स्युरदित्सवः ।१८। अजावि
कं सैकशफं नजातु विषमं
भजेत् अजाविकं तु विषमं
ज्येष्ठस्यैव विधीयते ।१९।
यवीयान् ज्येष्ठभार्यायां पु
त्रमुत्पादयेद्यदि समस्तत्र
विभागः स्यादिति धर्मो व्य
वस्थितः ।२०।

रना अर्थात् बेचे सो जेठा ले
वे ।१९। छोटा भाई जेठ भाईकी स्त्रीमें पुत्र उत्पन्न
करै तो उस पुत्रके साथ चाचा लोग सम विभाग
करै उसपुत्रको जेठाईका भाग न देवें यहधर्म व्यवस्थि
तहै ।२०।

प्रदानको गौणकरना यह बात धर्म नहींहै उत्प-
त्तिमें पिता प्रधानहै इसलिये धर्म करके पिताका
सेवन करै १२१ एकको दो स्त्रीहो और छोटी स्त्रीमें
पहिले लडका भया और जेठी स्त्रीमें पीछे लडका
भया इस स्थानमें कैसा भाग करना ऐसी संशयमें
समाधान आगेके श्लोकमें कहेंगे १२२ प्रथम वि-
वाहिता स्त्रीमें पीछेसे जो भयाहै सो एक श्रेष्ठ वृष

उपसर्जने प्रधानस्य धर्मतो
नोपपद्यते पिता प्रधाने प्रज
ने तस्माद्धर्मेणतं भजेत १२२
पुत्रः कनिष्ठो ज्येष्ठायां कनि
ष्ठायां च पूर्वजः कथं तत्र
विभागः स्या दितिचेत्संशयो
भवेत् १२२ एकं वृषभमुद्धारं
संहरेत सपूर्वजः ततोपरे ज्ये
ष्ठवृषा स्तदूनानां स्वमातृतः

भसे कनिष्ठ वृषभ १२३॥ उद्धारलेवे माताके वि
वाह क्रमसे जेठाईको पाय रूप बची गौका विभा
गकरै यह निश्चयहै ज्येष्ठता जानना १२३ ज्येष्ठ
स्त्रीमें पहिले लडका भयाहो तो पंद्रह गौ और प
क वृषभलेवे तिसको अनंतर लहुरी स्त्रीमें जो
लडकी भयेहैं सो अपनी माताके विवाहक्रम
से ज्येष्ठाईको पाय रूप बची गौका विभाग करै।

म०
स्मृ० टी०
भा०
११५२

352

यह निश्चयहै १२४ समजातीकी स्त्रीमें उत्पन्न
जितने लडकेहैं उन्होंमें माताके विवाह क्रमसे
जेठाई नहीहै किंतु जन्मसे जेठाईहै १२५ केव
ल विभागहीमें जन्मसे जेठाईहै यह नही किं
तु ज्योतिष्टोम यज्ञमें इन्द्रके बुलानेके लिये सु
ब्रह्मण्य नामका मंत्रहै उसमें पहिले जो लडका

ज्येष्ठस्तु जातो ज्येष्ठायां हरे
द्वृषभषोडशाः ततः स्वमातृत
शेषा भजेरन्निति धारणा १२४
सदृशस्त्रीषु जातानां पुत्राणा
मविशेषतः न मातृतो
ज्यैष्ठ्यमस्ति जन्मतो ज्यैष्ठ्यमु
च्यते १२५ जन्मज्येष्ठेन चाह्वा
नं सुब्रह्मण्यास्वपि स्मृतं य
मयोश्चैव गर्भेषु जन्मतो ज्ये
ष्ठता स्मृता १२६

भयाहै उसके नामसे कहाजाताहै कि फलाने ल
डकाके बाप यज्ञकरताहै ऐसा ऋषियोंने कहा
और जो साथही दो लडके उत्पन्न होतेहै वहां यद्य
पि गर्भस्थापनमें प्रथम बीजसे उत्पन्न पीछे होगा
पिछिले बीजसे उत्पन्न आगे होगा तथापि पहिले
उत्पन्न होगा सोई जेठ कहावेगा १२६ ॥

कन्यादानसमयमें दामादके साथ ऐसी सलाह क
रै कि हमारे पुत्र नहीं है इसकन्यामें जो पुत्र होगा
सो हमाराश्राद्ध आदि कर्मकरनेवाला होगा इस
प्रकारसे कन्याको पुत्रिका करै १२ पूर्वकालमें

अपुत्रोऽनेनविधिना सुतां
कुर्वीत पुत्रिकां यदपत्यं भ
वेदस्यां तन्मम स्यात्स्वधाक
रं १२ अनेन तु विधानेन पु
रा चक्रेऽथ पुत्रिकाः विवृद्ध्य
र्थं स्ववंशस्य स्वयंदक्षः प्र
जापतिः १२८ ददौ स दश ध
र्माय कश्यपाय त्रयोदश
सोमाय राज्ञे सत्कृत्य प्रीता
त्मा सप्तविंशतिम् १२९ ॥

अपने वंश बढनेके लिये इस विधानसे दक्षप्रजा
पतिने पुत्रिका किया १२८ प्रसन्नतासे सत्कार पूर्व
क दक्ष प्रजापतिने धर्मको दश कश्यपको तेरह
चंद्रमाको सत्ताईस कन्यादिया १२९ जैसी अपने

आत्मा है तैसाही पुत्र है और पुत्रके समान कन्या
है इसलिये आत्माके समान कन्या रहत संते कि
स प्रकारसे दूसरा कोई धनको हरण करै ।३०। मा
ताके मरे संते उसका यौतक धन जिसका लक्ष
ण आगे कहेंगे सो धन कुमारी कन्या पाती है

यथैवात्मा तथा पुत्रः पुत्रे॰
ण दुहिता समाः तस्यामा॰
त्मनि तिष्ठन्त्यां कथमन्यो॰
धनं हरेत् ।३०। मातस्तु यौत
कं यत्स्यात् कुमारी भाग एव
सः दौहित्र एव च हरेदपुत्र
स्याखिलं धनं ।३१। दौहित्रो
ह्यखिलं रिक्थमपुत्रस्य पि
तुर्हरेत् स एव दद्याद्द्वौ पिंडौ
पित्रे मातामहाय च ।३२॥

और पुत्र रहित पुरुषका सब धन दौहित्र अर्थात्
लड़कीका लड़का पाता है ।३१। पुत्र रहित पुरुष
का संपूर्ण धन दौहित्र लेवे और दो पिंड धन देवे
और एक अपने पिताको और एक अपने नानाको ।

लोकमें पोता और नाती इन दोनोमें विशेष नही
है अर्थात् समहै क्यों कि दोनोंमे एकका पिता
और एककी माता इन दोनोंकी उत्पत्ति एकहीसे
है ॥ ३३ ॥ पुत्र रहित पुरुषको पुत्रिका किए संते
जब पुत्र उत्पन्न हो तो उस स्थानमें पुत्रिकाके सा

पुत्रदौहित्रयोर्लोके न विशे
षोस्ति धर्मतः तयोर्हि मा
ता पितरौ संभूतौ तस्यदेह
तः ॥ ३३ ॥ पुत्रिकायां कृतायां
तु यदि पुत्रो नुजायते सम
स्तत्र विभागः स्यात् ज्येष्ठता
नास्ति हि स्त्रियाः ॥ ३४ ॥ अपु
त्रायां मृतायां तु पुत्रिकायां
कथंचन धनं तत्पुत्रिका भ
र्ता हरेतैवा विचारयन् ॥ ३५ ॥

थ औरस पुत्रका सम विभाग होताहै स्त्रीको जेठा
ई नहीहै इसलिये जेठाईका अंश न पावेगी ॥ ३४ ॥
पुत्र रहित पुत्रिकाके मरे संते उसके धनको उस
का पतिलेवे इसमें विचार कुछ न करै ॥ ३५ ॥ क

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
३५४

354

न्याको पुत्रभाव करके मानाहो अथवा पुत्रभा
व करके न मानाहो परंतु वह कन्या अपने जा
तवाले वरसे पुत्र उत्पन्न करे तो वह पुत्र पुत्ररः
हित नानाका धनलेवे नानाको पिंडदेवे उस [illegible]
करके नाना पोतावाला कहाताहै १३६ पुत्रकर

अकृता वा कृतावापि यं विं
देत्सदृशात्सुतं पौत्री माता
महस्तेन दद्यात्पिंडं हरेद्धनं
पुत्रेण लोकान् जयति पौत्रे
णानंत्यमश्नुते अथ पुत्रस्य
पौत्रेण ब्रध्नस्याप्नोति विष्टपं
पुंनाम्नो नरकाद्यस्मा त्पित
रं त्रायते सुतः तस्मात्पुत्र इ
ति प्रोक्तः स्वयमेव स्वयंभुवा
१३८ ॥

के इंद्र आदि लोकको जीतताहै और पोताकरके
अनंतफलको पाताहै और पोताकी पुत्र करके
सूर्यलोकको पाताहै १३७ जिसकारणसे पुनक
हिए नरक उसस त्र कहिए पिताका रक्षणकरे इ
सीकारणसे पुत्र कहाताहै इसबातको ब्रह्माजीने
कहा १३८

संसारमें पोता नाती दोनों सम हैं नाती भी नाना
को परलोकमें पोताकी नाईं तारता है ॥३॥ पुत्रि
का पुत्र प्रथम पिंड माताको देवे दूसरा पिंड नाना
को देवे तीसरा पिंड नानाके बापको देवे ॥४॥ दू

पौत्र दौहित्रयो र्लोके विशे
षो नोपपद्यते दौहित्रोऽपि ह्य
मुत्रैनं संतारयति पौत्रवत्
मातुः प्रथमतः पिंडं निर्व
पेत्पुत्रिका सुतः द्वितीयंतु
पितुस्तस्या स्तृतीयं तत्पि
पितुः तुः ॥४॥ उपपन्नो गुणैः सर्वैः
पुत्रो यस्यतु दत्रिमः सह
रेतैव तद्रिक्थं संप्राप्तोप्य
न्य गोत्रतः ॥५॥

सरे गोत्रसे भी लड़का आया हो परंतु सब गुणोंसे
युक्त हो और वह जिसका दत्तक पुत्र भया है उ
सके धनको पाता है ॥५॥ उत्पन्न करने वालेका

गोत्र श्रोर द्रव्यको पाताहै श्रोर इसीको पिंड देता॰
है जिससे उत्पन्न भयाहै इसको पिंड नही देता
दत्तक पुत्र नही पिता किंतु जिसका दत्तक होता
है इसीका गोत्र श्रोर द्रव्यको पाताहै ॥१४२॥ पिता
आदिके श्राज्ञाविना देवर श्रादिसे विधवा स्त्री ने
उत्पन्न कियाजो पुत्र सो श्रोर पुत्र रहतसंते स्वसु

गोत्र रिक्थे जनयितुर्न हरेद्
दत्त्रिमः सुतः गोत्ररिक्थानु
गः पिंडो व्यपैति ददतः स्व
धा ॥१४२॥ अनियुक्तासुतश्चैव
पुत्रिण्याप्तश्च देवरात् उभौ
तौ नार्हतो भागं जारजात
ककामजौ ॥१४३॥ नियुक्ता
यामपि पुमान्नार्यां जातो वि
धानतः नैवार्हः पैतृकं रि
क्थं पतितोत्पादितो हि सः

र श्रादिकी श्राज्ञा ॥१४३॥ करके देवरसे स्त्रीने उत्प
न्न किया जो पुत्र सो ये दोनो भागको नही पाते क्यौं
कि एक जार श्रयीत इसरा पतिसे उत्पन्नहै श्रोर इस
रा काम से उत्पन्नहै ॥१४३॥ स्वसुर आदिकी श्राज्ञाको पा
एहुए स्त्री अविधानसे पुत्र उत्पन्नकरे तो वह पुत्र पि
ताके धनको नही पाता क्योंकि वह पुत्र पतितसे उ
त्पन्नहै ॥१४४

स्त्री इन दोनोंका जो ग्रहण करै सो उस स्त्रीमें पुत्र उत्पन्न करके उसी पुत्रको
धन देवे १५८॥ श्वशुर आदिकी आज्ञाको पाए हुए स्त्री देवरसे अथवा दूसरे
सपिंडसे पुत्रको उत्पन्न करै और ५ ५

जिस प्रकारसे और पुत्र धनको हरण करताहै उ-
सी प्रकारसे श्वशुर आदिकी आज्ञासे स्त्रीने उत्पन्न
किया जो पुत्रसो धनको ग्रहण करै क्षेत्रवाले
का वह बीजहै और वह उत्पत्ति धर्मसेहै ५५
मरे भाईका धन और वह पुत्र कामसे उत्पन्न भ-
याहै ऐसा जाना जाय तो धनको पाता और वह नाहि
व्यर्थ उत्पन्नहै ऐसा ऋषिलोग कहतेहैं और ऋ- नारद

हरेदेव नियुक्तायां जातः पु
त्रो यथौरसः क्षेत्रिकस्यच
तद्बीजं धर्मतः प्रसवश्च सः ५५
धनं यो बिभृयाद्भ्रातुर्मृत-
स्य स्त्रियमेवच सोऽपत्यं भ्रात
रुत्पाद्य दद्यात्तस्यैव तद्धनम्
५६ या नियुक्तान्यतः पुत्रं दे
वराद्वाप्यवाप्नुयात् तं काम
ज मरिक्थीयं वृथोत्पन्नम्प्र

षिने कामसे उ चक्षते ५७ ॥ त्पन्न पुत्रका ल
क्षण कहाहै कि संभोग समयमें स्त्री-
के मुखसे अपने मुखको न लगावे और अंगसे
अंगको नलगावे केवल योनिमें लिंग प्रवेशक
रके जो उत्पन्न हो सो संतानके अर्थहै वह का
मसे उत्पन्न नहींहै इससे भिन्न रीतिसे उत्पन्न हो
हा सो कामसे उत्पन्न कहाताहै ५७ एक योनिमें
अर्थात् समान जातिकी बहुत स्त्रीमें एक काही

त विभागको जानो और बहुत जातिकी बहुत
स्त्रीमें एकसे उत्पन्न बहुत पुत्रोंका विभाग आ
गे कहेंगे सो जानो ४८ क्रमसे ब्राह्मणको ज
ब चारो वर्णकी स्त्री होवै तो इन स्त्रियोंमें उत्प
न्न जो पुत्रहैं उन्होंके विभागमें आगे कहेंगे जो
विधि उसको जानो ४९ खेती करने वाला म

एतद्विधानं विज्ञेयं विभा॰
गस्यैकयोनिषु बह्वीषु चै
कजातानां नानास्त्रीषु नि
बोधत ४८ ब्राह्मणस्यानु
पूर्व्येण चतस्रस्तु यदि स्त्रि
यः तासां पुत्रेषु जातेषु वि
भागेऽयं विधिः स्मृतः ४९
कीनाशो गोवृषो यानम
लंकारश्च वेश्म च विप्रस्यौ॰
द्धारिकं देयमेकांशश्च प्र॰

नुष्य गौको धानतः ५० वहने वाला वृष
भ और यान अर्थात घोडा आदि अलंकार घर औ
र जितने अंशहैं उनमें एक प्रधान अंश इन सभ
को ब्राह्मणीके पुत्रको उद्धारके भागका विभा
ग आगे जो रीति कहेंगे उसी रीतिसे करै ५० ॥

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इन चारो वर्णकी स्त्रीमें
ब्राह्मणसे उत्पन्न जो पुत्र है सो क्रमसे तीन दूइ डे-
ढ एक अंशको लेवे ।१५१ अथवा सब धनका दस
भाग करके आगेजो रीति कहेंगे उससे धर्म कर्म क

अंशं दायाद्धरेद्विप्रो द्वावंशौ
क्षत्रियासुतः वैश्याजः सार्द्ध
मेवांशमंशं शूद्रासुतो हरेत् १५१
सर्वं वा रिक्थजातं तद्दशधा
परिकल्प्य च धर्म्यं विभागं ।
कुर्वीत विधिनानेन धर्मवि
त् ।१५२ चतुरोंशान् हरेद्विप्र
स्त्रीनंशान्क्षत्रियासुतः वै-
श्यापुत्रो हरेद्द्व्यंशमंशं शूद्रा
सुतो हरेत् ।१५३ ॥

के अंक विभागको धर्मके जाननेवाले करे ।१५२
चारो वर्णकी स्त्रीके पुत्र वर्ण क्रमकरके चार
तीन दो एक अंशको ग्रहण करे ।१५३ ब्राह्मण
क्षत्रिय वैश्य इन तीन वर्णकी स्त्रीमें ब्राह्मणसे

पुत्र उत्पन्न भयाहो अथवा न भयाहो परंतु शूद्र वर्णकी स्त्री के पुत्रको धर्मकरके दशवां अंशमें अधिक नदेवै १५४ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इन तीनों वर्णको धनका ग्रहण शूद्र वर्णकी स्त्रीका पु

यद्यपि स्यात्तु सत्पुत्रो यद्य-
पुत्रोऽपि वा भवेत् नाधिकं
दशमाद्दद्याच्छूद्रापुत्रा
य धर्मतः १५४ ब्राह्मणक्षत्रि
यविशां शूद्रापुत्रो न रिक्थ
भाक् यदेवास्य पिता दद्या
त्तदेवास्य धनं भवेत् १५५
समवर्णासु ये जाताः सर्वे
पुत्रा द्विजन्मनां उद्धारं ज्या
यसे दत्वा भजेरन्नितरे समं
१५६

त्र नहीं करताहै उसका पिता जो देवै सोई उसका धनहै १५५ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यके समान वर्ण में उत्पन्न जो पुत्रहै सो जेठको उद्धारदेके औरधनका सम भाग करै १५६ ॥

शूद्रको अपने वर्णकी स्त्रीहै दूसरे वर्णकी न
ही इसलिये स्त्री लडके हो तो भी समभागी पा
तेहै ।।८।। ब्रह्माके पुत्र मनुजीने मनुष्योंको जो
बारह प्रकारके पुत्र कहा तिसमें पहिलेसे

शूद्रस्य तु सवर्णैव नान्या
भार्य्या विधीयते तस्यांजाता
समांशाःस्युः यदिपुत्रशतं
भवेत् ।।८।। पुत्रान् द्वादश
यान्वाह नृणां स्वायंभुवो
मनुः तेषां षट्बंधुदायादा
षडदायादबांधवाः ।।८।।
कानीनश्च सहोढश्च क्रीत
पौनर्भवस्तथा स्वयंदत्तश्च
शौद्रश्च षडदायादबांधवाः । ५९

छ बंधुदायाद अर्थात् बांधव कहातेहैं और गो
त्र का धन हरणे वाले कहातेहैं और उत्तरके छ
अबांधव अदायाद अर्थात् बांधव भी नहीं कहा
ते और गोत्रका धनलेने वाली भी नही कहातेहैं । ५९

कानीन सहोढ क्रीत पौनर्भव स्वयंदत्त शौद्र ये
छः अदायाद बांधव कहाते हैं ।१६०। और सक्षेत्र
ज दत्तक कृत्रिम गूढोत्पन्न अपविद्ध छः दायाद
बांधव कहाते हैं ।१५९। निकाम नाव करके जल
को तरत संते जैसे फलको पाता है तैसे फल॰
को निकाम पुत्रसे नरकको तरत संते पाता है ।६१।

औरसः क्षेत्रजश्चैव दत्तः कृ
त्रिम एवच गूढोत्पन्नोपवि
द्धश्च दायादा बांधवाश्च षट्
यादृशं फलमाप्नोति कुप्ल
वैः संतरन् जले तादृशं फ
लमाप्नोति कुपुत्रैः संतरंस्त
मः ।१६१। यद्येक रिक्थिनौ
स्यातां औरस क्षेत्रजौ सुतौ
यस्य यत्पैत्रिके रिक्थं स त
द्गृह्णीत नेतरः ।१६२।।

व्याधि आदिसे नष्ट बीजवाला पुरुषकी स्त्रीमें पि
ता आदिका आज्ञाको पाय रूप पुत्र रहितने देवर आदि
ने पुत्र उत्पन्न किया पीछे औषध आदिसे पुष्ट बीज
रूप संते उस पुरुषने अपने स्त्रीमें पुत्र उत्पन्न कि
या तब उस पुरुषके धनका स्वामी क्षेत्रज औरस
दो पुत्र रूप तिस पर यह बात मनुजीने कहा कि जिसके
बीजसे जो उत्पन्न हो सो उसका धन पावे ।१६२।।

एकहीपुत्र औरस पिताके संपूर्ण धनका स्वामी॰
है और यह भाईयोंको दया करके भोजन औरव
स्त्रको देवे १६३ पिता आदिकी आज्ञासे पुत्रउत्पन्न
करनेवाला पुत्रवानहो तो क्षेत्रज औरस दोनों पु॰
त्र अपने पिताके धनका छः भागकरे अथवा पांच
भागकरै एक भागको क्षेत्रजलेवै और सब धनको

एक एवौरसः पुत्रः पित्र्यस्य
वसुनः प्रभुः शेषाणामानृ
शंस्यार्थं प्रदद्यात्तु प्रजीवनं
षष्ठं तु क्षेत्रजस्यांशं प्रदद्या
त्पैत्रिकाद्धनात् औरसो वि
भजन्दायं पित्र्यं पंचममेव वा
औरसक्षेत्रजौ पुत्रौ पितृरि
क्थस्य भागिनौ दशापरे तु
क्रमशो गोत्ररिक्थांशभागि
नः १६५

औरस लेवै अंशका विकल्प जो है सो स
ब क्षेत्रज गुणवानहो तो पांचभागकरना और व
णसे रहित हो तो छः भागकरना १६४ क्षेत्रज औ
रस यह दोनों पुत्र पिताके धनको ग्रहण करणे
वाले हैं और जो दश पुत्र है सो गोत्र धन और इन
दोनोंको क्रमसे ग्रहण करते हैं १६५ संस्कारसे॰

पुत्रको जो अपनी स्त्रीहै उसमें आप पुत्र उत्पन्न करै
वह औरस पुत्र कहाताहै सब पुत्रोंमें श्रेष्ठहै १६६
नपुंसक और व्याधिसे युक्त और मराहुवा इन पु
रुषोंकी स्त्रीमें धर्मकरके पिता आदिकी आ॰

स्वक्षेत्रे संस्कृतायां तु स्वय
मुत्पादयेद्धि यम् तमौरस
विजानीयात्पुत्रं प्राथमक
ल्पिकं १६६ यस्तल्पजः प्रमी
तस्य क्लीबस्य व्याधितस्य वा
स्वधर्मेण नियुक्तायां स पुत्र
क्षेत्रजः स्मृतः १६७ माता
पिता वा दद्यातां यमद्भिः
पुत्रमापदि सदृशं प्रीतिसं
युक्तं स ज्ञेयो दत्त्रिमः सुतः
१६८

ज्ञासे देवर आदिने जो पुत्र उत्पन्न किया सो क्षेत्र
ज कहाताहै १६७ आपत्कालमें माता पिता जल
से प्रीतिसहित समान जाति पुत्रको देवै सो द
त्तक कहाताहै १६८ ॥

समान जातिवाला गुण दोषका जाननेवाला
पुत्रोंके गुणसे युक्त ऐसेको पुत्र करै सो कृत्रिम
कहाता है १५ गृह में उत्पन्न भया और किसीके
बीजसे भया यह जाना नहीं जाता सो जिसकी स्त्री

सदृशं तु प्रकुर्याद्यं गुणदो
षविचक्षणम् पुत्रं पुत्रगु
णैर्युक्तं स विज्ञेयश्च कृत्रि
मः १५ उत्पद्यते गृहे यस्य
न च ज्ञायेत कस्य सः स गृ
हे गूढ उत्पन्नस्तस्य स्याद्य
स्तल्पजः १६ माता पि
तृभ्यामुत्सृष्टं तयोरन्यत
रेण वा यं पुत्रं परिगृह्णी
याद्दपविद्धः स उच्यते १७

है उसका गूढोत्पन्न पुत्र कहाता है १६ माता पि
ता दोनोंने अथवा एकने जिस पुत्रका त्याग कि॰
या उसपुत्रको दूसरेने ग्रहण किया सो ग्रहण करने
वालेका अपविद्ध पुत्र कहाता है १७ पिताके गृ

हमें विवाह रहित कन्याने एकांतमें जिस पुत्र
को उत्पन्न किया सो पुत्र उस कन्यासे विवाह क
रने वालेका कानीन पुत्र कहाताहै १७२ गर्भि
नी कन्याहै सभकोई जानताहै अथवा गर्भहै
कोई जानता नहीं और उस कन्याका विवाह हो

पितृवेश्मनि कन्यातु यं पु
त्रं जनयेद्रहः तं कानीनं ॰
वदेन्नाम्ना वोढुः कन्यासमु
द्भवं १७२ या गर्भिणी संस्क्रि
यते ज्ञाताज्ञातापि वा सती
वोढुः सगर्भो भवति सहो
ढ इति चोच्यते १७३ क्रीणी
याद्यस्त्वपत्यार्थं मातापित्रो
र्यमंतिकात् सक्रीतकः सु
तस्तस्य सदृशोसदृशोपि वा १७४

तो विवाह करने वालेका सहोढ पुत्र कहाताहै जो
विवाहके अनंतर होताहै १७३ माता पितासे जिस
पुत्रको पुत्रके अर्थ मोललेवे वह पुत्र गुणोंसे सदृ
ले शहो अथवा असदृशो परंतु जातिसे सदृश होसो
मोललेने वालेका क्रीत पुत्र कहाताहै १७४ ॥

जिस स्त्रीको पतिने त्याग किया अथवा विधवा अ
पनी इच्छासे दूसरी पुरुषकी भार्याहोके उस पु-
रुषसे पुत्रको उत्पन्न करै सो पुत्र उत्पन्न करने
वालेका पौनर्भव पुत्र कहाताहै १७५ विवाहि-
ता स्त्रीहै और पुरुष संभोगसे दूषित नहींहै
और दूसरे पुरुषका आश्रय करै तो उस पुरुषके
साथ फेर विवाहके योग्य होतीहै अथवा कुमा

या पत्या वा परित्यक्ता विध
वा वा स्वयेच्छया उत्पादये
त्पुनर्भूत्वा स पौनर्भव उच्यते
१७५ सा चेदक्षतयोनिः स्या
द्गतप्रत्यागतापि वा पौनर्भ-
वेन भर्त्ता सा पुनः संस्कारम
र्हति १७६ माता पित्र विहीनो
य स्त्यक्तो वा स्या दकारणात्
आत्माने स्पर्शये यस्मै स्वयं
दत्तस्तु स स्मृतः १७७ ॥

र पतिको छोडकर दूसरे पुरुषको आश्रय करके
पुरुष संभोगसे दूषित नहोके फेर उसी कुमार प
तिके छोडकर दूसरे पुरुषको आश्रय करके पु
रुष संभोगसे दूषित न होके फेर उसी कुमार प-
तिके आश्रितहो तो फेर उसके साथ विवाहके यो
ग्य होतीहै १७६ माता पिता जिसका मरगया हो
अथवा कारण विना माता पिताने जिसका त्याग

म॰
स्मृ॰टी॰
भा॰
३६१

361

कियाहै वह अपनी आत्माको जिसको देवै वह
उसका स्वयंदत्त पुत्र कहाताहै १७७ कामकरके
ब्राह्मणके विवाहित शूद्र वर्णकी स्त्रीमें जो उत्प
न्न भया पुत्र सो जीवतही शव अर्थात मरदाहै
इसलिये वह उस ब्राह्मणका पराशव पुत्र कहा
है १७८ दासीमें अथवा दासीकी दासीमें शूद्रसे

ये ब्राह्मणस्तु शूद्रायां कामा
उत्पादयेत्सुतं सपारयन्नेव
शव स्तस्मात्पारशवः स्मृतः
दास्यां वा दासदास्यां वा यः
शूद्रस्य सुतो भवेत् सो ऽनुज्ञा
तो हरेदंश मिति धर्मो व्यव
स्थितः १७९ क्षेत्रजादीन् सुता
नेता नेकादश यथोदितान्
पुत्रप्रतिनिधीनाहुः क्रिया
लोपान्मनीषिणः १८० ॥

उत्पन्न जो पुत्र सो पिताकी आज्ञासे अंशको पाता
है यह धर्म व्यवस्थाके भागमेहै १७९ क्षेत्रज आदि ए
कादश पुत्र जोहै उनको पंडितोने पिंडदान आदि
कियाकालोपन हो इसके लिये पुत्र प्रतिनिधि अ
र्थात पुत्रके स्थानापन्न कहाहै १८० ॥

प्रसंगाके औरके बीजसे उत्पन्न जो लड़के कहेहै सो
सभ औरस पुत्रके रहत संते जिसके बीजसे जो
उत्पन्नहै सो उसीके पुत्र कहातीहै दूसरेके नही
॥१८१॥ एकसे उत्पन्न चारपांच पुत्रमे एकभी पुत्रवान्

यद्येते भिहिताः पुत्राः प्रसंगा
दन्यबीजजाः यस्यते बीजतो
जाता नस्यते नेतरस्य तु ॥१८१॥
भ्रातॄणा मेकजातानामेक
श्चे त्पुत्रवान्भवेत् सर्वांस्तांस्ते
न पुत्रेण पुत्रिणो मनुरब्रवी
त् ॥१८२॥ सर्वासा मेकपत्नीना
मेकाचे त्पुत्रिणी भवेत् सर्वा
स्तास्तेन पुत्रेण प्राह पुत्रव
ती र्मनुः ॥१८३॥

हो तो उसी पुत्र करके सभ पुत्रवान् कहातीहै य
ह मनुजीने कहा ॥१८२॥ एक पुरुषको चारपांच
स्त्रीहै उनमें एक पुत्रवती होतो उस पुत्रसे सभ
स्त्री पुत्रवती कहातीहै यह मनुजीने कहा ॥१८३॥

म. स्मृ. टी. भा. १६२

362

द्वादश प्रकारके पुत्रोंमें पूर्व पूर्वके अभावमें पर प
र धनको पातेहैं बहुत पुत्र समहो तो धनको स
म पावें ८४ भाई और पिता ये धनको नही पाते
किंतु पुत्रही धनको पाताहै पुत्र न हो तो पिता
भाई धनको पातेहैं ८५ पिता पितामह प्रपिताम
ह इन तीनोंको पिंड जल देना चौथा देनेवाला है

श्रेयसः श्रेयसो लाभे पापीया
न्रिक्थ महैति बहवश्चेत्तु सदृ
शाः सर्वे रिक्थस्य भागिनः
८४ न भ्रातरो न पितरः पुत्रा
रिक्थहराः पितुः पिता हरे
दपुत्रस्य रिक्थं भ्रातर एव च
८५ त्रयाणामुदकं कार्यं त्रि
षु पिंडः प्रवर्तते चतुर्थः संप्र
दातैषां पंचमो नोपपद्यते ८६

पांचवां कोई नहीहै ८६ सपिंडमें अर्थात सात पुरु
ये षमें मरे हुका जो नगीची है सो धनको पाताहै
सपिंड न हो तो सकुल्य अर्थात सात पुरुषके ऊप
रवाला धनको पाताहै उसके न होनेमें आचार्य
उसके अभावमें शिष्य ये सब क्रमसे धनको पा-
तेहैं ८७ ॥

सपिंडमें अर्थात् सातपुरुषमें मरे हुए का जो न
गोत्री हो सो धनको पातोहै सपिंड न हो तो स
कुल्य अर्थात् सात पुरुषके ऊपरवाला धनको
पातोहै उसके न होनेमें आचार्य उसके अभा
वमें शिष्यये सब क्रमसे धनको पातेहैं ॥१८७॥ ये
सब नहो तो तीनों वेदके पढ़ने वाले और इन्द्रि

अनंतरः सपिंडाद्यस्तस्य त
स्य धनं भवेत् अतऊर्द्ध स
कुल्यः स्यादाचार्यः शिष्य
एव वा ॥१८७॥ सर्वेषामप्य
भावेतु ब्राह्मणा रिक्थ
भागिनः त्रैविद्याः शुचयो
दांतास्तथा धर्मो न हीय
ते ॥१८८॥ अहार्यं ब्राह्मण द्र
व्यं राज्ञा नित्यमितिस्थितिः
इतरेषांतु वर्णानां सर्वभा
वे हरेन्नृपः ॥१८९॥

योंके दमनक रणेवाले
पवित्रसे सहित ब्राह्मण लोग धनको पातेहैं इस
रीतिसे धर्महानिको नहीं पाता ॥१८८॥ ब्राह्मणके
धनको राजा कभी न लेवै दूसरेके धनको सब
के अभावमें राजा लेवै ॥१८९॥ पुत्र रहित मरेहुए

ए पुरुषकी स्त्री सगोत्र पुरुषसे श्वशुर आदिकी आज्ञासे पुत्रको उत्पन्न करै तो उस पुत्रको सब धन देवै ।१९०। एक स्त्रीको दो पुरुषसे दो पुत्र हो और माताके धनके लिये विवाद करते हों तो ।

संस्थितस्यानपत्यस्य सगो
त्रात्पुत्रमाहरेत् तत्र यद्रिक्थ
जातं स्यात् तत्तस्मिन्प्रतिपा
दयेत् ।१९०। द्वौ तु यौ विवदेया
तां द्वाभ्यां जातौ स्त्रिया धने
तयोर्यद्यस्य पित्र्यं स्यात् तत्स
गृह्णीत नेतरः ।१९१। जनन्यां
संस्थितायां तु समं सर्वे स
होदराः भजेरन् मातृकं
रिक्थं भगिन्यश्च सनाभयः
।१९२।

जिसके पिताने जो धन उस स्त्रीको दिया हो सो धन वह पावै दूसरा न पावै ।१९१। माताके मरे पीछे सब सहोदर भाई और कुमारी भगिनी ये सब सम भाग करके माताके धनको लेवै ।१९२। ॥

माताके धनको कन्यापावै और कन्याकी कन्या
की कन्याको भी नानी के धनसे कुछ प्रीति सं
हित देवै ॥१९३ अध्यग्नि अध्यावाहनिक प्रीति कर्म
मे प्राप्त धन भाई पिता माताने जो दिया ये छः प्र

यास्तासां स्युर्दुहितरे स्तासा
मपि यथार्हतः मातामह्या
धनात्किंचि त्प्रदेयं प्रीतिपूर्वं
के ॥१९३ अध्यग्न्यध्यावा हनि
कं दत्तं च प्रीतिकर्मणि भ्रा
तृ मातृ पितृ प्राप्तं षड्विधं
स्त्रीधनं स्मृतं ॥१९४ अन्वाधेयं
च यद्दत्तं पत्या प्रीतेन चैव
यत् पत्यौ जीवति वृत्ताया
प्रजायास्तद्धनं भवेत् ॥१९५

कारके स्त्री धन हैं ऋषियोंने कहा ॥१९४ प्रसन्न ५८
होके पतिने जो दिया और अन्वाधेय इन दोनों ध
नको उस स्त्रीके मरे पीछे उसका प्रजा अर्थात् सं
तति लेवै भर्ता न पावै ॥१९५ ब्राह्मदैव आर्ष गांध

म० स्मृ०टी० भा० ३६४

364

वे प्राजापत्य इन पांचो विवाहमें स्त्रीको मिला जो
धनहै उसको सन्तति रहित स्त्रीके मरे पीछे उ०
सका भर्ता पाताहै १९६ आसुर पैशाच राक्षस इ
न तीन विवाहमें स्त्रीको प्राप्तजो धनहै उसको
प्रजारहित स्त्रीके मरे पीछे उस स्त्रीके माता पि
ता पातेहै भर्ता नही पाता १९७ ब्राह्मणकी वा

ब्राह्मदैवार्षगांधर्व प्राजाप०
त्येषु यद्वसु अप्रजायामती
तायां भर्तुरेव तदिष्यते १९६
यत्तस्याः स्याद्धनं दत्तं विवा
हेष्वासुरादिषु अप्रजायां
मतीतायां मातापित्रोस्त०
दिष्यते १९७ स्त्रियां तु यद्भवे
द्वित्तं पित्रादत्तं कथंचन ब्रा
ह्मणी तद्धरेत्कन्या तदप०
त्यस्य वा भवेत् १९८ ॥

रे वर्णकी स्त्री विवाहित हो उनमें ब्राह्मणीकी
कन्याहो और क्षत्रिय आदि तीन वर्णकी स्त्री संत
ति और पतिसे रहित हो और उस स्त्रीको किसप्रका
रसे पितानेधन दियाहो उसधनको उसस्त्रीके म
रे पीछे ब्राह्मण वर्ण स्त्रीकी कन्या पावै और क
न्यानहो तो पुत्रपावै १९८

भाई आदि बहुत लोगोंका जो साधारण अर्थात्
सभका धनहै उसको भर्यो आदि गहनाके लि
ये न लेवै और भर्ताकी आज्ञा विना भर्ताका दि
या धनभी न लेवै इससे यह बात जानी गई कि
यह स्त्री धन नहींहै १९९ पतिके जीते हुए जो
अलंकार स्त्रीने धारण कियाहै उसको दाय

न निर्हारं स्त्रियः कुर्युः कु
टुम्बाद्बहुमध्यगात् स्वका
दपि च वित्ताद्धि स्वस्य भर्त
रनाज्ञया १९९ पत्यौ जीव
ति यः स्त्रीभि रलंकारो धृ
तो भवेत् न तं भजेरन्दाया
दा भजमानाः पतन्ति ते २००
अनंशौ क्लीब पतितौ जा
त्यंध बधिरौ तथा उन्मत्तज
डमूकाश्च येच केचिन्निरिंद्रि

अर्थात् हिस्सा ले या २०१ ने वाले विभाग
न करै तो पतित होते है २०० नपुंसक पतित ज
न्मसे अंधा और बहिरा व्याधि आदिसे उत्पन्न जड
अर्थात् विकलांतःकरण मूक अर्थात् गूंगा और
रकोई इंद्रियोंसे रहित जोहै ये सभ अंशको न

करनेकी इच्छा हो तो

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
३६५

ही पाते ३१ इनसमभेके अर्थात् पीछे जो कहे॰
आवेंहै नपुंसक आदिको यथाशक्ति ग्रासाच्छाद
न जीनेतकदेना शास्त्र जाननेवाला जो विभा॰
गलेनेवाला मनुष्यहै उसको उचितहै नदेतो
पतित होताहै ३२ नपुंसक आदिको विवाह॰

365

सर्वेषामपितुन्याय्यं दातुं
शक्त्या मनीषिणा ग्रासाच्छा
दनमत्यंतं पतितोह्यददद्भ
वेत् ३२ यद्यर्थिता तुदारैः
स्यात् क्लीवादीनां कथंचन
तेषामुत्पन्नतंतूना मपत्यं
दायमर्हति ३३ यत्किंचि॰
त्पितरि प्रेते धनं ज्येष्ठोधिग
च्छति भागो यवीयसां तत्र
यदि विद्यानुपालिनः ३४

करके यथायोग्य इनकी स्त्रीमें पुत्र उत्पन्नकरा॰
के उस पुत्रको अंशदेवै ३३ पिताके मरे पीछे
जेठपुत्र विभागके पहिले जो कछु धन अर्जन
करे उसमें सबछोटे भाई पावैं पंरतु विद्यावान हो
वैंतो ३४

विद्या रहित सब भाईयोंकी मेहनत से धन हो
वै तो उसमें सम भाग करना वह धन पिता का
नहीं है यह शास्त्र का निषेध है ॥ विद्या में
भी विवाह मधुपर्क इन्होंकरके जो धन मिले
उसमें किसीका भाग नहीं है तो अर्जन कैरे सो

अविद्यानां तु सर्वेषां मीहा
तश्चेद्धनं भवेत् समस्तत्र
विभागः स्यादपित्र्य इति या
ज्ञ ॥ विद्या धनं तु यद्य
स्य तत्तस्यैव धनं भवेत् मैत्र
मौद्वाहिकं चैव माधुपर्कि
कमेव च ॥ ब्राह्मण धं
कुत नेहत धनेशाकः स्वक
र्मणा सर्निभोज्याः स्वकादे
शा त्किं विहत्वोपजीवनं ॥

ई लेवे ॥ भाईयोंके मध्यमें जो अपने कर्मसे
समर्थ है और पिताके धनकोलेनेकी इच्छानही
करता है उसको अपने अंशसे कछु देके भाग र
हित करना क्यों कि उसके लड़के पीछेसे विवाद
न करे कि हमारे पिताने अंश नही लिया है हमको

हो १ पिताके धनका नाश न हो और अपने श्रम॰
से जो अर्जन करै उस धनको इच्छा न हो तो भाई॰
योंको न देवै २०८ पिताके द्रव्यको किसीने छीन
लियाहो और पिताने उससे फेर न पायाहो और
पुत्र उस द्रव्यको अपने परिश्रमसे पावै तो उस

अनुपघ्नं पितृद्रव्यं श्रमेण ।
यदुपार्जितं स्वयमीहित ल
ब्धं न त्राकामो दातु मर्हति
२०८ पैत्रिकं न पिताद्रव्य मन
वाप्तं यदाप्नुयात् न तत्पुत्रै ।
र्भजेत्साई मकामः स्वयमर्जि
तं २०९ विभक्ताः सहजीवंतो
विभजेरन्पुनर्यदि समस्तत्र
विभागः स्या ज्जेष्ठ्यं तत्र न वि
द्यते २१० ॥

द्रव्यका विभाग अपने पुत्रोंके साथ न करै और
इच्छा हो तो करै क्योंकि वह द्रव्य अपने पुरुषार्थ
से आई है पितामहकी नहीं है २०९ एकवेर विभा
गहो गयाहो फेर अपने इच्छासे मिलकेरहे और
पुनः विभागकरै तो जेठ भाईको जेठांश न देवै २१०

भाईयोंके मध्यमें जेठा भाई अथवा छोटाभाई
विभाग कालमें संन्यास आदि करके अपने अ
शसें भ्रष्टहो अथवा मरगयाहो तो उसके भा
गका लोपनकरना किंतु उसका भी भाग ल

येषां जेष्टः कनिष्ठोवा हीये
तांश प्रदानतः म्रियेतान्य
तरो वापि तस्य भागो न लु
प्यते २॥ सोदर्या विभजेरं
स्तं समेत्य सहिताः समं भ्रात
रो येच संसृष्टा भगिन्यश्च
सनाभयः २॥ यो जेष्ठो वि
निकुर्वीत लोभाद्भ्रातॄन्य
वीयसः सजेष्टः स्यादभाग
श्च नियंतव्यश्च राजभिः २॥ ३

गाना २॥ इस भागको सब भाई और भगिनी
मिलके सम भागकरै २॥ जो छोटा भाई लोभ
से छोटे भाईयोंके भाग न देवै सो जेठा भाई न
ही कहाताहै और राजासे दंडको पाताहै २॥

म० स्मृ० टी० भा० ३६७

367

निष्काम कर्ममें स्थितहो सब भाई तो धनको न
ही पावे छोटे भाईके विना दिए जेठा भाई सबके
धनको केवल अपनाही न करै २१४ सब भाई मि
लके धनको अर्ज्जन करै तो विभाग कालमें वि
षम विभाग पिता न करै २१५ पुत्रोंसे विभक्त हो

सर्वे एव विकर्मस्था नार्हन्ति
भ्रातरो धनं न चादत्वा कनि
ष्ठेभ्यो ज्येष्ठः कुर्वीत यौतकं २१४
भ्रातॄणा मविभक्तानो यद्यु
त्थानं भवेत्सह न पुत्रभागं
विषमं पिता दद्यात्कथंचन
२१५ ऊर्द्धं विभागाज्जातस्तु
पित्र्यमेव हरेद्धनं संसृष्टास्ते
न वा ये स्यु र्विभजेत स तैस्स
ह २१६ ॥

के पिताने फेर पुत्र उत्पन्न किया तो वह पुत्र केवल
पिताहीका धन पावैहै और उसके साथ पूर्वके
विभक्त भाई मिले हों तो उन्होंके साथ विभाग भए
पीछे जो पुत्र उत्पन्न भयाहै सो विभागकरै २१६ ॥

संतति रहित पुत्रके धनको माता ग्रहण करे माता न हो तो पितामही अर्थात् आजी ग्रहण करे ११७ शास्त्रकी विधिसे ऋण और धनका विभाग भए पीछे जो कुछ धन देखनेमे आवे

अनपत्यस्य पुत्रस्य माता दायमवाप्नुयात् मातर्यपि च वृत्तायां पितुर्माता हरेद्धनं ११७ ऋणे धने च सर्वस्मिन् प्रविभक्ते यथाविधि: पश्चाद्दृश्येत यत्किंचित्तत्सर्वं समतां नयेत् ११८ वस्त्रं पत्रमलंकारं कृतान्नमुदकं स्त्रियः योगक्षेमं प्रचारं च न विभाज्यं प्रचक्षते ११९

उसका समभाग सब करे ११८ वस्त्र वाहन भूषण लड्डू सत्तू हलुआ आदि जलाधार दासी मंत्री पुरोहित आदि गौ आदिका निकसने की मार्ग इन सभोंका विभाग न करना अपने कार्यके योग्य

सब कोई लेवै २१९ क्षेत्रज आदि पुत्रोंको विभा
गको क्रमसे आप लोगोंसे कहा इसके अनंतर
द्यूतके धर्मको जानो २२० द्यूत और समाह्वय
इनको राज्यमें नहोने देवे दोनो राज्यका ना०

अयमुक्तो विभागो वः पुत्रा
णां च क्रियाविधिः क्रमशः
क्षेत्रजादीनां द्यूतधर्मं नि०
बोधत २२० द्यूतं समाह्वयं
चैव राजा राष्ट्रान्निवारयेत्
राजान्तकरणावेतौ द्वौ दो०
षौ पृथिवीक्षिताम् २२१ प्र
काशमेतत्तास्कर्यं यद्देवन
समाह्वयौ तयोर्नित्यं प्रती
घाते नृपतिर्यत्नवान्भवेत्
२२२

श करनेवाले हैं २२१ ये दोनो प्रकार चोरी है इस
लिये इन दोनोंके राजा यत्न सहित रहै २२२

प्राण सहित पासा आदिसे दाव लगाके क्रीडा क
रना द्यूतकहाताहै और प्राण सहित माल भेडा
भैसा घोडासे दावलगाके क्रीडा करना समाह्व॰
य कहाताहै २२३ द्यूत और समाह्वय इन दोनो
को जो करै और करावै तिनको और ब्राह्मण क्ष॰

अप्राणिभिर्यत्क्रियते तल्लो
के द्यूत मुच्यते प्राणिभिः क्रि
यमानस्तु स विज्ञेयः समाह्व
यः २२३ द्यूतं समाह्वयं चैव
यः कुर्यात्कारयेत वा तान्स
र्वान् घातयेद्राजा शूद्रांश्च द्वि
जलिंगिनः २२४ कितवान्
शीलवान् क्रूरान् पाषंडस्थां॰
श्च मानवान् विकर्मस्थाः शौं
डिकांश्च क्षिप्र निर्वासयेत्पु
रान् २२५

त्रिय वैश्यके चि न्हको धारण करने
वाले शूद्रको राजा नाश करै २२४ द्यूत आदिकाक
रनेवाला नच निधांगवैया क्रूर पाखंडी निकाम
कर्म करनेवाला सुरा बनानेवाला इन सभको पु
रसे राजा जलदी निकालदेवै २२५ ये सभ छैपडु

म० स्मृ०टी० भा० २६४

368

प चोरहै दुष्टकर्म करके श्रेष्ठ प्रजोंको बाधाक
रतेहैं २२६ बडा वैर करनेवाला द्यूतहै यह पूर्वका
लमें देखागया इसलिये बुद्धिमान पुरुष हँसी
के अर्थभी इसका सेवन न करै २२७ चोरीसे अ

पते राष्ट्रे वर्तमाना राज्ञः प्रच्छ
न्न तस्कराः विकर्म क्रियया
नित्यं बाधंते भद्रिकाः प्रजाः
२२६ द्यूतमेतत्पुराकल्पे दृष्टं
वैरकरं महत् तस्माद्द्यूतं न से
वेत हास्यार्थमपि बुद्धिमान्
२२७ प्रच्छन्नं वा प्रकाशं वा त
न्निषेवेत यो नरः तस्य दंडवि
कल्पः स्याद्यथेष्टं नृपते स्त
था २२८ ॥

थवा प्रकाशमें द्यूतके सेवन करने वाले मनुष्यों
को जो दंडदेनेकी इच्छा राजाकरै सो दंडदेवै २२८

२
स्त्री बाल वृद्ध दरिद्र रोगी इन्होंको चटकना
और बांसका फलटा इन्होंसे मारना और रस्सीसे
बांधना यह दंड देवे २३० क्षत्रिय वैश्य शूद्र ये स
ब दंड देनेके समर्थ नहोवें तो कर्म करके ऋण

क्षत्रविट्शूद्रयोनिस्तु दंडं
दातु मशक्नुवन् आनृण्यं
कर्मणा गच्छेद्विप्रो दद्याच्छ
नैः शनैः २२९ स्त्रीबालोन्म
त्तवृद्धानां दरिद्राणां च रोगि
णाम् शिफा विदल रज्ज्वाद्यै
र्विदध्यान्नृपतिर्दमम् २३० ये
नियुक्तास्तु कार्येषु हन्युः
कार्याणि कार्यिणां धनोष्म
णा पच्यमानास्तान्निःस्वान्का
रयेन्नृपः २३१ ३

से छूटे और ब्राह्मण तो धीरे धीरे देवे न कर्म करे २
कार्य करानेके लिये आज्ञाके पाप रूप मनुष्य
कार्यवालेके कार्यको नाश करे उन्होंका सब ध
न राजा लेवे २३१ राजाके आज्ञासे विरुद्ध करेन

म॰
स्मृ॰टी॰
भा॰
३२॰
370

वाले और राज्यांगके दूषण करने वाले स्त्री बाल
क ब्राह्मण इन्होंके मारने वाले शत्रुका सेवन॰
करनेवाला इन सभोंका नाशकरै २३२ धर्मक
रके जो कार्य दंड पर्यंत हो गया सो फेर निवृत्त

कूटशासन कर्तॄंश्च प्रकृती
नांच दूषकान् स्त्रीबाल ब्रा॰
ह्मणघ्नांश्च हन्याद्द्विट्सेविन
स्तथा २३२ तीरितं चानुशि॰
ष्टं च यत्र क्वचन यद्भवेत् कृ
तं तद्धर्मतो विद्या न्नतद्भूयो
निवर्तयेत् २३३ अमात्या प्रा
ड्विवाकोवा यत्कुर्युः कार्य
मन्यथा तत्स्वयं नृपति कु॰
र्यात्तान्सहस्रं च दंडयेत् २
३४

नही होता २३३ मंत्री और प्राड्विवाक ये सभ जिस
कार्यका अन्यथा अर्थात् कूटकरै उसकार्यको
राजा आप देखे और राजाके देखने मे इन्होंका देख
ना असत्य जानाजाय तो इन्होंसे सहस्रपण दंड राजा
लेवै २३४

ब्राह्मणको मारनेवाला सुरापान करनेवाला ब्रा
ह्मणका सोरह मासा सोना चोरानेवाला माता
के साथ रतिकरनेवाला ये चारो भिन्न भिन्न महा
पातकी कहाते हैं २३५ ये चारो प्रायश्चित्त न क
रै तो धन सहित शरीरका दंड जो कहेंगे सो इ
न्होंको देना २३६ मातृगमन करनेवाला सुरा

ब्रह्महा च सुरापी च स्तेयी च
गुरुतल्पगः एते सर्वे पृथग्ज्ञे
या महापातकिनो नराः २३५
चतुर्णामपि चैतेषां प्रायः
श्चित्तमकुर्वतां शरीरं धन
संयुक्तं दंडं धर्म्यं प्रकल्पये
त् २३६ गुरुतल्पे भगः का
र्य्यः सुरापाने सुराध्वजः
स्तेये च श्वपदं कार्यं ब्रह्मह
न्यशिराः पुमान् २३७

पान करनेवाला ब्राह्मणका सोरह मासा सोना
चोरानेवाला ब्राह्मणको मारनेवाला इन चारोंको
मस्तकमें क्रमसे भगाकार सुराका ध्वजाकार अर्था
त् डेग भभका इसका आकार कुत्ताके पांवका आ
कार शरीर रहित पुरुषका आकार चिह्न करना
२३७ चिह्नसहित जो यह सभी हैं इन्होंके भोजन

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
३११

371

यज्ञपाठ विवाह आदि कर्म न करना ये सभ सं॰
पूर्ण धर्मसे बाहर होकर दीन हीक होके पृथि॰
वीमें घूमें २३८ ज्ञाति और संबंधी लोग इन्होंका
त्याग करें इन्होंके उपर दया न करैं और इन्होंके न

असंभोज्याश्च संयाज्या असं
पाठ्याविवाहिनः चरेयुः पृ
थिवीं दीनाः सर्वधर्मबहि
ष्कृताः २३८ ज्ञातिसंबंधि
भिस्त्वेते त्यक्तव्याः कृतल॰
क्षणः निर्दया निर्नमस्का॰
रा स्तन्मनोरनुशासनं २३९
प्रायश्चित्ते तु चरिताः स
र्वे वर्णाः यथोदितं नांक्या
राज्ञा ललाटे स्युर्दाप्यास्तू
त्तमसाहसं २४० ॥

मस्कार न करें यही मनुजीकी आज्ञा है २३९ शा
स्त्रोक्त प्रायश्चित्तके करनेवाले जो चारों वर्ण इन्हों
के मस्तकमें चिह्न राजा न करे किंतु सहस्र प
ण देवे २४० ॥

अपराध करनेवाला ब्राह्मणको मध्यमसाहस
दंड देवै अथवा गृहकी सामग्री और द्रव्य इन दो॰
नों सहित अपराधकरनेवाले ब्राह्मणको राज्य
में निकाल देवै २४१ क्षत्रिय आदि तीनों वर्ण इ॰
च्छा रहित इन पापोंको करें तो उन्होंका संपूर्ण

आगस्सु ब्राह्मणस्यैव का॰
र्यो मध्यमसाहसः विवा
स्यो वा भवेद्राष्ट्रात्सद्रव्यः
सपरिच्छदः २४१ इतरे कृत
वंतस्तु पापान्येतान्यकाम
तः सर्वस्वहारमर्हंति का
मतस्तु प्रवासनम् २४२
नाददीत नृपः साधुर्महा
पातकिनो धनम् आददा॰
नस्तु तल्लोभात्तेन दोषेण ॥
लिप्यते २४३ ॥

द्रव्य हरण और इच्छासे किए हो तो वधदंड देना
२४२ साधु राजा महापातकियोंका धन लेवै क
दाचित् लोभसे लेवै तो उसके दोषसे संयुक्त हो
ता है २४३ दंडके धनको जलमें डालकर वरु

म॰
स्प॰ टी॰
भा॰
२१२

३७२

ण देवताके आधीन करे अथवा वेद और शास्त्र इन दोनोंसे युक्त जो ब्राह्मण है उसको देवे २४४ क्यों कि महापातकी के दंडसे जो धन मिला है उसका स्वामी वरुण है वेदके पार जाने वा

अप्सुप्रवेश्य तं दंडं वरुणा॰ योपपादयेत् श्रुतवृत्तोप पन्ने वा ब्राह्मणे प्रतिपाद॰ येत् २४४ ईशो दंडस्य वरु॰ णो राज्ञां दंडधरो हि सः ई॰ शः सर्वस्य जगतो ब्राह्म॰ णो वेदपारगः २४५ यत्र वर्जयते राजा पापकृद्भ्यो धनागमं तत्र कालेन जा॰ यंते मानवा दीर्घजीविनः २४६ ॥

ला ब्राह्मण संपूर्ण जगतका स्वामी है २४५ जहां पापियोंसे धनके आगमको राजा वर्जन करता है तहां मनुष्य बहुत दिन तक जीते हैं २४६

और वैश्य लोग जिस प्रकारसे अन्नको वोतेहैं सो अन्न इसी प्रकारसे भिन्न भिन्न उत्पन्न होतीहै और लड्की भी नही मरतेहै अंगसे हीन कोई नहीउ त्पन्न नही होतेहैं ४७ इच्छासे ब्राह्मणोंका वध

निष्पद्यंते च सस्यानि यथो मानि विशांपृथक् बाला श्च न प्रमीयंते विकृते नच जायते ४७ ब्राह्मणान्वाध माने तु कामादवर वर्णजम हन्याच्चित्रै र्वधोपायै रु द्वेजन करैर्नृपः ४८ यावा नवध्यस्य वधे तावान्वध्यं स्य मोक्षणे अधर्मो न्टपते र्दृष्टो धर्मस्तु विनि यच्छतः ४९ ॥

करनेवाले छोटे वर्णको उद्वेग करनेवाला नाना प्रकारका जो वधकी उपायहै उससे वधकरे ४८ वधके योग्यजो नहीहै उसके वधमे जितना पाप होताहै उतनाही पाप वधके योग्यको छोडनेमेंहो

म० स्मृ०टी० भा० २७२

373

नोहै २४९ अठारह प्रकारके व्यवहार मार्गोंमें प
रस्पर विवाद करने वालोंका विस्तार पूर्वक व्यव
हार निर्णयको मैने कहा २५० इस रीतिसे धर्मयु
क्त कार्योंको अच्छी रीतिसे करता सैते राजा नहीं

इदितोय विस्तरशो मिथो
विवदमानयोः अष्टादशसु
मार्गेषु व्यवहारस्य निर्णयः
५० एवं धर्म्याणि कार्याणि
सम्यक्कुर्वन्महीपतिः देशा
नलब्धा लिप्सेत लब्धांश्च प०
रिपालयेत ५१ सम्यङ्निवि०
ष्टदेशस्तु कृतदुर्गश्च शास्त्र
तः कंठकोद्धरणे यत्नमा०
तिष्ठेद्यत्नमुत्तमम् २५२

मिले जो देश है उन्होंके लेनेकी इच्छा करै और मिले
हुए देशोंकी पालनेकी इच्छा करै २५१ शास्त्रोक्त दे
शमें शास्त्रोक्त किला बनाके उसमें रहके कांटा
निकालनेमें उत्पन्न यत्नको करै २५२ ॥

प्रजाओंके पालनमें तत्पर होके राजा भले लोगोंके
रक्षणसे और कांटाके निकालनेसे स्वर्गमें जा-
ताहै १५३ चोरोंका दंड नही करता और प्रजाओंसे
अपना भाग लेता ऐसे राजाके राज्यमें प्रजाको

रक्षणादार्य्यवृत्तानां कंट-
कानां च शोधनात् नरेंद्रा
स्त्रिदिवं यांति प्रजापालन
तत्परान् १५३ अशासमेस्त-
स्करान्यस्तु बलि गृह्णाति
पार्थिवः तस्य प्रक्षुभ्यते रा
ष्ट्रं स्वर्गाच्च परिहीयते १५४
निर्भयं तु भवेद्यस्य राष्ट्रं बा
हु बलाश्रितं तस्य तद्वर्धते
नित्यं सिच्यमान इव द्रुमः १
५५

प करतेहै और उसी पापसे आप नष्ट हुआ तिससे
स्वर्ग प्राप्तिभी नही होती १५४ जिस राजाके बा-
हु बल पाके प्रजा लोग निर्भय रहतेहै उसका
राज्य नित्य बढताहै जिस रीतिसे सींचा हुआ वृ

त २५५ हेतोंकी आवेसे देखकर राजापर द्रव्यको
हरण करने वाले चोरको प्रकाश अप्रकाश भेद
करके दो प्रकारका जाने २५६ नाना प्रकारके
वस्तुओंको वेचने वाले प्रकाश चोर है निर्जन
देशमें और सोए हुए मनुष्य सेते जो पर द्रव्यको
चोरावे सो अप्रकाश चोर है २५७ उत्कोचक अ॰
र्थात कार्यवाले मनुष्यसे धन लेके अयुक्त कार्य

द्विविधास्तस्करान्विद्या त्प
रद्रव्यापहारकान् प्रकाशां
श्च प्रकाशांश्च चारचक्ष म
हीपतिः ५६ प्रकाशा वंच॰
कास्तेषां नाना पण्योपजी
विनः प्रच्छन्न वंचकास्त्वेते
ये स्तेनाटविकादय ५७ उ॰
त्कोचकाश्चौपधिका वंचकाः
कितवास्तथा मंगलादेशवृ
ताश्च भद्राश्चेक्षणिकैः सह ५८

करने वाला औपधिक अर्थात् भय देखाके धन ले
नेवाला वंचक अर्थात् सुवर्ण आदि वस्तुमें निका
म वस्तु डालके ठगहारी करके पर धन लेने वाला
कितव अर्थात् द्यूत और समाह्वयका करने वाला
मंगला देश वृत्त अर्थात् धन पुत्र लाभ आदि मंगल
समाचार कहके जीने वाला भद्र अर्थात् पापको

महामात्र अर्थात् हाथीने सिखानेसे जीनेवाले चिकि
त्सक अर्थात् वैदई से जीनेवाले ये दोनों जब अच्छा
कर्म न करैं और धनको ग्रहण करैं तब शिल्पोपचा
र युक्त अर्थात् चित्र लिखन आदि उपायसे जीनेवा
ले विना कहे शिल्पोपचार का प्रोत्साहन करके प
रधन ग्रहण करैनेवाले पराई स्त्री अर्थात् वेश्याये
सभ परके वशीकरणमें प्रवीण हैं २५९ इन्हें आदि

असम्यक्कारिणश्चैव महामा
त्राश्चिकित्सकाः शिल्पोपचा
रयुक्ताश्च निपुणाः पण्ययो
षितः २५९ एवमादीन्विजा
नीयात्प्रकाशाँल्लोककंटका
न् निगूढचारिणश्चान्यान न
नार्यानार्यलिंगिनः २६० ता
न्विदित्वा सुचरितैर्गूढैस्तत्क
र्मकारिभिः चारैश्चानेकसंस्था
नैः प्रोत्साह्य वशमानयेत् २६१

को प्रकाश लोकका कंटक जानना छिपे हुए और
है जो भले नहीं है और भले लोगोंकी नाईं रहते हैं २
६० पूर्व कथित वंचकों को छिपकरके वचनकर्म
करानेवाले जो सभ्य और अनेक स्थानमें स्थित जो
चार अर्थात् सातवें अध्यायमें कहे हुए जो कापटि
क आदि इन्होंसे जानकर उनोंको उत्साह करके अ

र्थात् दुःख देकर अपने वशमें लगावे २६१ अपने॰
अपने कर्ममें तत्वपूर्वक उन्होंके दोषको कहकर
के अच्छे प्रकारसे अपराधके अनुसार उन्होंको दंड
देवे २६२ चोर और पापीजो नम्र वेषधारण करके
पृथिवीमें चलतेहैं इन्होंके पापका निग्रह दंड वि॰

तेषां दोषानभिख्याप्य स्वे स्वे
कर्मणि तत्त्वतः कुर्वीत शा
सनं राजा सम्यक्सारापराध
तः २६२ नहि दंडादृते शक्यः
कर्तुं पापविनिग्रहः स्तेना॰
नां पापबुद्धीनां निभृतं चर॰
तां क्षितौ २६३ सभाप्रपापू॰
पशालावेशमद्यान्नविक्रयाः
चतुष्पथाश्चैत्यवृक्षाः समा
जाः प्रेक्षणानि च २६४ ॥

ना करनेके शक्य नहीहै इसलिये दंड करना २६३
सभा अर्थात् ग्राम नगर आदिमें निश्चितजन समू
ह स्थान पवसरा पक्वान बनानेका स्थान मद्य वेच
नेका चौरहे वेश्याका गृह प्रसिद्ध वृक्ष मेल जन
समूह स्थान २६४ ॥

पुरानी भाग बन कारीगरोंका स्थान शून्य गृह ग्राम
आदि वनस्थान नया बनाया बन २६५ ऐसे देशोंके
सेना आदिसे तस्कर आदिका निवारण राजा करै
क्यों कि बहुधा ऐसे देशोंमें अन्न पान स्त्री संभोग आ
दिको खोजनेके लिये तस्कर आदि रहतेहैं २६६ इ

जीर्णोद्यानान्यरण्यानि का
रुकावेशनानि च शून्यानि
चाप्यगाराणि वनान्युपवना
नि च २६५ एवं विधान्नृपो देशा
न् गुल्मैः स्थावर जंगमैः तस्क
र प्रतिषेधार्थं चारैश्चाप्यनु
चारयेत् २६६ तत्सहायैरनु
गतैर्नानाकर्मप्रवेदिभिः
विद्यादुत्सादयेच्चैव निपुणैः
पूर्व तस्करैः २६७ ॥

न्होंके सहाय करने वाले संधिछेद आदि कर्मके जा
नने वाले चोरोंके मायामें निपुण पूर्व तस्कर जो चो
रका रूप धारण किये है इन्होंसे चोरोंका जानना औ
र चोरोंका नाशभी करना २६७ पूर्व चोरजो चारका

स॰
स्टं॰ टी॰
भा॰
२७९

376

रूप धारण किए है सो इन सभको ऐसा कहे कि
आइए हमारे गृह चलिए लड्डु आदि भोजन करिए
हमारे देशमें एक ब्राह्मण ऐसा है कि मनोरथ व
स्तुकी सिद्धिको जानता है इसको दिखिए कोई
एकही है और बहुतेसे लड़ाए करेगा इसको देखि
ए एवं प्रकारका वहानोसे राजा का दंडधारण
करेन वाले पुरुष इन चोरोंका समागम करें

भक्ष्यभोज्योपदेशैश्च ब्राह्मणा
नां च दर्शनैः शौर्यकर्मापदे
शैश्च कुर्युस्तेषां समागमं
ये तत्र नोपसर्पेयुर्मूलप्र
णिहिताश्च ये तान्प्रसह्य नृपो
हन्यात्समित्रज्ञातिबान्धवा
न् २६९ न होढेन विना चौरं
घातयेद्धार्मिको नृपः सहो
ढं सोपकरणं घातयेदविचा
र इन चोरोंको प रयन् २७० ॥ कहे २६ जो चोर भा
जन पान स्थानमें निग्रहकी शंका
करके न आवे और जो चोरका रूप धारण किए हुए
एवं चोरोंसे समागमन करे उन्होंको उसीसे जानक
र हठसे बुलाकर जाति स्वजन सहित उन्होंका ना
श राजा करे २६९ धार्मिक राजा चोरोंका चिह्न बिना
उन्होंका घातन करे चोरीका चिह्न सहित चोर हो
ते सामग्री सहित चोरका नाश करे विचार न करे
कि इसको दोष न होगा २७०

ग्राममें जो कोई चोरोंको अन्न पान स्थानको देवै
उसका भी नाश राजाकरै २७१ राज्यमें जो रक्षा
धिकारी मनुष्यहैं और ग्रामके चारों और रहने
वाले मनुष्य ये सभ चोरोंके उपदेशमें मध्यस्थ
होवें तो इनको भी चोरके राजा दंडकरै २७२ ।

ग्रामेष्वपि च ये केचि च्चोरा-
णां भक्तदायकाः भांडाव-
काशदाश्चैव सर्वांस्तानपि
घातयेत् ७१ राष्ट्रेषु रक्षाधि
कृता सामंतांश्चैव चोदिता-
न् अभ्याघातेषु मध्यस्थाञ्छि
ष्याच्चोरानिवद्रुतं ७२ यश्चापि
धर्म समयात् प्रच्युतो धर्मजी
विनः दंडेनैव तमप्योषेत् स्व
काद्धर्माद्धि विच्युतं २७३ ।

परको याजन प्रति ग्रहादि करके याग दानादि
कर्मको उत्पादन करके जीवन करै ऐसा जो ब्रा
ह्मणहै और अपने धर्मसे च्युतहै उसको भी दंड
करके उःख राजा देवै २७३ तस्कर आदिसे ग्राम

के लूटनेमें पुलके भंगमें मार्गमें चोरके दर्शनमें
शक्ति रहत संते जो दौडता नहीं सो सामग्रीसहि
त निकालनेके योग्य है २७४ राजाका कोष अ॰
र्थात् खजाना को चोरानेवाला और राजाके विरु
द्ध कर्ममें रहनेवाला और राजाके शत्रुओंसे वैरक

ग्रामघाते हिताभंगे पथिमो
षाभिदर्शने शक्तितो नाभि
धावंतो निर्वास्याः सपरिछ
दाः ७४ राज्ञः कोशापहर्तॄं॰
श्च प्रतिकूलेषु च स्थितान्
घातयेद्विविधैर्दंडैररीणां
चोपजापकान् ७५ संधिं छि
त्वा तु ये चौर्यं रात्रौ कुर्वंति त
स्कराः तेषां छित्वा नृपो ह॰
स्तौ तीक्ष्णे शूले निवेशयेत्
७६

रानेवाला इनको नाना प्रकारके दंडसे अर्थात् अ
पराधानु सारकर चरण जिह्वा छेदनादिसे घात
करना ७५ रात्रिमें संधिछेदन करके जो चोरी कर
ता है उसका दोनों हाथ काटके तीखे शूल पर बैठा
वे ७६

गांठि काटने वालेका अंगूठा और उसके समीप की अंगुली इन दोनोंका छेदन करना पहिली वेरमें और दूसरे वेरमें हाथ पांव काटना तीसरी वेरमें वध करना २७७ चोरको अग्नि भात शस्त्र अव॰

अंगुली ग्रंथिभेदस्य छेदयेत्
प्रथमे ग्रहे द्वितीये हस्तच
रणौ तृतीये वध मर्हति २७७
अग्निदान्भक्तदांश्चैव तथा
शस्त्राय कार्देशान् सन्निधातॄं
श्च मोषस्य हन्याच्चौर मिवेश्व
रः २७८ तडागभेदकं हन्या
दप्सु शुद्धवधेनवा तद्वापि
प्रतिसंस्कुर्य्याद्दाप्यस्तूत्तम
साहसम् २७९ ॥

काश इन्होंका देनेवाला और चोरीकी वस्तु रखने वाला इन्होंको चोरकी नाईं राजा नाश करै २७८ जो स्नान दान आदिसे परोपकार अर्थात् पहिले की नाईं बनादेवे तो उसका भय न रखना किंत

उत्तम साहस दंड देना २७९ राजाका धान्य आदि ध
नका गृह हथियारका गृह देवताका गृह इन्होंका
भेद करनेवाला और हाथी घोडा रथको चोराने वा
ला इनको हनन करना इसमें कछु विचार न कर
ना २८० किसीने प्रजाके अर्थ तडाग किया और दू
सरा उसका जल ग्रहण करै और जलके आनेकी

कोष्ठागारायुधागार देवता
गार भेदकान् हस्त्यश्व रथ
हर्तृंश्च हन्यादेवा विचारयन्
२८० यस्तु पूर्वे निविष्टस्य त
डागस्योदकं हरेत् आगमं
वाप्यपां भिंद्यात् स दाप्यः पूर्व
साहसं २८१ समुत्सृजेद्राज
मार्गे यस्त्वमेध्यमनापदि
स द्वौ कार्षापणौ दद्यादमे
ध्यं चाशु शोधयेत् २८२ ॥

मार्गमें सेतु बंध करके नाश करै सो प्रथम साह
स दंडके योग्य होता है २८१ विना आपत्काल
के राजमार्ग अर्थात् सडकमें अपवित्र वस्तुको
डाले सो कार्षापण दंड देवे और अपवित्र वस्तु जो
डाला है उसको शीघ्र राजमार्गसे बहर लेजावे ८२

आपत्कालमें आसकोई और वृद्ध गर्भिणी बाल
क ये सभ पूर्व कथित कर्मको करै तो परिभाष
ण अर्थात् क्या किया के योग्य होते है दंडके यो॰
ग्य नहीं होते परंतु मार्गको तो शुद्ध करै अर्थात्
उस अपवित्र वस्तुको मार्गसे बाहर ले जावे २८३
शास्त्रको विना जाने पशु आदिसे झूठी वैदई क
रनेवालेको पूर्व साहस दंड देना [illegible] संबंधमें

आपद्गतोथवा वृद्धो गर्भिणी
बाल एव वा परिभाषणमर्ह
न्ति तच्च शोध्यमिति स्थितिः
चिकित्सकानां सर्वेषां मि॰
थ्या प्रचरतां दमः अमानुषे
षु प्रथमो मानुषेषु तु मध्य
मः २८४ सेतुकम्भध्वजयष्टी॰
नां प्रतिमानां च भेदकः प्र
तिकुर्याच्च तत्सर्वं पंच दद्या
च्छतानि च २८५ ॥

अर्थात् जलके ऊपर गमन करनेके लिये स्था॰
पित जो काष्ट और शिला आदि और राजद्वारमें
जो ध्वज अर्थात् विरूद्ध पुष्करिणी आदिमें जो य
ष्टी अर्थात् लाटी प्रतिमा अर्थात् माटी आदिसे
बनीहुई देवताकी छोटी मूर्ति इनमेंसे कोई प
कका भेदन करने वाला पांचसौ पण दंड देवै ।

म॰
स्मृ॰टी॰
भा॰
३७१

3७9

और जो विनाश कियाहै उसको नया बनादेवै ८४ अहूषित द्रव्यके हूषणमें और भेदनमें मणियों के निकाम वेध करणेमें प्रथम साहस दंडदेवै सम मूल्यके देने वालीको अच्छी वस्तु देताहै फेर एकको निकामवस्तु देताहै इसरीतिसे विषम व्यवहार करने वाला अथवा किसीको बहुत मोलवाली वस्तु देताहै किसीको थोडी मोलवा

अहूषितानां द्रव्याणां हूषणे भेदने तथा मणीनामपवेधे च दंडः प्रथमसाहसः ८४ समैर्हि विषमं यस्तु चरेद्वै मूल्यतोपि वा समाप्नुयाद्दमं पूर्वं नरो मध्यममेव वा ८५ बंधनानि च सर्वाणि राजमार्गे निवेशयेत् दुःखिता यत्र दृश्येरन्विकृताः पापकारिणः ८६

ली वस्तु देताहै इसप्रकारसे विषम व्यवहार करनेवाला पूर्व साहस अथवा मध्यमसाहस दंडको पावैहै अपराधानुसारसे दंडविकल्प जानना २८५ बंधनगृह अर्थात जिसमें अपराधी रहतेहैं को सडकोंमें बनावै जिसके देखनेसे पाप करने वालेको दुःखहोवै ।

अर्थात् बंदीमें पांव तथा तृषा से पीडित बडा नख
केश दाढी दुर्बल शरीर ऐसे मनुष्योंको देखनेसे
नही करने योग्य वस्तुसे डरैंगे कि ऐसी दशाको
पावैंगे तब निकाम कर्म करैंगे २८८ प्राकार अ
र्थात् किलाका भेदन करने वाला और उसके ख
धकको पाटने वाला और उसका द्वारका भेदन
करने वाला इनको शीघ्र देशसे निकाल देवे २८

प्राकारस्य च भेतारं परिखा
णाञ्च पूरके द्वाराणां चैव भं
कारं क्षिप्रमेव प्रवासयेत् ८८
अभिचारेषु सर्वेषु कर्तव्यो द्वि
शतो दमः मूलकर्मणि चा
नाप्तेः कृत्यासु विविधासु च
अबीज विक्रयी चैव बीजो
त्कृष्ट नथैवच मर्य्यादा भेद
के चैव विकृते प्राप्नुयाद्वधं

अभिचार अर्थात् २९१ शास्त्र कथित मारण प्र
योग मूल कर्म अर्थात् पांवकी धूली लेके मारण
प्रयोग इन कर्मोंके करने वालेको दोसो पण दंड दे
ना और मरण हो जाय तो मनुष्य मारनेका दंड देना
इसी रीतिसे माता पिता भार्या आदिको छोडकर मे
त्री आदिको मोहकरके धन लेनेके निमित्त वशी
करण प्रयोग और उच्चाटनादि नाना प्रकारका प्र

म॰
स्स॰ टी॰
भा॰
२६॰

380

योग इसके करनेमें भी दो सौ पण दंड देना २९०॥ प्ररोह अर्थात् अंकुरके समर्थ बीज नहीं है इसको प्ररोह समर्थ है ऐसा कहके उस बीजका वेचने वाला अथवा निकम्म बीजमें थोडा अच्छा बीज डालके वेचने वाला मर्यादा का भेदकरने वाला ये सब नाना प्रकारका विकार हुए अर्थात् नाक हाथ पांव इनको काटकर वध दंडको पावे २९१

सर्वकंटकपापिष्ठं हेमकारं तु पार्थिवः प्रवर्तमानमन्याये छेदयेल्लवशः क्षुरैः सीताद्रव्यापहरणे शस्त्राणामौषधस्य च कालमासाद्य कार्यं च राजा दंडं प्रकल्पयेत् २९३ स्वाम्यमात्यौ पुरं राष्ट्रं कोशदंडौ सुहृत्तथा सप्तप्रकृतयो ह्येताः सप्तांगं राज्यमुच्यते २९४ ॥

सब कंटकोंमें अतिदुष्ट सोनार है सो सब अन्यायमें प्रवृत्त हो तो उसका अपराधानुसार करके छुरासे थोडा थोडा अंगको छेदन करे २९२ खेती करनेकी जो वस्तु है हर कुदाल आदि और शस्त्र औषध इन्होंके हरणमें काल और कार्य इन्होंके देखके राजा दंडकी कल्पना करे २९३ स्वामी अर्थात् राजा अमात्य अर्थात् मंत्री पुर राज कोष दंड सुहृत्।

इन सातोंको प्रकृति कहतेहैं और ये सात राज्यके
अंगहैं इसलिये राज्य सप्तांग कहाताहै २६४ इन सा
तोमें क्रमसे पहिला पहिला बडा व्यसन अर्थात्
दुःखजानना २६५ लोकमें त्रिदंड की नांई परस्प
र मिला हुआ सप्तांग राज्यमें परस्पर विलक्षण उ
पकारसे कोई अंग अधिक नहींहै यद्यपि पूर्व पूर्व
अंगको आधिक्य कहाहै तथापि इन सातों अंगोंके

सप्तानां प्रकृतीनां तु राज्य॰
स्यासां यथाक्रमं पूर्वं पूर्वं गु
रुतरं जानीयाद्व्यसनं महत्
सप्तांगस्येह राज्यस्य विष्टब्ध॰
स्य त्रिदंडवत् अन्योन्यगुण॰
वैशेष्यान्न किंचिदतिरिच्य॰
ते २९६ तेषु तेषु तु कृत्येषु त
त्तदंगं विशिष्यते येन यत्सा
ध्यते कार्यं तत्तस्मिन् श्रेष्ठ॰
मुच्यते २९७ ॥

मध्यमें अन्य अंगके उपका
रका अन्य अंगनहीं करने सकता इसे उत्तर उत्तर॰
अंगकी भी अपेक्षा करना पडताहै इसीसे अधिक
का निषेध कहाहै इसमें दृष्टांत यतीका त्रिदंडहै
जैसे तीनों दंड मिलाके ऊपर चार अंगुल गौके बा
लसे वेष्टन करनेसे परस्पर संबंध होताहै और त्रि
दंडधारण प्रास्वार्थमें कोई दंड अधिक नहींहै तै
से एवं कथित सप्तांग राज्यको जानना २९८ जिस

म॰
स्र॰ टी॰
भा॰
३५८१

अंगसे जो काम होवे उसमें वही अंग श्रेष्ठ है २५७ चार उत्साह कर्म्म इन्हों करके अपनी शक्ति और परकी शक्तिको नित्यही राजा जाने २५८ सब पीड़ा और दुःख इन्होंकी चिंता करके छोटे बड़े कार्यको आरंभ

381

चतुरोत्साहयोगेन क्रियेयेव च कर्मणा स्वशक्तिं परशक्तिं च नित्यं विद्यान्महीपतिः २५८ पीडनानि च सर्वाणि व्यसनानि तथैव च आरभेत ततः कार्यं संचिंत्य गुरुलाघवम् २५९ आरभेतैव कर्माणि श्रांतः श्रांतः पुनः पुनः कर्माण्यारभमाणं हि पुरुषं श्री र्निषेवते ३००

करे २५९ कर्मोंके करते करते थक जावे तो फेर कर्मों का आरंभ करतही रहे क्यों कि कर्म करने वालोंकी सेवा लक्ष्मी करती है ३०० ॥

कृत त्रेता द्वापर कलि ये चारो युग नहे सो नही किं
तु जैसा आचरण राजा करै तैसा युग होताहे अर्था
त् राजाही युग है ३।१ अज्ञान आलस्य आदिसे जं
ब राजा उद्यम न करै तब कलि होताहै और जान
के कर्म नही करता तब द्वापर होताहै कर्म क
रताहै तब त्रेता होताहै यथा शास्त्र कर्मकरत

कृते त्रेतायुगे चैव द्वापरे ।
कलिरेवच राज्ञो वृत्तानि स
र्वाणि राजाहि युग मुच्यते १
कलिः प्रसुप्तो भवति सजा
ग्रद्द्वापरं युगम् कर्मस्वभ्यु
द्यतस्त्रेता विचरंस्तु कृतं यु
गं २ इंद्रस्यार्कस्य वायोश्च
यमस्य वरुणस्य च चंद्रस्या
ग्नेः पृथिव्याश्च तेजो वृत्तं नृ
प श्चरेत् ३ ॥

विचरताहै तब कृतयुग होताहै इसलिये राजा स
र्वकालमें कर्म करताहै इसपर तात्पर्य है और
चारोयुग नहीहै इसपरै तात्पर्य नहीहै ३।२ इंद्र
सूर्य वायु यम वरुण चंद्र अग्नि पृथिवी इन्होंके
पराक्रमको राजा करै और दुष्टोंका नाश करके
प्रताप और श्रमसे युक्त होवै ३।३ जिस प्रकारसे

वरसात के चार मासमें इंद्र वर्षा करतेहै तिसी प्रकारसे इंद्रका कर्म करत संते राजा संपूर्ण राज्यमें प्रजोंके ऊपर काम अर्थात इच्छितकी वृद्धि करै प्रजा लोग जिस कामके इच्छा करै उसको राजा देवै ३.४ जिस प्रकारसे आठमास आपने किरणसे जलको

वार्षिकांश्चतुरो मासान् य-
थेन्द्रोभिप्रवर्षति तथाभिवर्षे
त्स्वं राष्ट्रं कामैरिंद्रव्रतंश्चरन्
४ अष्टौ मासान् यथादित्य-
स्तोयं हरति रश्मिभिः तथा
हरेत्करं राष्ट्रं नित्यमर्कव्रतं
हि तत् ५ प्रविश्य सर्वभूता-
नि यथा चरति मारुतः तथा
चारैः प्रवेष्टव्यं व्रतमेतद्धि मा
रुतम् ६ ।

पृथिवीसे सूर्य ग्रहण करतेहै तिसी प्रकारसे बरसा सूर्यका करम करत संते राज्या राज्यसे कर ग्रहण करे ३.५ जिस प्रकारसे सभ जीवोंमें पैठकर वायु घूमताहै तिसी प्रकारसे वायुका कर्म करत संते चारोंसे संपूर्ण राज्यमें प्रवेश करके घूमे ३.६ ॥

जिस प्रकार से यम प्रिय और शत्रु इन दोनोंके काल
प्राप्त भये संते मारता है तिसी रीतिसे सभ प्रजाको
अपराधके अनुसार यमका कर्म करत संते राजा
दंड देवै ३-७ जिस प्रकारसे वरुण अपने पाशोंसे
दुष्टोंको बांधते हैं तिसी प्रकारसे पापियोंको व

यथा यमः प्रियद्वेष्यौ प्राप्ते
काले प्रयच्छति तथा राज्ञा
नियन्तव्याः प्रजा तद्धि यम
व्रतं ७ वरुणेन यथा पाशै
र्बद्ध एवाभिदृश्यते तथा पा
पा न्निगृह्णीयाद्व्रतमेतद्धि
वारुणं ८ परिपूर्णं यथा च
न्द्रं दृष्ट्वा हृष्यन्ति मानवाः त
था प्रकृतयो यस्मिन्स चान्द्र
व्रतिको नृपः ९ ॥

ह्रणका कर्म करत संते बांधे ३-८ जिस प्रकारसे प
रिपूर्ण चंद्रको देखकर मनुष्योंको आनंद होता
है तिसी रीतिसे सभ जीव राजाको देखकर आनं
दित रहें ऐसा चंद्रका व्रत धारण करत संते रा
जा रहै ३-९ पापकर्ममें नित्यही प्रताप युक्त

और तेज सहित रहै अग्निका व्रत करता सैते दुष्ट मे
त्रियोंको नाश करने वाला होवे ३१० जिस प्रकार
से पृथिवी सभ जीवोंको समधारण करतीहै तिसी
रीतिसे सभ जीवोंको पृथिवीका व्रत धारण करता

प्रतापयुक्त स्तेजस्वी नित्यं स्या
त्पापकर्मसु दुष्टसामंत हिंस
श्च तदाग्नेयं व्रतं स्मृतम् ३१०
यथा सर्वाणि भूतानि धरा धा
रयते समं तथा सर्वाणि भूता
नि बिभ्रतः पार्थिवं व्रतम् ॥
एतै रुपायै रन्यैश्च युक्तो नि
त्य मतंद्रितः स्तेनान् राजा
निगृह्णीया त्स्वराष्ट्रे पर एव
च १२ ॥

सैते राजा धारण करै ३११ इन उपायोंसे और दू
सरों उपायोंसे युक्त होकर आलस्य रहित नित्य
हो अपने राज्यमें परके राज्यमें चोरोंका नाश
करै ३१२ ॥

बडे आपत्कालको प्राप्त भये संतेभी राजा ब्राह्म
णोंको कोपित न करै ब्राह्मणोंको कोप भये सं
ते बल वाहन सहित राजा नाशको शीघ्र पा॰
ता है ॥ यः जिन ब्राह्मणोंने अग्नि समुद्र चंद्र इ॰
न्होंको क्रमसे सभ वस्तुको भोजन करनेवाला

यदा ह्यापदं प्राप्तो ब्राह्म॰
णान्न प्रकोपयेत् ते हेनैव ऋ
पिता हन्युः सद्यः सबलवा
हनं नृपं ॥ यैः कृतः सर्वभक्ष्यो
ग्निरपेयश्च महोदधिः ॥ क्ष॰
यी चाप्यायितः सोमः को॰
न तान्न प्रकोपतान् बुध॰
लोकानन्यान्स्रजेयुर्ये लो
कपालांश्च कोपिताः देवा॰
न्कुर्युरदेवांश्च कः क्षितिंस्त
न्तान्समृद्धुयात् ११ ॥

अपेय क्षय रोगी किया तिन ब्राह्मणोंको कोपि॰
न राजाके कौन नाशको न पावैगा ॥ यथे जो ब्राह्म
ण कोपित भये संते हमरे लोक और लोक पाल
को बनावै देवको अदेव करै उस ब्राह्मणको पी

म॰
स्क॰ टी॰
भा॰
३८४

डित मेंते कौन समृद्धिको पावेगा अर्थात् कोई न पावेगा ३॥ जिन ब्राह्मणोंको वेदही धन है उन्हींके आश्रित होकर लोक और देव रहते हैं उन ब्राह्मणोंको जीनेकी इच्छा करत संते कौन मारेगा ३॥ जिस प्रकारसे संस्कारके आमहो

384

यानुपाश्रित्य तिष्ठन्ति लोका देवाश्च सर्वदा ब्रह्म चैव धनं येषां को हिंस्यात्तान्जिजीविषुः १६ अविद्वांश्चैव विद्वांश्च ब्राह्मणो दैवतं महत् प्रणीतश्चाप्रणीतश्च यथाग्निर्दैवतं महत् १७ श्मशानेष्वपि तेजस्वी पावको नैव दुष्यति हूयमानश्च यज्ञेषु भूय एवाभिवर्द्धते १८ ॥

अथवा न आमहो अग्नि परम बडा देवता है तिसी प्रकारसे ब्राह्मण पंडित हो अथवा मूर्ख हो परम बडा देवता है ३॥ श्मशानमें भी तेजवाली अग्नि दोषको नहीं पाती फिरभी यज्ञोंमें हूयमान भई अर्थात् होमको पाई तो बढतही है ३॥ ॥

इसी रीतिसे यद्यपि संपूर्ण अनिष्ट कर्म करते रहे
ब्राह्मण तथापि पूजाके योग्यहे और बडे देवता।
है ३१९ क्षत्रिय संपूर्ण वस्तु करके बडाहो परंतु
ब्राह्मणको अपने अधीन करने नही सकता क्यों
कि ब्राह्मणसे भयाहै इसलिये क्षत्रियोंको अपने

एवं यद्यपि निःश्रेष्ठ वर्त्तंते
सर्वकर्मस्तु सर्वथाः ब्राह्म
णाः पूज्याः परमं दैवतं हि
तत् ॥ १९ ॥ क्षत्रस्याति प्रवृद्ध
स्य ब्राह्मणान्प्रति सर्वशः
ब्रह्मैव संनियंतस्मात् क्ष
त्रं हि ब्रह्मसंभवम् ॥ २ ॥ अ
द्भ्योग्निः ब्रह्मतः क्षत्र मश्म
नो लोहमुत्थितम् तेषां सर्वत्र
गं तेजः स्वासुयोनिषु शा
म्यति ॥ २१ ॥ करने सकताहै ॥
अधीन ब्राह्मण
जल ब्राह्मण पत्थर इन्होंसे क्रम करके अग्नि क्षत्रि
य लोह उत्पन्नहै और इन्होंका तेज क्रमसे सर्वत्र।
दहन पराजय छेदन कार्यको करताहै परंतु अ
पने योनि अर्थात उत्पत्ति स्थानमें शांति होताहै ३२१

म० स्मृ० टी० भा० ३८५

ब्राह्मणसे रहित क्षत्रिय और क्षत्रियसे रहित ब्राह्मण ये नही बनतेहै दोनो मिले रहै तो इस लोक मे और परलोकमे बढतेहै ३२२ दंड ग्राम संपूर्ण द्रव्य ब्राह्मणको देकर और राज्यपुत्रको देकर सं

नाब्रह्म क्षत्र मृध्नोति नाक्ष
त्रं ब्रह्म वर्द्धते ब्रह्मक्षत्रं च सं
पृक्त मिह चामुत्र वर्द्धते ३२२
दत्वा धनं तु विप्रेभ्यः सर्वदं
डं समुत्थितं पुत्रे राज्यं समा
सृज्य कुर्वीत प्राणनं रणे ३२३
एवं चरन्सदा युक्तो राजधर्मे
षु पार्थिवः हितेषु चैव लो
कस्य सर्वान्भृत्यान्नियोजये
त् ३२४

ग्राममें प्राणत्याग करै ३२३ इस रीतिसे सर्वकाल मे राजधर्मको करते संते राजा लोकके हितमें सभ[illegible] भृत्योंका योग करै ३२४ ॥

संपूर्ण यह नित्य कर्म विधि राजाका कहा आगे
क्रमसे वैश्य और शूद्रके धर्मको जानो ३२५ सं
स्कारको पाके विवाह करके वैश्य पशुके रक्ष
णमें और वार्ता अर्थात् खेती आदिमें नित्यही

एषोऽखिलः कर्मविधि रुक्तो
राज्ञः सनातनः इमं कर्मवि
धिं विद्यात्क्रमशो वैश्यशू
द्रयोः २५ वैश्यस्तु कृतसं
स्कारः कृत्वादारपरिग्रहं वा
र्तायां नित्ययुक्तः स्यात्पशू
नां चैव रक्षणे २६ प्रजापति
र्हि वैश्याय सृष्ट्वा परिददे प
शून् ब्राह्मणाय च राज्ञे च स
र्वाः परिददे प्रजाः ३२७ ॥

युक्तहोवे ३२६ ब्रह्माने वैश्यको उत्पन्न करके
उसको पशु दिया और ब्राह्मण क्षत्रियको संपू
र्ण प्रजा दिया ३२७ पशु रक्षण न करैंगे ऐसी इ
च्छा वैश्य न करै खेती आदि करत संते भी पशु

रक्षण प्रवृत्त करे और जब तक वैश्य पशु रक्ष
ण करके तब तक दूसरा वर्ण पशु रक्षा न क
रे ३२८ मणि मोती मूंगा लोह सूत गंध रस
इन सभों का देशकाल समझ के न्यून अधिक

386

न च वैश्यस्य कामः स्यान्न र
क्षेयं पशूनिति वैश्ये चेच्छ
ति नान्येन रक्षितव्याः कथं
चन ३२८ मणिमुक्ताप्रवाला
नां लोहानां तान्तवस्य च गं
धानां च रसानां च विद्यादर्
घबलाबलं ३२९ बीजानामु
प्तिविच्च स्यात्क्षेत्रदोषगुण
स्य च मानयोगं च जानीया
त्तुलायोगांश्च सर्वशः ३३०

मोल को जाने ३२९ खेत का दोष और गुण बीज बो
ना प्रस्थ द्रोण आदि मानयोग मासा तोला आदि तु
लायोग इन सभों का जानने वाला होवे ३३० ॥

भांड अर्थात् पात्रका सार असार देशोंका गुण अगु
ण बेंचने योग्य वस्तुओंका लाभ अलाभ पशुओंका
बढ़ना इन सभको जाने ३३१ मजूरोंकी मजूरी म
नुष्योंकी नाना प्रकारकी भाषा द्रव्योंकी स्थितिका

सारासारं च भाडानां देशानां
च गुणागुणान् लाभालाभं
च पण्यानां पशूनां परिवर्द्धं
नं ३३१ भृत्यानां च भृतिं विद्याद्भा
षाश्च विविधा नृणाम् द्रव्याणां
स्थानयोगांश्च क्रयविक्र
यमेव च ३३२ धर्मेण च द्रव्य
वृद्धावातिष्ठेद्यत्नमुत्तमम् द
द्याच्च सर्वभूतानामन्नमेव प्र
यत्नतः ३३३

उपाय और बेंचना मोल लेना इन सभको जाने ३३२
धर्मसे द्रव्यकी वृद्धिमें उत्तम यत्न करै सभ जीवोंको
यत्न पूर्वक अन्न देवै ३३३ वेद पढ़ने वाले यशावा
ले गृहस्थ ब्राह्मण जो हैं उन्होंकी सेवा शूद्रोंको

मोक्षदेने वाला उत्तम कर्म है ३३४ पवित्रता बड़ोंकी सेवा कोमल बोलना अहंकार न करना ब्राह्मणों की नित्य आश्रय करना ये सब कर्म शूद्रोंकी उत्तम जाति देन हारे हैं ३३५ आपत्कालके अभावमें चारो वर्णका शुभकर्म विधि यहां कहा आपत्काल

विप्राणां वेद विदुषां गृहस्थानां यशस्विनाम् शुश्रूषैव तु शूद्रस्य धर्मो नैःश्रेयसः परः ३३४ शुचिरुत्कृष्ट शुश्रूषु मृदुवागनहंकृतः ब्राह्मणाद्याश्रयो नित्यमुत्कृष्टां जातिमश्नुते ३३५ एषानापदि वर्णानामुक्तः कर्मविधिः शुभः आपद्यपिहि यस्तेषां क्रमशस्तन्निबोधत ३३६ इतिश्री मानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहितायां नवमोध्यायः ॥ ९

में उन्होंके कर्मविधिको क्रमसे जानो ३३६ इति श्री मनुस्मृति भाषा टीकायां कुल्लूक भट्ट व्याख्यानुसारिण्यां श्रीबाबू देवीदयालसिंह कारितायां श्रीकम्पनी संस्कृत पाठशालीय गुलजार शर्म पंडित कृतायां नवमोध्यायः ९ ॥

अपने कर्ममें स्थित होकर ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य येती
नों वर्ण पढनेसे जानगया जो अपना कर्म इसको
करने सेते वेदको पढे और ब्राह्मण तो पढावे भी
क्षत्रिय वैश्य न पढावे कदाचित् पढावे तो वे आय

अधीयीरं स्त्रयोवर्णाः स्वकर्म
स्था द्विजातयः प्रब्रूयाद्ब्राह्म
णस्त्वेषां नेतराविति निश्चयः १
सर्वेषां ब्राह्मणो विद्याद्वृत्त्युप
यान् यथाविधिः प्रब्रूयादि
तरेभ्यश्च स्वयं चैव तथाभवे
त् २ वैशेष्यात्प्रकृति श्रैष्ठ्या
त् नियमस्य च धारणात् सं
स्कारस्य विशेषाच्च वर्णानां
ब्राह्मणः प्रभुः ३

स्थित करे १ यथाविधि सभके जीविकाके उपायको ब्रा
ह्मण जाने दूसरेको कहे और आपभी तैसा करे २ बडि
जाति बडाकारण अर्थात् उत्पत्ति स्थान नियमका धा
रण बडा संस्कार इन सभोंसे वर्णोंका प्रभु ब्राह्मण है ३

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
३८८

388

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ये तीनों वर्ण द्विजाति कहा
तेहैं और चौथा वर्ण शूद्र एक जाति कहातेहै पां
चवां वर्णही नहीं ४ सब वर्णोंमें पुरुष संभोग
से जो दूषण उ[illegible]रहित समान वर्णकी यथा
शास्त्र विवाहके प्राप्तजो स्त्री उससे क्रम करके
अर्थात् ब्राह्मणसे ब्राह्मणीमें क्षत्रियसे क्षत्रिया

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्य स्त्रयो
वर्णा द्विजातयः चतुर्थ एक
जातिस्तु शूद्रो नास्ति तु पंच॰
मः ४ सर्ववर्णेषु तुल्यासु प
त्नीष्वक्षत योनिषु आनुलो
म्येन संभूता जात्याः ज्ञेयास्त
एव ते ५ स्त्रीष्वनंतर जातासु
द्विजैरुत्पादितान् सुतान् स
दृशानेवतानाहुर्मातृदोष
विगर्हितान् ६

में जो उत्पन्नहैं सो माता पिताकी जातिवाले कहा
तेहैं ५ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यसे अनंतर जातिमें
अर्थात् ब्राह्मणसे विवाहिता क्षत्रियामें क्षत्रिय
से विवाहिता वैश्यामें वैश्यसे विवाहिता शूद्रा॰
में उत्पन्न जोहै सो सदृशहै माताके दोषसे निंदित
है ६

अनंतर जातिमें उत्पन्नोंकी यह नित्य विधि कही अब
दो एक जाति अंतर देके उत्पन्नोंकी विधि आगे कहेंगे
उसको जानो ७ ब्राह्मणसे विवाहिता वैश्यामें अम्ब
ष्ट जातिवाला होताहै और ब्राह्मणसे विवाहिता शू

अनंतरासुजातानां विधिरेष
सनातनः द्वेकान्तरासुजा-
तानां धर्म्य विद्यादिमं विधि
म ७ ब्राह्मणाद्वैश्य कन्यायां
मम्बष्ठो नाम जायेत निषादः
शूद्र कन्यायां यः पाशव उच्य
ते ८ क्षत्रियाच्छूद्रकन्याया
क्रूराचार विहारवान् क्षत्र शू
द्र वपुर्जन्तु रुग्रोनाम प्रजाय
ते ९ ॥

द्रकी कन्यामें निषाद जातिवाला होताहै उसको पार
शव भी कहतेहै ८ क्षत्रियसे विवाहिता शूद्र कन्यामें
क्रूर आचार विचार वाला क्षत्रिय शूद्रकी शरीर वाला
उग्रनामकी जातिवाला होताहै ९ ब्राह्मणसे क्षत्रिया

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
१२३

389

आदि तीनवर्णकी स्त्रीमें क्षत्रियसे वैश्य आदिदो
वर्णकी स्त्रीमें वैश्य शूद्रवर्णकी स्त्रीमें जो उत्पन्न
होतेहैं ये छः अपसद अर्थात् निकृष्ट कहातेहैं १०
अनुलोम कहके अब प्रतिलोम कहतेहैं क्षत्रिय
से ब्राह्मणी कन्यामें सूत जातिवाला होताहै वै

विप्रस्य त्रिषु वर्णेषु नृपते व
र्णयो र्द्वयोः वैश्यस्य वर्णे चै
कस्मिन् षडेतेऽपसदाः स्मृताः १०
क्षत्रियाद्विप्रकन्यायां सूतो
भवति जातितः वैश्यान्माग
दवैदेहौ राजविप्रांगनासुतौ
शूद्रादायोगवः क्षत्ता चांडा
लश्च नराधमान् वैश्यराज॰
न्यविप्रासु जायंते वर्णसंक
राः ११

श्यसे क्षत्रिया कन्यामें मागध और ब्राह्मणी कन्या
में वैदेह जातिवाले होताहै ११ शूद्रसे वैश्य क्षत्रि
य ब्राह्मणकी कन्यामें क्रमसे आयोगव क्षत्ता म
नुष्योंमें अधम चांडाल जातिवाले होतेहैं १२ ॥

जैसा एक जाति अंतर वाले अनुलोममें अम्बष्ठ और उ-
ग्र है तैसा प्रतिलोममें क्षत्ता और वैदेह कहे है १३ द्विजा-
तिसे अंतर वर्णकी स्त्रीमें क्रमसे उत्पन्न जो लडके का-
हे है वे सब माताकी दोषसे अनंतर नामवाले कहा

एकांतरे त्वानुलोम्या दंबोष्ठो-
ग्रौ यथा स्मृतौ क्षत्रवैदेहकौ
तद्वत्प्राति लोम्येपि जन्मनि १३
पुत्रा ये नंतर स्त्रीजा क्रमेणो-
क्ता द्विजन्मनां ताननंतरना-
म्नस्तु मातृदोषा त्प्रचक्षते १४
ब्राह्मणा दुग्रकन्याया मावृ-
तो नाम जायते आभीरोंब-
ष्ठ कन्याया मायोगव्यां तु
धिग्वणः १५

ते है १४ ब्राह्मणसे उग्र अम्बष्ठ आयोगव इन तीनोंका
कन्यामें क्रमसें आवृत आभीर धिग्वण जाति वाले
होती हैं १५ आयोगव क्षत्ता चांडाल ये तीनों पुत्र का-
र्यमें समर्थ नहीं है १६ मागध वैदेह सूत ये भी तीनों

निषादमें शूद्रसे कुक्कुट जातिवाले होते हैं ॥ २॥

म॰ स्मृ॰ टी॰ भा॰ ३१

390

पुत्रकार्यमें समर्थ नहीं है, १७ निषादसे शूद्रमें पु
क्कस जातिवाली होती है १८ क्षत्ता से उग्रकी कन्या

आयोगवश्च क्षत्ता च चांडाल
श्चाधमो नृणां प्रातिलोम्येन
जायंते शूद्रादपसदास्त्रयः
१६ जातो निषादाच्छूद्रायां
जात्या भवति पुक्कसः शूद्रा
ज्जातो निषाद्यां तु स वै कुक्कु
टकः स्मृतः १७ क्षत्तुर्जात
स्तथोग्रायां श्वपाक इति की
र्त्यते वैदेहकेन त्वम्बष्ठ्यामु
त्पन्नो वेण उच्यते १८ वैश्यान्
मागध वैदेहौ क्षत्रियात्सूत
एव तु प्रतीपमेते जायंते शू
द्रादपसदास्त्रयः १९ ॥

में श्वपाक जातिवाले होते हैं वैदेहकसे अम्बष्ट
जातिकी कन्यामें वेण जातिवाले होते हैं १९ ॥

द्विजातिसे समान वर्णवाली स्त्रीमें उत्पन्न जो भ-
ये और वह यज्ञोपवीत संस्कारसे हीन रूप तो
व्रात्य कहातेहै २० व्रात्य ब्राह्मणसे ब्राह्मणीमें
जो उत्पन्नभया सो पापात्मा भूर्जकण्टक जाति

द्विजातयः सवर्णासु जनये
न्त्यव्रतांस्तु यान् तान्सावित्री
परिभ्रष्टान्व्रात्यानिति विनि
र्दिशेत् २० व्रात्यात्तु जायेत
विप्रात्पापात्मा भूर्जकंठकः
आवंत्यवाटधानौ च पुष्पधः
शैख एव च २१ झल्लो मल्लश्च
राजन्याद्व्रात्यान्निच्छिविरेव
च नटश्च करणश्चैव खसो
द्रविड एव च २२ ॥

वाला कहाताहै इसीको देशभेद करके आवंत्य
वाटधान पुष्पध शैख कहातीहैं २१ व्रात्य क्ष-
त्रियसे क्षत्रिय वर्णकी स्त्रीमें झल्लजाति वाले
होतेहैं इसका नाम झल्ल मल्ल निच्छिवि नटक

म॰
स्मृ॰टी॰
भा॰
३९२

391

रण एवम द्रविडहै २२ व्रात्य वैश्यसे वैश्यवर्णकी स्त्रीमें सुधन्वाचार्य जाननेवाले होतेहैं इनके कारुष विजन्मा मैत्र सात्वत जाति कहतेहैं २३ हमरे वर्णकी पुरुषसे दूसरे वर्णकी स्त्रीमें संभोग विवाह करनेके योग्य जो नही उसके सा॰

वैश्यात्तु जायते व्रात्यात्सुधन्वाचार्य एव च कारुषश्च विजन्मा च मैत्रः सात्वत एव च व्यभिचारेण वर्णाना मवेद्यावेदनेन च स्वकर्मणां च त्यागेन जायते वर्णसंकरः २४ संकीर्णयोनयो ये तु प्रति॰ लोमानुलोमजाः अन्योन्यव्यतिषक्ताश्च तान्प्रवक्ष्याम्यशेषतः २५

थ विवाह अपने कर्मोका त्याग इन सभोंकरके वर्णसंकर उत्पन्न होतेहैं २४ अनुलोम प्रतिलोम करके परस्पर संबंधसे जो संकीर्णयोनि उसको मैं कहूंगा २५ ॥

अथोत

सूत वैदेहक चांडाल मागध क्षत्ता आयोगव २६
ये सभ अपने जातिकी स्त्रीमें अपने वर्णको उत्प
न्न करतेहैं यहां सादृश्य मातृजातिकी अपेक्षा
करके जानना क्यों कि चारोंवर्णोंकी स्त्रीमें पितासे
अधिक निंदित पुत्र होतेहैं यह बात आगे कहेंगे
पिता अधिक निंदित अपने जातिकी स्त्रीमें भी उ
त्पन्न करते हैं इतना प्रयोजन रहा इसीका विधान
इस श्लोकसे किया गया जैसे शूद्रसे वैश्यकी स्त्री
में उत्पन्न आयोगव कहाताहै उससे शुद्ध आयोग

सूतो वैदेहकश्चैव चांडाल
श्च नराधमः मागधः क्षत्त
जातिश्च तथायोगव एव च
२६ एते षट् सदृशान् वर्णा
न् जनयंति स्वयोनिषु मा
तृजात्यां प्रसूयंते प्रवरासु
च योनिषु २७ ॥

वी वैश्या ब्राह्मणी क्षत्रिया शूद्रा इन्होंमें जो उत्प
न्न होगा सो आयोगव कहाताहै परंतु शूद्रो आयो
गवसे ये सभ आयोगव उपजेहैं इसमें दृष्टांत देते
हैं कि जैसे स्त्री पुरुषमें एकने ब्रह्महत्या किया
उससे पुत्र उत्पन्न भया उसकी अपेक्षा करके ब्रह्म
हत्यारे स्त्री पुरुष दोनोंहैं उनसे जो उत्पन्न होगा
सो अधिक दुष्ट होगा २७ जिस प्रकारसे ब्राह्मण
से क्षत्रिया वैश्यामें द्विज उत्पन्न होताहै और ब्रा

ह्मणीमें भी द्विज उत्पन्न होतीहै द्विजोंसे अच्छा क
होताहै तिसी प्रकारसे शूद्रसे ब्राह्मणी क्षत्रिया
वैश्या में उत्पन्न पुत्रकी अपेक्षा करके वैश्यसे क्ष
त्रियामें क्षत्रियसे ब्राह्मणीमें उत्पन्न पुत्र अच्छे क
हातेहै ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यसे उत्पन्न प्रतिलोम
प्रशस्तहै यह जनानेके लिये यह श्लोक है २८
आयोगव आदिक परस्पर जातिवाली स्त्रीमें प्र॰

यथा त्रयाणां वर्णानां द्वयो
रात्मास्य जायते आनंतर्या॰
त्स्वयोन्यां तु तथा बाह्येष्वपि
क्रमात् २८ ते चापि बाह्यान्सु
बहून्स्ततोप्यधिकदूषितान्
परस्परस्य दारेषु जनयंति
विगर्हितान् २९ ॥

तिलोम करके भी अधिक दुष्ट पुत्रको उत्पन्न
करतेहैं जैसे आयोगव क्षत्ताकी स्त्रीमें अपने
से हीन पुत्रको उत्पन्न करताहै और क्षत्ता भी
आयोगवकी स्त्रीमें अपनेसे हीन पुत्रको उत्प
न्न करताहै इसी रीतिसे और भी प्रतिलोमोंमें
जानना २९ ॥

जिस प्रकारसे शूद्र ब्राह्मणीमें चांडालको उत्प
न्न करता है तिसी प्रकारसे चांडाल चारो वर्णों
की स्त्रीमें अपनेसे भी हीनको उत्पन्न करता है
तुं शूद्रसे उत्पन्न ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यकी भार्या
में तीन प्रतिलोमज अर्थात् आयोगव क्षत्ता चां
डाल ये चारो वर्णकी स्त्रीमें और अपनी जातिकी
स्त्रीमें अपनेसे हीन तीन पांच पंद्रह पुत्रको उत्प
न्न करते है और अनुलोमजसे हीन वैश्य क्षत्रि

यथैव शूद्रो ब्राह्मण्यां बा
ह्यं जन्तुं प्रसूयते तथा बाह्य
तरं बाह्यश्चातुर्वर्ण्ये प्रसूय
ते तुं प्रतिकूलं वर्तमाना
बाह्या बाह्यतरान् पुनः ही
ना हीनान् प्रसूयन्ते वर्णान्
पंचदशैव तु ३१ ॥

यसे उत्पन्न मागध वैदेहक सूतये तीनो चारों वर्ण
की स्त्रीमें और अपनी जातिकी स्त्रीमें अपनेसे नि
हीन तीन पांच पंद्रह पुत्रको उत्पन्न करते है इस
रीतिसे तीस पुत्र भये अथवा चांडाल क्षत्ता आयो
गव वैदेहिक मागध सूतये छ पूर्व पूर्वसे उत्तर
उत्तर अधिक है यही छवो प्रतिलोम करके पुत्रको
उत्पन्न करै तो पंद्रह पुत्र होते है जैसे चांडालसे
पांचोकी स्त्रीमें पांच उत्पन्न भया क्षत्तासे चारोंव
र्णोकी स्त्रीमें चार उत्पन्न भए आयोगवसे तीनों
की स्त्रीमें तीन उत्पन्न भए वैदेहकसे दोकी स्त्री

मेदो उत्पन्न भए मागधसे एककी स्त्रीमें एक उत्पन्न भया सूतसे आगे कोईहै नही इसलिये सूतसे प्रतिलोमज कोई उत्पन्न होता नही इस रीतिसे पंद्रह पुत्र भए श्लोकमें पुनः यह पदका उच्चारण भृगुजीने किया उसका तात्पर्य यहहै सूत मागध वैदेहक आयोगव क्षत्ता चांडाल ये छः उत्तरसे पूर्व पूर्व श्रेष्ठहैं ये वै प्रतिलोमकी नाईं पुत्र उत्पन्न करै तो पंद्रह पुत्र होतेहैं जैसे सूतसे पांचोंकी स्त्रीमें पांच भए मागधसे चारोंकी स्त्रीमें चारउप वैदेह-

प्रसाधनोपचारज्ञ मदासं दास जीविनं सैरिंध्रमा गुरावृतिं सूते दस्यु रयोगवे ३२

कसे तीनोंकी स्त्रीमें तीनउप आयोगवसे दोकी स्त्रीमें दो भए क्षत्तासे एककी स्त्रीमें एक उपजा चांडालसे हीन नहीहै इसलिये उससे प्रतिलोम होता हीन इस रीतिसे पंद्रह हुए दोनो मिलके तीस भए ३१ केश रचना आदि प्रसाधन कर्मके उपचारको जाननेवाला दास कर्मसे उच्छिष्टादि भक्षणहै उससे रहित अंग सम्वाहन आदि दास कर्मसे जीने वाला और पाश बंधन करके मृग आदिके वधसे जीनेवाला सैरिंध्र नाम पुत्रको आयोगवकी स्त्रीमें दस्यु जिसका लक्षण आगे पैंतालीसवें श्लोकमें कहेंगे सो उत्पन्न करताहै ३२॥

आयोगवकी स्त्रीमें वैदेहकसे मधुर भाषण कर
ने वाला मैत्रेय नाम पुत्र होताहै जो प्रातःकाल
में घंट बजाके जीविकाके लिये राजा आदिकी
स्तुति करताहै ३३ आयोगवकी स्त्रीमें निषाद॰
से नौका कर्मसे जीनेवाला दाश नाम पुत्र और

मैत्रेयकं तु वैदेहो मागधं
सं प्रसूयते नॄन्प्रशंसत्यज
स्रं यो घंटाताडोरुणोदये ३३
निषादो मार्गवं सूते दाशं
नौकर्मजीविनं कैवर्तमि
ति यं प्राहुरार्यावर्तनिवा
सिनः ३४ मृतवस्त्रभृत्स्वना
र्यासु गर्हितान्नाशनासु च
भवन्त्यायोगवीष्वेते जाति
हीनाः पृथक् त्रयः ३५ ॥

मार्गव नाम पुत्र होताहै जिसको आर्यावर्तके
रहने वाले कैवर्त कहतेहैं ३४ सैरिंध्र मैत्रेय मा
र्गव ये तीनों मुरदोंके वस्त्रको पहिरने वाली ॰
क्रूरस्व भाववाली उच्छिष्ट भोजन करने वाली
जो आयोगवकी स्त्रीहै उसमें पिताके भेदसे ॰

म०
स्मृ० टी०
भा०
१२४

394

भिन्न भिन्न होते हैं ३४ वैदेकहके स्त्रीमें निषाद
से चर्मछेद करनेवाला कारावर नाम पुत्र उ०
त्पन्न होताहै वैदेहकसे कारावरकी स्त्रीमें अ
ध्र जाति वाला पुत्र और निषादकी स्त्रीमें मेद०
जातिवाला पुत्र होताहै ये दोनों ग्रामके बाह
र रहने वाले होतेहैं ३६ वैदेहककी स्त्रीमें चां

कारावरो निषादात्तु चर्मका
रः प्रसूयते वैदेहकादंध्रमे
दौ बहिर्ग्रामप्रतिश्रयौ ३६
चांडालात्पांडुसोपाकस्त्व०
क्सारव्यवहारवान् आहिंडि
को निषादेन वैदेह्यामेव जा
यते ३७ चांडालेन तु सोपा०
को मूलव्यसनवृत्तिमान्
पुक्कस्यां जायते पापः सदा
सज्जनगर्हितः ३८ ॥

डालके बांसके व्यवहारसे जीनेवाला पांडुसोपाक
जातिवाला पुत्र होताहै और उसी स्त्रीमें निषादसे
आहिंडिक जातिवाला पुत्र होताहै ३७ पुक्कसकी
स्त्रीमें चांडालसे राजाकी आज्ञासे वधयोग्य मनु०
ष्योंका वधकरनेवाला और उसी कर्मसे जीनेवा
ला पापी सबकालमें साधुलोगोंसे निंदाके प्रा
प्त सोपाक जातिवाला पुत्र होताहै ३८ ॥

निषादकी स्त्रीमें चांडालसे श्मशानमें रहने वाला
सभसे प्रति निंदित अंत्यावसायी जातिवाला उ०
त्पन्न होताहै ४९ वर्णसंकरमें माता पिता
से इतनी जाति दिखाया प्रकटहो अथवा अप्रक
टहो परंतु अपने कर्मोंसे जानने योग्य होतेहै
४० ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंसे अपनी अपनी जाति

निषादस्त्रीतु चांडालात्पु
त्रमंत्यावसायिनम् श्मशा
नगोचरं सूते बाह्यानामपि
गर्हितं ४९ संकरे जातयस्त्वे
ताः पितृमातृप्रदर्शिताः
प्रच्छन्ना वा प्रकाशा वा वेदि
तव्याः स्वकर्मभिः ४० सजा
तिजानंतरजाः षट्सुता द्वि
जधर्मिणः शूद्राणां तु सध
र्माणः सर्वेपध्वंसजाः स्मृताः
४१

की स्त्रीमें पुत्र उत्पन्न और अनुलोम करके उत्प
न्न पुत्र ये तीनो द्विज कहातीहै अर्थात् ब्राह्मण
से क्षत्रिया वैश्या शूद्रामें वैश्यसे शूद्रामें ये छ पु
त्र द्विजके धर्मवाले कहातेहैं अर्थात् उपनयन
के योग्य होतेहै और जो अपध्वंसजहै अर्थात् द्वि
जातिसे प्रतिलोम करके उत्पन्नहै सो सब शूद्रके

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
३९५

395

धर्मवाले कहातेहैं ४१ तप और वीर्य इन्होंके प्र
भाव करके सजातिमे उत्पन्न और अनंतर जाति
मे उत्पन्न मनुष्य संसार संबंधी युग युगमे जन्म
से ऊंच नीच होतेहैं तपके प्रभावसे विश्वामित्र
के नाईं जीवके प्रभावसे ऋष्य शृंगकी नाईं ४२
आगे जो कहेंगे क्षत्रिय जातिसो सब यज्ञोप॰

तपो बीजप्रभावैस्तु ते गच्छ
ति युगे युगे उत्कर्षं चापक
र्षं च मनुष्येष्विह जन्मतः ४२
शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः
क्षत्रिय जातयः वृषलत्वं
गता लोके ब्राह्मणा दर्शनेन
च ४३ पौण्ड्रका औड्र द्रवि
डाः काम्बोजाः यवनाः शकाः
पारदाः पह्लवाः चीनाः कि
राताः दरदाः खशाः ४४

वीत आदि क्रियाके लोपसे यज्ञ कराना पढा
ना प्रायश्चित्त आदि जो अर्थ उसके विना देखे
नेसे धीरे धीरे लोकमे शूद्रभावके प्राप्तहुए
४३ पौंड्रक औड्र द्रविड काम्बोज यवन शक
पारद पाल्हव चीन किरात दरद खश इन देशों
में उत्पन्न क्षत्रिय क्रिया आदिके लोपसे शूद्रभा ४४
वके प्राप्तहुए

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनको क्रियालोपा आ
दिसे जितनी जाति भई म्लेच्छ भाषा करके युक्त अ
थवा श्रेष्ठ भाषा करके युक्त ये सभ जाति दस्यु
कहाते हैं ४५ द्विजोंसे अनुलोम करके उत्पन्न छे
अपसद दर्शाई श्लोकमें ये कह आये हैं और अपध्वं

मुखबाहूरुपज्जानां यालोके
जातयो बहिः म्लेच्छवाचः
चार्यवाचः सर्वेते दस्यवः स्मृ
ताः ४६ सूतानामश्वसारथ्य
मम्बष्ठानां चिकित्सितं वैदेह
कानां स्त्रीकार्यं मागधानां
वणिक्पथः ४७ मत्स्यघातो
निषादानां त्वष्टिस्त्वायोगव
स्यच मेदांध्रचुंचुमद्गूनामार
ण्यपशुहिंसनम् ४८ ॥

सन अर्थात् प्रतिलोमसे उत्पन्नये सभ द्विजोंके निं
दित कर्मसे जीवे ४६ सूत अम्बष्ठ वैदेहक माग
ध इन्हों का क्रमसें घोड़ा का सारथीपना वैदई स्त्रि
यों का कार्य अर्थात् अन्तःपुर रक्षण बनियों का
कर्म जीविका है ४७ निषादका मछली मारना

म० स्मृ० टी० भा० १४६

396

आयोगवको काठ काटना मेद अंध्र चञ्चु मद्गु इ
न्होंका वनके पशुको मारना जीविका है वेदेह
ककी स्त्रीमें ब्राह्मणसे उत्पन्न चञ्चु कहाता है
और इसीसे वेदेहीकी स्त्रीमें उत्पन्न मद्गु कहाता है
क्षत्ता उग्र पुक्कस इन्होंका बिलमें रहने वाली

ये द्विजानामपसदा ये चाप
ध्वंसजाः स्मृताः ते निन्दितैर्व
र्तयेयुर्द्विजानामेव कर्मभिः
४६। क्षत्त्रुग्रपुक्कसानां तु
बिलौकोवधबंधनं धिग्व
णानां चर्मकार्यं वेणानां भा
ण्डवादनम् ४९ चैत्यद्रुमश्म
शानेषु शैलेषूपवनेषु च व
सेयुरेते विज्ञाना वर्तयन्तः
स्वकर्मभिः ५० ॥

गोह आदिका वध और बंधन धिग्वणका चर्मका
र्य्य वेणका कांस्य आदि मृदंग आदि वाद्य भांड वाद
न जीविका है ४९ ग्राम आदिके समीपमें चैत्यद्रु
म अर्थात प्रसिद्ध वृक्षके मूलमें और श्मशान प
र्वत वन इन्होंके समीपमें ये सब प्रकट अपने क
र्मोंसे जीवने करते रहें ५०

चांडाल श्वपच ये दोनों ग्रामके बाहर निवास करें
पात्रसे रहित रहें इन्होंका धन कुत्ता गदहा है ॥
मुरदोंके वस्त्रको पहिरे फूटे पात्रमें भोजन करें
लोहेका गहना पहिरे नित्यही डोलते रहें ॥

चांडाल श्वपचानां तु बहिर्ग्रा
मात्प्रतिश्रयः अपपात्राश्च
कर्तव्या धनमेषां श्वगर्दभम्
॥ वासांसि मृतचेलानि भि-
न्नभांडेषु भोजनं कार्ष्णायस
मलंकारः परिव्रज्या च नित्य
शः ॥ न तैः समयमन्विच्छे
त्पुरुषो धर्ममाचरन् व्यवहा
रो मिथस्तेषां विवाहः सदृ-
शैः सह ॥

धर्मका आचरण करनसंते इन्होंके साथ दर्शन
आदि व्यवहारको न करे इन्होंका विवाह आपस
में होता है और व्यवहारभी आपसे में करें ॥ इ
न्होंका पराधीन है फूटे पात्रमें अन्न देना रात्रिका

म॰ स्मृ॰ टी॰ भा॰ ३ ५७

ग्राम नगर आदिमें फिरने न पावै ५४ राजाकी
आज्ञासे चिह्नयुक्त कार्यके लिये दिनमें डोलैं
बांधव रहित मुरदा को ले जावै ऐसी शास्त्रकी

अन्नमेषां पराधीनं देयं स्या
द्भिन्न भाजने रात्रौ न विचरेयु
स्ते ग्रामेषु नगरेषु च ५४ दि
वा चरेयुः कार्यार्थं चिह्नि
ता राज शासनै अबांधवं श
वं चैव निर्हरेयु रिति स्थितिः
५५ वध्यांश्च हन्युः सततं य
थाशास्त्रं नृपाज्ञया वध्यवा
सांसि गृह्णीयुः शय्याश्चाभर
णानि च ५६ ॥

मर्यादा है ५५ राजाकी आज्ञासे यथाशास्त्र व
धके योग्य पुरुषोंका वध करै वधके योग्य पुरु
षोंका वस्त्र शय्या आभरण लेवै ५६ ॥

निकाम योनिसे उत्पन्न वर्णसे रहितबेजान भेले पुरुषका भेस बनाये हो और भला पुरुष न हो तो उसके कर्मसे उसकी जातिको जानै ५७ अश्रेष्ठता निष्ठुरता क्रूरता क्रिया राहित्य इ०

वर्णापेतमविज्ञातं नरं कलु
षयोनिजम् आर्यरूपमि
वानार्यं कर्मभिः स्वैर्विभावा
येत् ५७ अनार्यता निष्ठुरता
निष्क्रियात्मता क्रूरता पुरु
षं व्यञ्जयन्तीह लोके कलुष
योनिजम् ५८ पित्र्यं वा भज
ते शीलं मातुर्वोभयमेव वा
न कथंचन दुर्योनिः प्रकृ
तिं स्वां नियच्छति ५९ ।

ऐसे लोकमें निकाम योनिसे उत्पन्न पुरुष जाना जाता है ५८ माताके स्वभाव अथवा पिताके स्वभाव किम्वा दोनोंके स्वभावको पुरुष ग्रहण करता है निकाम योनिवाला किसी प्रकारसे

म॰
स्व॰टी॰
भा॰
३५८

अपने स्वभावको नही छोडता ४८ अच्छे कुलमें उत्पन्नहै और योनि संकरहै परंतु थोडा अथवा बहुत पिताके स्वभावको ग्रहण करताहै ५९ ब्राह्मण गौ स्त्री बालक इनोंके लि

कुले मुख्येऽपि जातस्य यस्य स्याद्योनि संकरः संश्रयेत्येव तच्छीलं नरोल्पमथवा बहुः ५९ यत्र त्वेते परिध्वंसा जायंते वर्ण दूषकाः राष्ट्रिकैः सह तद्राष्ट्रं क्षिप्रमेव विनश्यति ६१ ब्राह्मणार्थे गवार्थे वा देहत्यागो नुपस्कृतः स्त्री बालाभ्युपपत्तौच बाह्यानां सिद्धिकारणम् ६२

ये देखने दिखनेमें जो प्रयोजन आवे उससे रहित देह त्याग करे तो बाह्य अर्थात वर्णसे रहित जो यसमहै इन्होंको सिद्धि अर्थात स्वर्ग प्राप्ति होतीहै ६२

अहिंसा सत्य अचोरी शौच इंद्रियोंका रोकना ये
सभ धर्म संक्षेप करके चारो वर्णकी मनुजीने
कहा ६३ शूद्रामे ब्राह्मणसे उत्पन्न कन्याहो सो
पारशवी कहातीहै उसका विवाह ब्राह्मण करै
और कन्या उत्पन्नहो उसका विवाह ब्राह्मण करै
और कन्या उत्पन्नहो इस रीतिसे कन्या उत्पन्न हो
ती आवै उस कन्याका विवाह ब्राह्मण करता । और १

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिं
द्रियनिग्रहः एतं सामासिकं
धर्मं चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनुः ६३
शूद्रायां ब्राह्मणाज्जातः श्रेय
सा चेत्प्रजायते अश्रेयान् श्रे॰
यसीं जातिं गच्छत्या सप्तमा
द्युगात् ६४ शूद्रो ब्राह्मणता
मेति ब्राह्मणश्चैव शूद्रताम्
क्षत्रियाज्जातमेवं तु विद्या॰
द्वैश्यात्तथैव च ६५ ॥

आवे तो छटई कन्या बीजके प्रधानतासे ब्राह्म॰
ण जातिको उत्पन्न करती है ६४ शूद्र ब्राह्मण भा
वको प्राप्त होताहै और ब्राह्मण शूद्र भावको प्रा
प्त होताहै इसी रीतिसे क्षत्रियसे और वैश्यसे उत्प
न्नको जानना जैसे शूद्रामे ब्राह्मणसे उत्पन्न पार
शव होताहै वह शूद्राका विवाह करै उससे पुत्र
उत्पन्नहो वह भी शूद्राका विवाह करै उससे भी

म॰
स्म॰टी॰
भा॰
३५५

बीजके प्रधान
तासे क्षत्रिय
को उत्पन्न क
रती है श्रौर
पुत्र चौथे पु
रुषमें ५

पुत्र उत्पन्न हो इसी रीतिसे पुत्र उत्पन्न होता श्रावे ।
श्रौर शूद्रका विवाह करता श्रावे तो छटवां पुत्र
योनिक निचाईसे शूद्र जातिको उत्पन्न करताहै
इस रीतिसे शूद्रामें क्षत्रियसे उत्पन्न कन्या चौथे
पुरुषमें योनिकी निचाईसे शूद्रको उत्पन्न कर॰
ताहै वैश्यसे शूद्रामें उत्पन्न कन्या दूसरे पुरुषमें
बीजके प्रधानतासे वैश्यको उत्पन्न करतीहै ते
र पुत्र दूसरे पुरुषमें योनिकी निचाईसे शूद्र॰
को उत्पन्न करताहै इसी रीतिसे ब्राह्मणसे वैश्या

श्रनार्यायां समुत्पन्नो ब्राह्म॰
णात्तु यहच्छया ब्राह्मण्या म
प्यनार्यात श्रेयस्त्वं केति चे
द्भवेत ६६ ॥

में उत्पन्न पंचयें पुरुषमें बड़ाई छोटाईको पा
ताहै श्रौर ब्राह्मणसे क्षत्रियामें उत्पन्न तीसरे पु
रुषमें बड़ाई छोटाईको पाताहै क्षत्रियसे वै॰
श्यामें उत्पन्न तीसरे पुरुषमें बड़ाई छोटाईको
पाताहै ६५ नीच जातिमें श्रर्थात शूद्रामें ब्रा॰
ह्मणसे उत्पन्न भया श्रौर ब्राह्मणीमें नीचजाति
से श्रर्थात शूद्रसे उत्पन्न भया इन दोनोंमें बड़ा
कौनहै इसका उत्तर श्रागेके श्लोकमें देते हैं ६६

ऊंच बीजसे नीच योनिमें अर्थात् ब्राह्मणसे शू॰
द्रामें उत्पन्न पाक यज्ञ आदि गुणोंसे युक्त होवे व
ह बडा है और नीच बीजसे ऊंच योनिमें अर्था
त् शूद्रसे ब्राह्मणीमें उत्पन्न बडा नहीं है यह॰
निश्चय है ६७ दोनो संस्कारके योग्य नहीं है य

जातोनार्यामनार्यायामार्या
दार्यो भवेद्गुणैः जातोप्यना
र्यादार्यायामनार्य इति नि
श्चयः ६७ तावुभावप्यसंस्का
र्याविति धर्मो व्यवस्थितः वै
गुण्यं जन्मनः पूर्व उत्तरः प्र
तिलोमतः ६८ सुबीजं चैव
सुक्षेत्रं जातं संपद्यते यथा
तथार्याज्जात आर्यायां सर्वं
संस्कारमर्हति ६९ ॥

ह सिद्धान्त है क्यों कि पहिला नीच जातिमें उत्पन्न है
और दूसरा प्रतिलोमसे है ६८ जिस रीतिसे अच्छा बी॰
ज अच्छे खेतमें पडे तो अच्छा सस्य उत्पन्न होता॰
है इसी रीतिसे श्रेष्ठसे श्रेष्ठ स्त्रीमें उत्पन्न सर्व संस्का
रोंसे योग्य होता है ६९ कोई पंडित बीजको अच्छा

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
ध॰

400

कहतेहै कोई पंडित क्षेत्रको श्रेष्ठ कहतेहै को
ई पंडित दोनोंकी प्रशंसा करतेहै तहां आगे
जो व्यवस्था कहेंगे सो जानना ७० ऊसर बीज
पड़ासो नष्टहोजाताहै ऐराहके आमनही हो
ता और श्रेष्ठ खेतमें बीजसे रहितहै तो केव
ल स्थंडिलहै उसमें अन्न उत्पन्न नही होता इस
लिये दोनोंकी निंदासे श्रेष्ठ बीज श्रेष्ठ खेतमें

बीजमेके प्रशंसंति क्षेत्रमन्ये
मनीषिणः बीजक्षेत्रे तथैवा
न्ये तत्रेयं तु व्यवस्थितिः ७०
अक्षेत्रे बीजमुत्सृष्टमंतरैव
विनश्यति अबीजकमपि क्षे
त्रं केवलं स्थंडिलं भवेत् ७१
यस्माद्बीजप्रभावेन तिर्यग्जा
ऋषयो भवन् पूजिताश्च प्र
शस्ताश्च तस्माद्बीजं प्रशस्य
ते ७२ ॥

पड़े तो श्रेष्ठ अन्न उत्पन्न होवे यह
पूर्व कहि आईहै सोई समतेहै कि दोनोंको प्रधा
नताहै ७१ जिसकारणसे बीजके प्रभाव करके
तिर्यक योनिमें अर्थात् हरिणीमें उत्पन्न ऋषि
शृंग आदि ऋषि होतेभये पूजित और प्रशस्त
हुए इसलिये बीज प्रशस्तहै अर्थात् बीज और
योनिके मध्यमें बीजकरके उत्कृष्ट जाति प्रधा
नहै इस बातपर जानना ७२ ॥

नीचहै ऊंचका कर्म करताहै और ऊंचहै नीचक
र्म करताहै इन दोनोंको विचार करके ब्रह्माने
कहा कि न समहै और न असमहै क्यों कि द्विजा
तिका कर्म करने वाला शूद्र द्विजाति समनही
होता इसी अर्थात् द्विजाति कर्मका अनधिका
री द्विजाति कर्म करने वाला भी हो तो द्विजाति

अनार्य मार्य कर्माणा मार्य
ञ्चा नार्य कर्मणं संप्रधार्या
ब्रवीद्धाता न समौ ना समौ
विति ७३ ब्राह्मणा ब्रह्मयोनि
स्था ये स्वकर्मण्यवस्थिताः
ते सम्यगुपजीवेयुः षट्क
र्माणि यथाक्रमम् ७४ अध्या
पन मध्ययनं यजनं याज
नं तथा दानं प्रतिग्रहश्चैव
षट्कर्माण्यग्रजन्मनः ७५

समनही होता इसी रीतिसे शूद्रका कर्म करने
वाला द्विजाति शूद्र समनहीहै निषिद्ध कर्म क
रनेसे जातिकी बडाई नही गईहै और असमभी
नहीहै निषिद्ध कर्म करनेसे दोनोंको समता
है इसलिये जिसको जो कर्म निंदितहै सो उस
कर्मको न करै यह वर्णसंकर पर्यंतको धर्मोपदे

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
अ॰ १

है ७३ जो ब्राह्मण ब्रह्मज्ञानमें युक्त हो अपने
कर्ममें रत हो सो क्रमसे छः कर्म करके जीवन
करै ७४ पढना पढाना यज्ञ करना यज्ञ कराना
दान देना प्रतिग्रह करना ये छः कर्म ब्राह्मण
कौं [illegible] करै ७५ इन छः कर्मोंमें तीन कर्म प्र॰

षण्णां तु कर्मणामस्य त्रीणि
कर्माणि जीविका याजना
ध्यापने चैव विशुद्धाच्च प्रति
ग्रहः ७६ त्रयो धर्मा निवर्तंते
ब्राह्मणात्क्षत्रियं प्रति अध्या
पने याजने च तृतीयश्च प्र॰
तिग्रहः ७७ वैश्यं प्रति तथैवै
ते निवर्तेरन्निति स्थितिः न॰
तौ प्रति हि तान्धर्मान्मनुरा
ह प्रजापतिः ७८ ॥

र्थात् पढाना यज्ञ कराना विशुद्ध पुरुषसे प्रति
ग्रह करना जीविकाके लियेहै ब्राह्मणकी जी
विकाके लिये जो तीन कर्महै सो क्षत्रियको न
हीहै ७७ वैश्यको भी क्षत्रियकी नाई जानना
यह प्रजापति मनुजीने कहा ७८ ॥

शस्त्र और अस्त्र अर्थात् मंत्र पढ़के जो चलाया ।
जाय इन दोनोंको धारण करना यह कर्म है
सो क्षत्रियकोहै और बनियां पना खेती करना
पशु पालना यह कर्म वैश्यकोहै और पढ़ना
दान देना यज्ञ करना यह धर्म दोनोंकाहै ७९

शस्त्रास्त्रभृत्त्वं क्षत्रस्य वणि-
क्पशुकृषिर्विशः आजीव-
नार्थं धर्मस्तु दानमध्ययनं
यजिः ७९ वेदाभ्यासो ब्राह्म-
णस्य क्षत्रियस्य च रक्षणम्
वार्ता कर्मैव वैश्यस्य विशि-
ष्टानि स्वकर्मसु ८० अजीवं-
स्तु यथोक्तेन ब्राह्मणः स्वेन
कर्मणा जीवेत्क्षत्रियधर्मे-
ण सह्यस्य प्रत्यनन्तरः ८१ ।

अपने कर्मोंमें एक एक श्रेष्ठ कर्म तीनोंकोहै ।
ब्राह्मणको पढ़ना क्षत्रियको रक्षा करना वैश्य
वार्ता अर्थात् बनियां पना पशु पालन ८० अप-
ने कर्मसे ब्राह्मणजीने न सकें तो क्षत्रियके क-
र्मसे जीवे क्योंकि क्षत्रिय अनंतरहै अर्थात् समी

पड़े पर दोनोंके कर्मसे जीने न सकै तो वैश्यके
कर्मसे जीवे पर वैश्यके कर्मसे जीने वाले ब्रा
ह्मण और क्षत्रिय पराधीन अर्थात् बैल आदि
से पराधीन और भूमिमें स्थित बहुत जीवोंका
नाश जिसमें हो ऐसी जो खेती है उसको यत्न

उभाभ्यामप्यजीवंस्तु कथं ·
स्यादिति चेद्भवेत् कृषिगोर
क्षमास्थाय जीवेद्वैश्यस्य जी
विकां ८२ वैश्यवृत्त्यापि जी
वंस्तु ब्राह्मणः क्षत्रियोपि वा
हिंसाप्राया पराधीनां कृषिं
यत्नेन वर्जयेत् ८३ कृषिं सा
ध्विति मन्यंते सा वृत्तिः सद्वि
गर्हिता भूमिं भूमिशयांश्चैव
हंति काष्ठमयोमुखम् ८४

पूर्वक वर्जन करै पर खेतीको कोई अच्छी मान
ते हैं सो ठीक नहीं क्यौं कि भूमिको और भूमिमें
स्थित जीवको लोहे मुखवाला काष्ठ अर्थात्
हल नाश करता है इसलिये इस जीविकाकी
साधुलोगोंने निंदाकी है ८४ ॥

ब्राह्मण क्षत्रिय अपने जीविकासे जीने न सके
और वैश्यकी जीविकासे जीवै तो आगे जो वेच
नेको मना करैंगे इसको छोडकर द्रव्यके ब
ढ़ाने वाली वस्तु वेचै ८५ सब रस सिद्धान्न अ
र्थात् सरसव तिल पत्थर लवन पशु मनुष्य

इदं तु वृत्तिवैकल्यात्त्यजतो
धर्मनैपुणम् विट्पण्यमुद्धृ
तोद्धारं विक्रेयं वित्तवर्द्धनं ।
सर्वान् रसानपोहेत कृतान्नं
च तिलैः सह अश्मनो ल
वणं चैव पशवो ये च मानुषाः
८६ सर्वं च तान्तवं रक्तं शा
णक्षौमादिकानि च अपि चे
त्स्युररक्तानि फलमूल त
थौषधीः ८७ ॥

इन सबको नवेंचे रसके निषेधसे लवणका निषे
धसे लवण का निषेध जो किया सो दोषकी बा भी २
ढ़ाई जाननेके लिये सो प्रायश्चित्त बडाईके लिये
है इसी रीतिसे ग्रन्थका भी पृथक् निषेधको जा
नना ८६ रक्त वस्त्र सन तीसी भेडि इन्होंसे जो वस्त्र

म०
स्मृ० टी०
भा०
ध०३

403

है श्वेत अथवा रक्त फल फूल औषधी ८५ जल
लोह विष मांस सोम लता गंध दूध मधु दही ।
घी तैल मधूच्छिष्ट अर्थात् मोम गुड कुशा ८६
बनके पशु दाढवाले जीव अर्थात् सिंह आदि

आपः शस्त्रं विषं मांसं सोमं
गंधांश्च सर्वशः क्षीरं क्षौद्रं ।
दधि घृतं तैलं मधु गुडं कुशा
नु ८६ आरण्यांश्च पशून्सर्वा
न्दंष्ट्रिणश्च वयांसि च मद्यं ।
नीलिं च लाक्षां च सर्वांश्चैक
शफांस्तथा ८७ काममुत्पा
द्य कृष्यां तु स्वयमेव कृषीव
लः विक्रीणीत तिलान् शु
द्धान् धर्मार्थमचिरस्थितान्
८८

पक्षी मद्य नील लाख एक खुरवाला जीव इन
सभको बेंचे ८७ खेती करनेवाला खेती में ति
ल उत्पन्न करै और यह तिल शुद्ध हो बहुत का- ९०
लतक घरमें न रहा हो तो उसको धर्मके अर्थ बेंचे

भोजन उबटन दान ये तीन कर्म छोड़के दूस०
रा कर्म जो तिलसे करै सो कीड़ा होके कुत्ताके
विष्ठामें पितरोंके साथ डूबै ९१ मांस लाख ल
वण इसके वेचनेसे तुरंत पतित होताहै औ

भोजना भ्यंजनाद्दाना यद०
न्य त्कुरुते तिलैः कृमिभूतः
श्वविष्ठायां पितृभिः सह म
ज्जति ९१ सद्यः पतति मांसे
न लाक्षया लावणेनच त्र्य०
हेण शूद्री भवति ब्राह्मणः
क्षीर विक्रयात् ९२ इतरेषां
तु पण्यानां विक्रया दिह का
मतः ब्राह्मण सप्त रात्रेण
वैश्यभावं नियच्छति ९३ ॥

र दूध वेंचनेसे तीन दिनमें शूद्र भावको प्राप्त हो
ताहै ९२ इच्छा पूर्वक इतरे वस्तुओंके वेचनेसे
ब्राह्मण सातरातमें वैश्यभावके प्राप्त होताहै ९३

म॰
स॰ टी॰
भा॰
५५

रस अर्थात् गुड आदिको रस अर्थात् घी आदिसे बदला करना लवणको दूसरे रससे बदला न करना सिद्धान्नको आमान्नकरके तिलको धान्य करके सम बदला करना ५४ आपत्कालमें।

रसा रसैर्निमातव्या नत्वेव लवणं रसैः कृतान्नं चाकृतान्नेन तिला धान्येन तत्समा ५४
जीवेदेतेन राजन्यः सर्वेणाप्यनयं गतः नत्वेव ज्यायसीं वृत्तिमभिमन्येत कर्हिचित् ५५
यो लोभादधमो जात्या जीवेदुत्कृष्टकर्मभिः तं राजा निर्धनं कृत्वा क्षिप्रमेव प्रवासयेत् ५६ ॥

आप त्क्षत्रिय एवं कथित जीविकासे जीवै परंच बडोंकी जीविकासे जीनेका अभिमान कभी न करै ५५ अधम जातिवाला लोभसे बडोंके कर्मसे जीवै तो राजा उसको निर्धनकरके जलदी अप नेदेशसे निकालदेवै ५६

404

गुणोंसे हीन भी अपना धर्म हो तो इसको करना
परका धर्म बहुत अच्छा हो तो इसको न करना
परका धर्म करके जातिसे शीघ्र पतित होता
है ९७ वैश्य अपने कर्मसे जीने न सके तो शू-

वरं स्वधर्मो विगुणो न पार-
क्यः स्वनुष्ठितः परधर्मेण जी-
वन्हि सद्यः पतति जातितः
९७ वैश्यो जीवन् स्वधर्मेण
शूद्रवृत्त्यापि वर्तयेत् अना-
चरन् कार्याणि निवर्तेत च
शक्तिमान् ९८ अशक्नुवंस्तु
शुश्रूषां शूद्रः कर्तुं द्विजन्म-
नाम् पुत्रदारात्ययं प्राप्तो जी-
वेत्कारुककर्मभिः ९९ ॥

द्रके कर्मसे जीवे और जो वह करनेकी योग्य
नहीं है इसको न करे ९८ द्विजातिकी सेवाको
शूद्र न कर सके और इसकी स्त्री पुत्र तृषासे दुः- ९९
खित होवे तो रसोई करने वालोंके कर्मसे जीवे

जिन कर्मोंसे द्विजातिकी सेवा होवे वह जो कारुक अर्थात् बढई का कर्म और शिल्प अर्थात् चित्र लिखन आदिकर्म नाना प्रकारके हैं उनको करै १०० वैश्य कर्मको न करै और जीविकासे कष्टको पावे अपने मार्गमें स्थित होवे ऐसा

यैः कर्मभिः प्रचरितैः शुश्रूषंते द्विजातयः तानि कारुककर्माणि शिल्पानि विविधानि च १०० वैश्यवृत्ति मनातिष्ठन् ब्राह्मणः स्वे पथि स्थितः अवृत्ति कर्षितः सीदन् इमं धर्मं समाचरेत् १०१ सर्वतः प्रतिगृह्णीयाद् ब्राह्मणस्त्वनयं गतः पवित्रं दुष्यतीत्येतद्धर्मतो नोपपद्यते १०२ ॥

जो ब्राह्मण सो आगे जो धर्म कहैंगे उसको करै १०१ आपत्कालमें प्राप्त ब्राह्मण चाहे जिससे प्रतिग्रह करै जिस कारणसे पवित्र अर्थात् होगा आदि नदी दोषी होती है यह बात धर्मसे उत्पन्न नहीं होता १०२

पढाना यज्ञकराना निंदितसे धन लेना इन्होंसे
ब्राह्मणको दोष नही होता क्यौं कि अग्नि और ज
ल इन्होंके समान ब्राह्मण है १३ आपत्कालमें
इधर उधरसे जो ब्राह्मण भोजन करता है सो पा
पसे लिप्त नही होता जैसा आकाश कादंब में
भी है परंतु उससे लिप्त नही होता १४ अजीग

नाध्यापनाद्याजनाद्वा गर्हि
ताद्वा प्रतिग्रहात् दोषो भव
ति विप्राणां ज्वलनांबुसमा
हि ते १३ जीवितात्ययमाप
न्नो योन्नमत्ति यतस्ततः आ
काशमिव पंकेन न स पाप
न लिप्यते १४ अजीगर्तः सु
तं हन्तुमुपासर्पद्बुभुक्षितः
न चालिप्यत पापेन क्षुत्प्रती
कारमाचरन् १५ ॥

ते ऋषि क्षुधासे पीडित होकर अपना बेटा शुनः
शेफको बेचा यज्ञमें सो गो लिया यज्ञस्तंभमें बा
धिके मारनेमें प्रवृत्त हुए क्षुधा शांतिके लिये
परंतु पापकर्मके लिप्त न हुए यह बात ऋग्वेद
के ब्राह्मणमें शुनःशेफके कथामें स्पष्ट है १५

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
अ॰ १०

406

धर्म और अधर्मका जाननेवाला क्षुधासे पीडित वामदेव ऋषि प्राण रक्षाके लिये कुत्तेकी मांसको भोजन करनेके इच्छा करन सते पापसे लिप्त न हुए १०६ क्षुधासे पीडित महा तपस्वी पुत्र सहित भारद्वाज ऋषि जन रहित व-

श्वमांस मिच्छन्नार्तो त्तु धर्माध
र्म विचक्षणः प्राणानां परि
रक्षार्थं वामदेवो न लिप्तवा-
न् १०६ भारद्वाजः क्षुधार्तस्तु
स पुत्रो विजने वने बह्वीर्गाः
प्रतिजग्राह वृद्धो स्तक्ष्णो म
हातपः १०७ क्षुधार्तश्चात्तुम
भ्यागा विश्वामित्रश्च जाघनी
म चांडाल हस्ता दादाय धर्मा
धर्म विचक्षणः १०८ ॥

नेमें वृधु नाम बढईसे बहुत गौ का दान लिया १०७ धर्म और अधर्मका जाननेवाला क्षुधासे पीडित विश्वामित्र ऋषि चांडालके हाथसे कुत्तेकी जंघाका मांसको लेकर भोजन करनेके लिये निश्चय किया १०८ ॥

आपत्कालमें अभावमें ब्राह्मणको यज्ञ कराना पढाना इन दोनोंसे प्रतिग्रह करना परलोकमें निंदित है ९९ एवं कठिन दानमें कारण कहते हैं आपत्कालमें संस्कार सहित जो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इन्होंको पढाना यज्ञ करना होता है

प्रतिग्रहाद्याजनाद्वा तथैवा ध्यापनादपि प्रत्यग्रहः प्रति वरः प्रेत्य विप्रस्य गर्हितः ९९ याजनाध्यापने नित्ये क्रियेते संस्कृतात्मनाम् प्रतिग्रहस्तु क्रियते शूद्रादप्यन्त्यजन्मनः ११० जपहोमैरपैत्येनो याजनाध्यापनैः कृतं प्रतिग्रहनिमित्तं तु त्यागेन तपसैव च १११

और प्रतिग्रह करना तो निकृष्ट जाति शूद्रसे भी होता है इसलिये इन दोनोंसे यह निंदित है ११० यज्ञ करानेसे और पढानेसे जो पाप होता है सो जप और होमसे जाता है प्रतिग्रह करनेसे जो पाप होता है सो तपसे और प्रतिग्रहकी वस्तु के त्यागसे जाता है १११ अपनी जीविका से जी

म॰ स्मृ॰ टी॰ भा॰ अ॰ १०

407

ने न सकै ब्राह्मण तो उपपातकी आदिसे शिल
और उञ्छलको लेवै प्रतिग्रहसे शिल बडा उस
सेभी उञ्छ बडा ११२ धर्म और कुटंब इन्होंके अर्थ
कष्टको पाये हुए निर्द्धन ब्राह्मण सोना रूपा
छोडकर धान्य और वस्त्रको और यज्ञके अर्थ
सोना रूपाको भी आज्ञाक्रमसे रहित राजि

शिलोञ्छमप्याददीत विप्रो
जीवन्यतस्ततः प्रतिग्रहा
च्छिलः श्रेयांस्ततोप्युञ्छः प्र
शस्यते ११२ सीदद्भिः कुप्यमि
च्छद्भिः धने वा पृथिवीपतिः
याच्यः स्यात्स्नातकैर्विप्रैरदि
त्संस्त्यागमर्हति ११३ अकृतं
च कृतात्क्षेत्रा गौरजाविक
मेव च हिरण्यं धान्यमन्नं च
पूर्वं पूर्वमदोषवत् ११४ ॥

ऐसे भी मांगे और जो कृपणतासे धन देनेकी इ
च्छा न करै उसको त्यागदेवै ११३ सस्य सहित खे
तसे बिना सस्यवाला खेतका प्रतिग्रह करना
दोषरहित है और गौ बकरा भेड सोना अन्न सिद्धा
न इन्होंमें पूर्व पूर्व उत्तर उत्तरसे दोष रहित है इस ४
लिये पूर्व पूर्वके अभावमें परपरको ग्रहण करना

विभागसे प्राप्त भूमिमें गडा हुआ मिला और मो
ल लिया जीतसे मिला व्यवहार करनेसे मिला
काम करके मिला भले लोगोंसे प्रतिग्रह करके
मिला इन सात प्रकारसे द्रव्यका आगम धर्मसे
युक्त है ॥१५॥ विद्या अर्थात् वेद विद्या छोडकर वै
दिक न्याय विषका जानना शिल्प अर्थात् लि
खना आदि भृति अर्थात् मजूरी सेवा गोका रखना

सप्त वित्तागमा धर्म्या दायो
लाभः क्रियाजयः प्रयोगः क
र्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च
॥१५॥ विद्या शिल्पं भृति सेवा गो
रक्ष्यं विपणिः कृषिः धृतिर्भै
क्ष्यं कुसीदं च दश जीवन हेत
वः ॥१६॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वा
पि वृद्धिं नैव प्रयोजयेत् काम
न खलु धर्मार्थं दद्यात्पापीय
सेल्पिकां ॥१७॥

बनियांका कर्म खेती करना संतोष भैक्ष्य अर्था
त् भिक्षा समूह ब्याज लेना ये दश जीनेका कार
ण हैं अर्थात् अनापत्कालमें जो जीविका जिसको
निषिद्ध है उस जीविकाको आपत्कालमें वह ग्र
हण करे ॥१६॥ ब्राह्मण और क्षत्रिय ब्याज न लेवें अ
थवा निकृष्ट कर्म करने वालेका धर्मके अर्थ थो
डा ब्याज लेकर धन यथेष्ट देवे ॥१७॥ शक्तिपूर्वक

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
अ॰ १०

408

प्रजाओंकी रक्षा करते संते आपत्कालमें प्रजाओंसे चौ
था भाग लेते संते क्षत्रिय पापसे छूटता है ॥११८ शा
स्त्रसे जयप्राप्ति और संग्राममें न भागना ये दोनों
राजाका धर्म है शास्त्रोंसे वैश्योंकी रक्षा करके
धर्मसे युक्त बलि अर्थात् अपने भागको लेवै ॥
धान्यमें वैश्योंसे बीस रुपैया बढनेमें अष्टम भा
ग लेवै आपत्कालमें तो चौथा भाग कहा आये

चतुर्थमाददानोपि क्षत्रियो
भागमापदि प्रजारक्षन्परन्
शक्त्या किल्बिषात्प्रतिमुच्य
ते ॥११८ स्वधर्मो विजयस्तस्य
नाहवे स्यात्पराङ्मुखः शास्त्रे
ण वैश्यान् रक्षित्वा धर्ममा
हारयेद्बलिम् ॥११९ धान्येऽष्ट
मं विशां शुल्कं विंशं कार्षाप
णावरम् कर्मोपकरणाः शू
द्राः कारवः शिल्पिनस्तथा ॥१२०

हे आपत्कालन होवे तो बारवां भाग लेवै हिर
ण्य अर्थात् मोहर आदिका और पशु इन्होंका प
चासवां भाग लेवै और आपत्काल होवे तो बीस
वां भाग लेवै शूद्र और कारू अर्थात् रसोई बना
ने वाले शिल्पी अर्थात् बढई आदि इन्होंसे आप
त्कालमें भी कर न लेवै किंतु कर्महीं करावै अ १२०
र्थात् ये सब कर्म ही करके राजाका उपकार करें

ब्राह्मणकी सेवासे शूद्र जीने न सके तो और जीवि-काके इच्छा करै तो क्षत्रियका आराधन करके जीवै अथवा धनी वैश्यका आराधन करके जीवै ।२१। स्वर्गके लिये अथवा जीविका और स्वर्ग इन दोनोंके लिये ब्राह्मणोंकी आराधन शूद्रक

शूद्रस्तु वृत्तिमाकांक्षन् क्षत्रमाराधयेद्यदि धनिनं वाप्युपाराध्य वैश्यं शूद्रो जिजीविषेत् ।२१। स्वर्गार्थमुभयार्थं वा विप्रानाराधयेत्तु सः जातब्राह्मणशब्दस्य साह्यस्य कृतकृत्यता ।२२। विप्रसेवैव शूद्रस्य विशिष्टं कर्मकीर्त्यते यदतोऽन्यद्धि कुरुते तद्भवत्यस्य निष्फलम् ।२३ ॥

रे ब्राह्मणका सेवा करने वाला यह शूद्र है ऐसा संसारमें विदित होना उसकी कृत कृत्यता अर्थात् करने योग्य सब वस्तुको कर चुकना है ।२२। ब्राह्मणकी सेवाही शूद्रका बडा कर्म है इसको छोडकर और जो करना है सो निष्फल है ।२३।

म०
स्मृ० टी०
भा०
अ० १०

409

शूद्रको सेवामें सामर्थ्य कर्ममें उत्साह पुत्र
स्त्री आदिका पोषण परिमाण इन सभको देख
कर अपने गृहसे उसके योग्य जीविकाका बांध
ण करै १२४ झूठ अन्न पुराना कपड़ा सार रहित
धान्य पुरानी शय्या पुरानी गृहकी सामग्री इन
सभको जो आश्रित शूद्र है उसको देना १२५ ल

प्रकल्प्या तस्यैतैर्वृत्तिः स्वकु
टुम्बाद्यथार्हतः शक्तिं चाव
क्ष्य दाक्ष्यं च भृत्यानां च परि
ग्रहं १२४ उच्छिष्टमन्नं दातव्यं
जीर्णानि वसनानि च पुलाका
श्चैव धान्यानां जीर्णाश्चैव
परिच्छदाः १२५ न शूद्रे पातकं
किंचिन्न च संस्कारमर्हति
नास्याधिकारो धर्मेऽस्ति न
धर्मात्प्रतिषेधनम् १२६ ॥

हसन आदिके भक्षणसे पातक शूद्रको नहीं
होता यज्ञोपवीत आदि संस्कारभी शूद्रको न-
हीं है अग्निहोत्र आदि धर्ममेंभी शूद्रको अधिका
र नहीं है पाक यज्ञ आदि धर्मका निषेध भी न
हीं है ये सब बातें करते आये हैं यह श्लोक आ
गेके लिये अनुवाद अर्थात सिद्धवस्तुका कथन
है १२६

अपने धर्मको जानने वाला धर्मकी इच्छा करने
वाला द्विजोंका निषिद्ध आचारको आश्रय कर
नेवाला जो शूद्र सो नमस्कार मंत्र करके पंच
यज्ञको करै छोड़ै न इसमे लोकमें प्रसिद्धता
को पाताहै १२७ परके गुणकी निंदाको न क

धर्मेप्स वस्तु धर्मज्ञाः सतो
वृत्त मनुष्ठिताः मंत्रवर्ज्जं न.
दुष्यंति प्रशंसां प्राप्नुवंति च
१२७ यथा यथाहि सद्वृत्त मा
तिष्ठत्यन सूयकः तथा तथे
मं चामुंच लोकं प्राप्नोत्यनिं.
दितः १२८ शक्तेनापिहि शूद्रे
ण न कार्यो धन संचयः शूद्रो
हि धन मासाद्य ब्राह्मणानेव
बाधते १२९ ॥

है
रैने वाला शूद्र जैसे जैसे भले लोगोंके आचरन.
को करता तैसे तैसे इस लोकमें बड़ा कहाता.
है और परलोकमें स्वर्गको पाताहै १२८ समर्थ
भी शूद्रहो परंतु धनका संचय न करै क्योंकि
शूद्र धनको पाके ब्राह्मणों[illegible]को बाधा करता.

म॰
स्मृ॰ टी
भा॰
ध १०

460

है १२९ यह चारो वर्णकी आपत्कालके धर्मको
कहा जिस धर्मको करत संते परमगतिको पा
तेहै १३० चारो वर्ण संपूर्ण धर्म विधि यह कहा
इसके अनंतर शुभ प्रायश्चित्त विधिको कहैंगे

एते चतुर्णां वर्णानामापध॰
र्माः प्रकीर्तिताः यान्सम्यग
नुतिष्ठंतो व्रजंति परमां गतिं
१३० एष धर्मविधिः कृत्स्नश्चा
तुर्वर्ण्यस्य कीर्तितः अतःपरं
प्रवक्ष्यामि प्रायश्चित्त विधिं
शुभम् १३१ इति मानवे धर्म
शास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहिता
यां दशमोऽध्यायः १० ॥

१३१ इतिश्री मनुस्मृति भाषा टीकायां ऊधकभ
हृव्याख्यातृ मार्तिण्ड श्री बाहु देवीदयालसिंह
कारितायां श्री कंपनी संस्कृत पाठशालीय गु
लजारशर्म पंडितकृतायां दशमोऽध्यायः १० ॥

विवाहकी इच्छा करनेवाला ज्योतिष्टोम आदि यागकी इच्छा करनेवाला पैंड रूरू धन दक्षिणा वाली विश्वजित् यागकरनेवाला विद्यागुरु माता पिता इन तीनोंके भोजना छादन देनेवाला वेद पढन समयमें भोजना छादनकी इच्छा करनेवाला रोगी १ येनव ब्राह्मण स्नातक कहातेहैं और धर्मभिक्षा स्वभाववालेहैं ये सभ धनरहित होतो इन्होंकी विद्याके योग्य हिरण्य आदि देना अब इस स्थानमें ऐसी आशंका होतीहै कि

सांतानिकं यक्ष्यमाणं मध्वगं सार्ववेदसम् गुर्वर्थं पितृमात्रर्थं स्वाध्यायार्थ्युपतापिनः १ नवैतान्स्नातकान्विद्या ब्राह्मणान्धर्मभिक्षुकान् निःस्वेभ्यो देयमेतेभ्यो दानं विद्याविशेषतः २ ॥

दशवें अध्यायके अंतमें कहा कि इसके अनंतर प्रायश्चित्त विधिको कहेंगे ऐसी प्रतिज्ञा किया और स्नातक ब्रह्मचारीका वर्णन प्रारंभ किया सो प्रतिज्ञासे विरुद्ध है तिसका समाधान करते हैं कि करने योग्य जो कार्य नहीं हैं इसके करनेवाले दान करके शुद्ध होतेहैं यह कह आयेहैं और सर्प आदिके वधकी शुद्धि दानसे न करसके तो दूसरा प्रायश्चित्त करे ऐसा आगे कहेंगे इस लिये दान पंचका वर्णन बडा प्रायश्चित्त है तो इसका

म० स्०टी० भा० ४१

प्रारंभ युक्त है और इस अध्यायका प्रयोजन भी यही
है कि वर्ण और आश्रम इन दोनोंका धर्म आदिसे
भिन्न प्रायश्चित्त आदि धर्मका कथन करना और भी
नैमित्तिक धर्मका कथन करना और भी, नैमित्तिक
धर्मका कथन करना इस अध्यायमें युक्त है २ येन
व ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं इनको वेदीके भीतर दक्षिणास
हित अन्नदेना और इनसे जो भिन्न हैं उनको वेदीके

एतेभ्यो हि द्विजाग्र्येभ्यो देयम
न्नं सदक्षिणम् इतरेभ्यो बहि
र्वेदि कृतान्नं देयमुच्यते ३
सर्वरत्नानि राजा तु यथार्हं
प्रतिपादयेत् ब्राह्मणान्वेद
विदुषो यज्ञार्थं चैव दक्षिणा
म् ४ कृतदारो परान्दारान्
भिक्षित्वा योधिगच्छति रति
मात्रं फलं तस्य द्रव्यदातुस्तु सं
ततिः ५ ॥

बाहर सिद्धान्नदेना कहते हैं ३ वेद पढनेवाले ब्रा
ह्मणको विद्या योग्य सर्वरत्न राजा देवै और यज्ञ
के लिये दक्षिणा देवै ४ प्रथमा स्त्रीके रहते संते
भिक्षासे धन बटोरके उस धनसे दूसरा विवाह
करै तो रतिमात्र फल उसको है जिसने धन
दिया उसीकी संतति है ५ ॥

स्त्री पुत्रके सेवनमें लगा है और और वेदको पढे
है ऐसे ब्राह्मणको राजा यथाशक्ति धन देवे ६
भृत्य स्त्री पुत्र आदि आश्रित जन सहित जिसपु
रुषको तीन वर्ष तक भोजनके लिये अन्न है सो

धनानि तु यथाशक्ति विप्रे
षु प्रतिपादयेत् वेदवित्सु
विविक्तेषु प्रेत्य स्वर्गं समश्नु
ते ६ यस्य त्रैवार्षिकं भक्तं प
र्याप्तं भृत्यवृत्तये अधिकं वा
पि विद्येत स सोमम्पातुमर्
हति ७ अतः स्वल्पीयसि द्र
व्ये यः सोमं पिबति द्विजः स
पीत सोम पूर्वोपि न तस्या
प्नोति तत्फलम् ८ ॥

सोमयाग करनेके योग्य है ७ इससे थोडा धन
वाला सोमयाग करे तो उसका फल नहीं पा
ता ८ परजनके अन्न आदि देनेको सामर्थ्य है
और अपने जनको नहीं देता अपने जन दुःखे

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
४१२

412

से जीते हैं सो पुरुष धर्मका प्रतिरूपक है अर्था
त् धर्म करने वाला नहीं है किंतु प्रथम यश
मिलता है पीछे से नरक होता है ॥ भृत्य पुत्र
स्त्री माता पिता आदिको पीडा देकर परलोक

शक्तः परजने दाता स्वजने
दुःखजीविनि मध्वापातो ।
विषास्वादः स धर्मप्रतिरूप
कः ॥ भृत्यानामुपरोधेन ।
यत्करोत्यौर्ध्वदेहिकम् तद्भ
वत्यसुखोदर्कं जीवितस्य
मृतस्य च ॥ यज्ञश्चेत्प्रति
रुद्धः स्यादेकेनाङ्गेन यज्व
नः ब्राह्मणस्य विशेषेण ।
धार्मिके सति राजनि ॥ ।

के लिये धान्य आदि जो करता है सो दान उस पुरु
षके जीतेनको है और मरे पीछे दुःख देनेवाला है ॥
धार्मिक राजाके रहतेसंते जिस ब्राह्मणकी अथवा
क्षत्रियकी यज्ञ द्रव्य विना एक अंगसे हीन हो ॥

तो पाक यज्ञ आदिसे रहित और सोमसे रहित
बहुत पशुवाला वैश्यके गृहसे उस अंगको या
गइच्छाका बलसे अथवा चोरीसे यज्ञ करनेवा
ला लेवै १२ यज्ञका दो अथवा तीन अंग द्रव्य विना
सिद्ध नही होता और वैश्यसे भी धन नही मिल
तोहो शूद्रके गृहसे बल करके अथवा चोरीसे
धन ग्रहण करै क्यौ कि शूद्रका यज्ञसंबंध को

यो वैश्यः स्याद्बहुपशु हीन
क्रतु रसोमपः कुटुम्बात्तस्य
तद्द्रव्य माहरे यज्ञ सिद्धये १२
आहरेत्त्रीणि वा द्वे वा कामं
शूद्रस्य वेश्मनः नहि शूद्र
स्य यज्ञेषु कश्चिदस्ति परिग्र
हः १३ यो नाहिताग्निः शत
गु रयज्वा च सहस्रगुः तयो
रपि कुटुम्बाभ्या माहरेदवि
चारयन् १४ ॥

ईहै नही और जो आगे लिखोंगे कि यज्ञके अर्थ
शूद्रसे भिक्षा नलेना तिसपर कहतेहै कि बल
से अथवा चोरीसे धन ग्रहण करना मना नही
है १३ जो अग्निहोत्री नहीहै और सौ गौ वालाहै इन
अथवा यज्ञसे रहितहै सहस्र गौ वालाहै इन
दोनोके गृहसे यज्ञके अंगकी सिद्ध होनेके लि
ये धन ग्रहण करै इसमे कुछ विचार नकरै १४

413

जो जो ब्राह्मण नित्यही प्रतिग्रह करताहै और बां
उली हूंआ तडाग इनको नही खनताहै और यज्ञ
नही करता दानसे रहितहै उससे यज्ञांग सिद्धके
लिये धन मांगा और वह नही देता तो बलसे अ॰
थवा चोरीसे उसके गृहसे धनको लेवे इससे लेने
वालेकी प्रसिद्ध होतीहै और धर्म बढताहै १५
एक दिनमें दो चार भोजन करना ऐसी शास्त्रकी

आदान नित्याच्चादातु राहरे
दप्रयच्छतः तथा यशोस्य प्र
थते धर्मश्चैव प्रवर्द्धते १५ त
थैव सप्तमे भक्ते भक्तानि ष
डनश्नता अश्वस्तन विधाने
न हर्तव्यं हीन कर्मणः १६
खलात्क्षेत्रा दगाराद्वा यतो
वा प्युपलभ्यते आख्यातव्य
तु तत्तस्मै पृच्छते यदि पृ॰
च्छति १७॥

आताहै इससे छः वेर जिसने भोजन नकिया तो
तीन दिन उपवास भया चौथे दिन पहिले वेर एक
दिनके भोजन भर अन्न हीन कर्मवालेसे चोरी
करके लेना १६ खरिहानसे खेतसे गृहसे अथ
वा जहांसे मिले तहांसे अन्नको चोरावे और ज
ब अन्न स्वामी पूछे कि कहांसे अन्न चोराया तुम
नेतो कहिदेवे १७ ॥

ब्राह्मण के धन को क्षत्रिय कभी न ग्रहण करे और अन्नेन प्राप्तकाल प्राप्त हो तो निषिद्ध कर्म करने वाला और विहित कर्म का त्याग करने वाला ब्राह्मण और क्षत्रिय है उसके गृह से चोरी करे १८ जो मनुष्य असाधु लोगों से द्रव्य लेके साधु लो-

ब्राह्मणस्वं न हर्तव्यं क्षत्रियेण
कदाचन दस्युनिष्क्रिययोः
स्तु स्वमजीवन् हर्तुमर्हति १८
यो साधुभ्योर्थमादाय साधु-
भ्यः संप्रयच्छति स कृत्वा प्ल-
वमात्मानं संतारयति ताबु-
भौ १९ यद्धनं यज्ञशीलानां
देवस्वं तद्विदुर्बुधाः अयज्व-
नां तु यद्वित्तमासुरस्वं तदु-
च्यते २० ॥

गों को देता है सो अपने को नौका बना के उन दोनों को तारता है १९ यज्ञ करने वालों का जो धन है सो देवतों का धन कहाता है ऐसा पंडितों ने कहा और जो यज्ञ करने वाले नहीं हैं उनका जो धन है सो राक्षसों का धन कहाता है २० ॥

ऐसे कर्ममें धार्मिक राजा दंड नदेवे क्यों कि राजा
के लड़कपनसे ब्राह्मण क्षुधासे पीडित होता है
॥ ब्राह्मणका भृत्यजन कुटुंब अर्थात् पोष्यवर्ग
पठनशील अर्थात् स्वभाव इन सबको जानिके

न तस्मिन्धारयेद्दंडं धार्मिकः
पृथिवीपतिः क्षत्रियस्य हि ।
बालिश्या ब्राह्मणः सीदति क्षु
धा ॥ तस्य भृत्यजनं ज्ञात्वा ।
स्वकुटुम्बान्महीपतिः श्रुत
शीले च विज्ञाय धर्म्यां वृत्तिं
प्रकल्पयेत् ॥ कल्पयित्वा
स्य वृत्तिं च रक्षेदेनं समंततः
राजा हि धर्म षड्भागं तस्मा ।
त्प्राप्नोति रक्षितात् १३ ॥

धर्म करके युक्त जीविकाको राजा करै ॥ ब्राह्म
णकी जीविका करके और उसका रक्षा चारो ओर
से करै उस रक्षासे ब्राह्मण जो धर्म करैगा उसका
छठा भाग राजा पाता है १३ ॥

ब्राह्मण यज्ञके लिये शूद्रसे धनको कभी न मांगे
कदाचित् मांगके उस धनसे यज्ञकरै तो इसेंज
न्ममे चांडाल होतेहैं २४ यज्ञके लिये भिक्षा मां
गके धन बटोरके और संपूर्ण धनको यज्ञमें न

न यज्ञार्थं धनं शूद्राद्विप्रो भि
क्षेत कर्हिचित् यजमानो हि
भिक्षित्वा चांडालः प्रेत्यजाय
ते २४ यज्ञार्थमर्थं भिक्षित्वा
योन सर्वं प्रयच्छति स याति
भासतां विप्रः काकतां वा श
ते समाः २५ देवस्वं ब्राह्मण
स्वं वा लोभेनोपहिनस्तियः
स पापात्मा परेलोके गृध्रो॰
च्छिष्टेन जीवति २६ ॥

लगावे सो सौ जन्मतक भासपक्षी औरकौआ हो
ताहै २५ जो मनुष्य लोभसे देवताके द्रव्यको औ
र ब्राह्मणकी द्रव्यको नाश करताहै सो पापी परलो

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
४१५

कर्मे गिद्ध पत्नीके फूटेमे जीताहै २९ पशु यज्ञ और सोम यज्ञ वर्ष भरमे एकवेर करना कदाचित यह नहोसके तो इसके प्रायश्चित्तके लिये वर्ष॰ की समाप्तिमे अग्निदेवताकी यज्ञकरै २९ आपत्का

इष्टिं वैश्वानरीं नित्यं निर्वपेद
ब्दपर्यये क्लृप्तानां पशुसोमा
नां निष्कृत्यर्थं मसंभवे २९
आपत्कालेन यो धर्मं कुरुते
नापदि द्विजः सनाप्नोति फ
लं तस्य परत्रेति विचारितम्
३० विश्वैश्च देवैः साध्यैश्च ब्रा
ह्मणैश्च महर्षिभिः आपत्सु
मरणाद्भीतै र्विधेः प्रतिनि
धि कृतः ३१ ॥

ल नहीहै और आपत्कालके धर्मको जो ब्राह्मण करताहै सो परलोकमे उस फलको नही पाता मरणसे डरे हुए विश्वेदेवा साध्यगण ब्राह्मण बडे ऋषिलोग इन सभोंने आपत्कालमें मुख्य विधिका ३०

गौण विधि किया ३१

अपने विधि करनेमें समर्थ होके और गौण वि-
धिको करताहै उसको परलोकमें उस गौण वि
धिका फल नही होता ३१ धर्मको जाननेवाला अपने
पराक्रमसे वाला ब्राह्मण राजासे उत्तम नकेहै ।

प्रभुः प्रथम कल्पस्य योनु-
कल्पेन वर्तते न साम्परायि
कं तस्य दुर्मते विद्यते फलं
३१ न ब्राह्मणो वेदयेत किं-
चिद्राजनि धर्मवित स्ववीर्ये
णैव तान् शिष्यान्मानवान
पकारिणः ३२ स्ववीर्याद्रा
जवीर्याच्च स्ववीर्यं बलवत्त
रं तस्मात्स्वेनैव वीर्येण नि
गृह्णीयाद्दरीन् द्विजः ३३ ॥

किंतु अपने पराक्रमसे अपकारी लोगोंका शास
न करै ३२ राजाके पराक्रमसे अपना पराक्रम ब
डाहै इसलिये ब्राह्मण पराक्रमसे शत्रुओंका नि
ग्रह करै ३३ अथर्व अंगिरा ऋषिने कहा जो मा

म॰
स्म॰ टी॰
भा॰
४१६

रण प्रयोग उसको करै इसमें विचार कछु न क
रै ब्राह्मण को वाणीही शास्त्र है उस्से शत्रुओंको
मारै वह क्षत्रिय अपने बाहुवीर्यसे वैश्य और शू
द्र ये दोनों धनसे जपहोमोंसे ब्राह्मण आपत्का
लको वितावै ३४ विहित कर्मको करने वाला

श्रुतीरथर्वाङ्गिरसीः कुर्या
दविचारयन् वाक्शस्त्रं वै
ब्राह्मणस्य तेन हन्याद्दरीन्द्वि
जः ३३ क्षत्रियो बाहुवीर्ये
ण तरेदापदमात्मनः धने
न वैश्यशूद्रौ तु जपहोमै
र्द्विजोत्तमः ३४ विधाता शा
सिता वक्ता मैत्रो ब्राह्मण उ
च्यते तस्मै नाकुशलं ब्रूया
न्न शुष्कां गिरमीरयेत् ३५

पुत्र शिष्य आदिको सिखाने वाला प्रायश्चित्त
आदिको कहनेवाला सभ जीवोंसे मित्रता रख
ने वाला ऐसे ब्राह्मणको अनिष्ट अर्थात् निग्रह
करो ऐसा न बोलना और कठोरवाणी न बोलना ३५

कन्या युवती थोडा विद्यावान मूर्ख व्याधिसे पीडि
त यज्ञोपवीत से रहित ये सभ साय प्रातकाल अ॰
ग्निहोत्रको न करें २४ कदाचित् इन सभको करें
तो नरकमें जाते हैं ओर जिसकी अग्नि है अर्थात्
अग्निहोत्रका स्वामी सोभी नरक जाता है इसलि॰

नैव कन्या न युवति नाल्पवि
द्यो न बालिशः होतास्यादः
ग्निहोत्रस्य नार्तो नासंस्कृत
स्तथा २४ नरके हि पतन्त्येते
जुह्वतः स च यस्य तत् तस्मा
द्वैतान कुशलो होतास्याद्वे॰
दपारगः २५ प्राजापत्य मद॰
त्वाश्व मग्न्याधेय सदक्षिणाम्
अनाहिताग्नि र्भवति ब्राह्मणो
विभवे सति २६ ॥

ये जो वेदके पारग गया हो ओर अग्निहोत्र कर्मको
जानने वाला हो सोई यजमान का होम करे २५
विभव रहत संते अग्निहोत्रका जो दक्षिणा ब्रह्मा॰
के निमित्त थोडा है उसको न देवे तो अग्निहोत्रका
फल उस ब्राह्मणको नही होता २६ इंद्रियोका

म०
स्र० टी०
भा०
४११

417

जीतकर श्रद्धा सहित पुरुष इससी प्रणपेको करै पवैत थोडी दक्षिणासे यज्ञको न करै क्युं इंद्रिय यश स्वर्ग आयुःकीर्ति प्रजा पशु इन सभको थो डी दक्षिणा वाली यज्ञ नाश करनीहै इसलिये

प्रणान्यशानि कुर्वीत श्रद्धया नो जितेंद्रियः नत्वल्पदक्षिणै र्यज्ञै र्यजेतेह कथंचन ३९ इं द्रियाणि यशः स्वर्ग मायुःकी र्तिं प्रजाः पशून् हंत्यल्प दक्षि णो यज्ञः तस्मान्नाल्पधनो य जेत ४० अग्निहोत्र्यपविध्याग्नी न् ब्राह्मणः कामकारतः चां द्रायणं चरे न्मासं वीरहत्या समं हि तत् ४१ ॥

थोडा धनवाला यज्ञको न करै ४० अग्निहोत्री ब्रा ह्मण इच्छासे सायंप्रातः होम नकरै तो पुत्र मार ने का दोष होताहै इसपापके छोडके लिये एक मास चांद्रायण व्रतकरै ४१ ॥

जो ब्राह्मण शूद्रसे धन लेके अग्निहोत्र करताहै
वह शूद्रहीका ऋत्विक् होताहै इसको कुछ फ
ल नही होता इसको कुछ फलनही होता और
वेद पढने वाले ब्राह्मणोंमे निन्दित कहाताहै ४२

ये शूद्राद धिगम्यार्थं मग्निहो
त्रमुपासते ऋत्विजस्ते हि शू
द्राणां ब्रह्मवादिषु गर्हिताः
४२ तेषां सततमज्ञानां वृष
लाग्न्युपसेविनां पदा मस्त
कमाक्रम्य दाता दुर्गाणि सं
तरेत् ४३ अकुर्वन्विहितं
कर्म निंदितं च समाचरन्
प्रसक्तश्चेंद्रियार्थेषु प्रायश्चि
त्तीयते नरः ४४ ॥

ऐसे ऋत्विजोंके माथे पर पांव धरके वह शूद्र द्र
व्यदेनेसे नरकको तरताहै और ऋत्विजोंको कु
छ फलनही होता ४३ विहित कर्मको न करने
से और निंदित कर्मको करनेसे इंद्रियोंके अर्थों
मे प्रसक्त होनेसे मनुष्य प्रायश्चित्त योग्य होताहै

म॰
स्मृ॰टी॰
भा॰
४ ए

विना इच्छासे पाप करनेमें प्रायश्चित्त पंडितोंने क
हा और इच्छासे पाप करनेमें भी वेदकी आज्ञासे
प्रायश्चित्तहै ४५ विना इच्छासे किया हुवा पापवे
दाभ्याससे छूटताहै और मोहकरके किये जो पा॰

अकामतः कृते पापे प्रायश्चि
त्ते विदुर्बुधाः कामकारकृ॰
तेप्याहुरेके श्रुति निदर्शना
त् ४५ अकामतः कृते पापे
वेदाभ्यासेन शुद्ध्यति कामत
स्तु कृते मोहात् प्रायश्चित्तैः
पृथग्विधैः ४६ प्रायश्चित्तीय
तां प्राप्य दैवात्पूर्व कृतेनवा
न संसर्गं व्रजेत्सद्भिः प्रायश्चि
त्ते कृते द्विजः ४७ ॥

प सो नानाप्रकारके प्रायश्चित्त करनेसे छूटताहै
४६ भाग्यसे पूर्वजन्ममें किये हुए कर्मसे प्रायश्चि
त्तके योग्यहोके और विना प्रायश्चित्तकिए सज्जनों
के साथ भोजन वास स्पर्श आदिमे संसर्गको नकरै ४१

कोई मनुष्य इसलोकमें दुष्टकर्मसे और कोई मनु
ष्य पूर्व जन्मके दुष्टकर्मसे निकाम रूपको पाता
है ॥८ सोना चोरानेवाला शरापीनेवाला ब्राह्म॰
णको मारनेवाला गुरु स्त्री गमन करनेवाला क
र्मसे निकाम नवे जन्ममें कालादांत क्षयरोग

इह दुश्चरितैः केचित् केचि॰
त्पूर्वकृतैस्तथा नरैरसंगे ब्र
जेत्मार्द्धिः प्रायश्चित्तैर्हृते
द्विजः ॥८ सुवर्णचौरः कौ
नख्यं शरापः श्यावदंततां
ब्रह्महा क्षयरोगित्वं दौश्च॰
र्म्यं गुरुतल्पगः ॥९ पिशु॰
नः पौतिनासिकां सूचि॰
कः पूतिवक्त्रतां धान्यचौ
रोंगहीनत्वमातिरेकं त
मिश्रकः ॥१०

निकाम नामको पाता है ॥९ चुगल दशारासे॰
कर्मको जानने वाला धान्य चोराने वाला मिला
वट करनेवाला क्रमसे दुर्गंधि नाक दुर्गंधि मु॰
ख अंगहीनता अंग बाकुल्य प्रर्थात्‌ कः अंगुरी

म०
स्मृ० टी०
भा०
ध ११

आदिको पाताहै ५० अन्न चोराने वाला जानके उ
प रहने वाला वस्त्र चोराने वाला घोडा चोराने वा
ला क्रमसे आम रोग गूंगपना श्वेत कुष्ट पंगुलता
को पाताहै ५१ इसरीतिसे कर्म करके भले लोगों

अन्नहर्ता मयावित्वं मौक्यं
वागपहारकः वस्त्रापहार-
कः श्वैत्र्यं पंगुतामश्वहार-
कः ५१ एवंकर्म विशेषेण
जायंते सद्विगर्हिताः जड-
मूकान्धबधिरा विकृताकृ-
तयस्तथा ५२ चरितव्य म
तो नित्यं प्रायश्चित्तं विशुद्ध
ये निंदैर्हि लक्षणैर्युक्ता जा
यंते निष्कृतेनसः ५३ ॥

से निंदित मनुष्य होतेहैं और जड मूक अंध बधिर
आदि निकामरूपको पातेहैं ५२ इसलिये शुद्धि
के अर्थ प्रायश्चित्त नित्यकरै जो प्रायश्चित्त नही
कियेहैं सो निंदायुक्त लक्षण युक्त सहित होतेहैं ५३

ब्रह्महत्या सुरापान ब्राह्मणका दशमासा सोना
अथवा इससे अधिक चोराना मातासे संभोग ये
चार महापातक हैं इन्होंके साथ संसर्ग करने
से पांचवां महापातक है ५४ नीच जाति होके
भी राजाके स
हम बड़ी जाति हैं ऐसा झूठ बोलना

ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गु
र्वंगनागमः महांति पातका
न्याहुः संसर्गश्चापि तैः सह
५४ अनृतं च समुत्कर्षे रा
जगामि च पैशुनम् गुरोश्चा
लीकनिर्बंधः समानि ब्रह्मह
त्यया ५५ ब्रह्मोज्झता वेदनि
दा कौटसाक्ष्यं सुहृद्वधः ग
र्हितान्नाद्ययोर्जग्धिः सुरापा
न समानि षट् ५६ ॥

मीप जिसमें उसका मरण हो ऐसा किसीका दोष
कहना गुरूसे झूठ बोलना ये सब ब्रह्महत्याके स
मान हैं ५५ पढ़े हुए वेदको बोलना वेदनिंदा सा
क्षी होके झूठ बोलना मित्रका वध लहसन आदि
का भक्षण विष्ठा आदिका भक्षण ये सभ सुरापा

नके समानहै ९६ थाती मनुष्य घोडा रूपा भूमि ।
हीरा मणि इन्होंका चोराना सोना चोरानेके समा
नहै ९७ सहोदरा भगिनी कुमारी चांडाली मित्र
की स्त्री पुत्रकी स्त्री इन्होंके साथ रहित करना ये

निक्षेपस्यापहरणं नराश्व र
जतस्य च भूमि वज्र मणीनां
च रुक्मस्तेय समंस्मृतं ९७ ।
रेतः सेकः स्वयोनीषु कुमा
रीष्वंत्यजासु च सख्युः पुत्रस्य
च स्त्रीषु गुरुतल्पसमं विदुः
९८ गोवधोऽयाज्यसंयाज्य पा
रदार्यात्मविक्रयाः गुरु मा
तृपितृत्यागः स्वाध्यायाग्न्योः
सुतस्य च ९९ ॥

सभमाताके गमन समानहै ९८ गौकावध यज्ञकरा
नेके योग्यजो नहीं है इसको यज्ञकराना पराएकी
स्त्रीसे रतिकरना अपनी आत्माको बेचना गुरुमाता
पिता वेदका पठना अग्निकी सेवा पुत्र इन्होंका त्याग
करना ९९

विवाह रहित जेठे भाईके रहत संते छोटे भाईका
विवाह होना और उन दोनो भाईयोंको कन्या देना
और उनको यज्ञकराना ६० कन्याके योनिमें अंगु॰
ली डालके दूषित करना ब्याजलेके जीवनकरना
ब्रह्मचारी होके मैथुन करना तडाग बगीचा भा

परिवित्ताऽनुजे नोढे परिवेद॰
नमेव च तयोर्दानं च कन्या
या स्तयो रेव च याजनम् ॥६०
कन्याया दूषणं चैव वार्द्धुष्य
व्रतलोपनं तडागाराम दारा
णा मपत्यस्य च विक्रयः ॥६१
व्रातत्या बांधवत्यागो भृत्या॰
ध्यापनमेव च भृता च्चाध्ययना
दान मपण्यानां च विक्रयः
॥६२॥

र्या पुत्र इन्होंका बेंचना ६१ कालमें यज्ञोपवीत॰
न होना चाचा आदिकी सेवा न करना इन्हलेके
पढाना इन्हदेके पढाना बेंचने योग्य नहीं जो
तिल आदि उसका बेंचना ६२ सोना आदिका जो

म० स्मृ० टी० भा० ४२१ वैश्यों
421

उत्पत्तिस्थानमें इसमें राजाकी आज्ञासे अधिकार हो
ना पुल आदिका बांधा औषधीका मारना अपनी
स्त्री आदिको बनाके परपुरुष संयोगसे जो धन
मिले उससे जीना शास्त्र कथित मारन प्रयोग क
रना मंत्र औषधी आदिके देनेसे वशीकरन कर
ना ६३ इन्धनके अर्थ गीले वृक्षको गिराना देव

सर्वाकरीषधीकारो महायं
त्र प्रवर्तनम् हिंसौषधीनां
स्त्र्याजीवो भिचारो मूलकर्मच
६३ इन्धनार्थ मशुष्काणां द्रु
माणा मवपातनं आत्मार्थंच
क्रियारंभो निंदितान्नादनं त
था ६४ अनाहिताग्निता स्ते
य ऋणाना मनपक्रिया अस
च्छास्त्राधिगमनं कौशीलव्य
स्यच क्रिया ६५ ॥

ता पितरोंके विना केवल अपनेहीके अर्थ रसोई
बनाना इच्छा विना पकवेर लहसन आदि जो भक्ष
ण योग्य नहीहै उसका भक्षण करना ६४ अधि
कार रहनेसे ते अग्निहोत्रका त्याग करना सोना चो
रके रुपा आदिका चोराना तीनो ऋणका न चुका
ना वेद और धर्मशास्त्र इन्होंसे विरुद्ध शास्त्रका सी०

खना नाचना गाना बजाना ६५ ॥

धान्य नामा लोहा आदि और पशु इन्होंका चोराना
मदिरा पान करनी वाली ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यकी
जो स्त्री है उसके साथ रति करना स्त्री शूद्र वैश्य
क्षत्रिय इन्होंका मारना परलोक नहीं है ऐसी बु
द्धि होना ये सभ एक एक उपपातक कहाते है ६६

धान्यकुप्य पशुस्तेयं मद्यपः
स्त्री निषेवणं स्त्री शूद्र विट् ।
क्षत्रवधो नास्तिकं चोपपा ।
तकम् ६६ ब्राह्मणस्य रुजः
कृत्वा घ्राति रघ्रेय मद्ययोः
जैह्म्यं च मैथुनं पुंसि जाति
भ्रंशकरं स्मृतं ६७ खराश्वोष्ट्र
मृगे भाना मजाविक वधः ।
तथा संकरी करणं ज्ञेयं मी
नाहि महिषस्य च ६८ ॥

ब्राह्मणको दंड हस्त पाद आदिसे पीडा करना लह
सुन पुरीष मद्य इन्होंका संघना कुटिल पना पुरुष
आदिमें मैथुन करना ये सभ जाति भ्रंश करनेवा
लेहैं ६७ गदहा घोडा ऊंट हाथी बकरा भेडा मछ ६८
ली सर्प भैंसा इन्होंका वध संकरी करण कहाता है

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
४२२

422

निंदित पुरुषसे धन लेना बनियोंका कर्म करना
शूद्रका सेवन कराना असत्यबोलना ये सभ पाप करणकह नाहे
भिन्न करके ६९ कृमी अर्थात् छोटी कीडे कीट अ
र्थात् बड़े कीडे पक्षी इन्होंका मारना भोजनके यो
ग्य वस्तु पेटारीमें रक्खी हुई मद्यके साथ आई उ

निंदितेभ्योधनादानं वाणिज्यं
शूद्रसेविनं अपात्रीकरणं ज्ञे
यं मसत्यस्य च भाषणम् ६९
कृमिकीटवयोहत्या मद्या॰
नुगत भोजनं फलैधः कुसु
मस्तेय मधैर्यं च मलावह
७॰ एतान्येनांसि सर्वाणि य॰
थोक्तानि पृथक पृथक यै
र्यैर्व्रतैरपोह्यंते तानि सम्य॰
ङ्निबोधत ७१ ॥

स वस्तुका भोजन फल लकडी फूल इन्होंका चोरा
ना अधीरा होना ये सभ मलावह कहाता है ७॰ ये
सभ पाप भिन्न भिन्न करके कहा ये सभ जिस जिस
व्रतकरके दूर होते हैं उन व्रतोंको जानो ७१ ॥

ब्राह्मणको मारने वाला अपने शुद्धिके लिये बनमें
झूटी बनाके बारह वर्षतक इस झूटीमें वासकर
रै जिस ब्राह्मणको मारे हो इसका शिर ध्वजामें रख
के भिक्षा मांगे यह प्रायश्चित्त निर्गुण ब्राह्मणको
गुणवानको ब्राह्मण बिना इच्छासे मारे तहां जान
ना १२ अथवा अपने इच्छासे शस्त्रविद्या जानने

ब्रह्महा द्वादश समाः कुटीं
कृत्वा वने वसेत् भैक्ष्याशुद्ध्य
र्थं विशुद्ध्यर्थं कृत्वाशव शिरो
ध्वजं १२ लक्ष्यं शस्त्रभृतो वा
स्याद्विदुषा मिच्छयात्मनः प्रा
स्येदात्मान मग्नौ वा समिद्धे त्रि
रवाक्शिराः १३ यजेत वाश्व
मेधेन स्वर्जिता गोसवेन वा अ
भिजित् विश्वजिद्भ्यां वा त्रिवृता
ग्निष्टुता पिवा १४ ॥

वाले पुरुषोंके शस्त्रका लक्ष्य अर्थात् निशाना होवे
अथवा नीचे मुख करके तीनेवर अपनी आत्माको अ
ग्निमें डाले यह प्रायश्चित्त और आगेके श्लोकमें जो
कहेंगे अश्वमेध याग करना सोभी निर्गुण ब्राह्मण
को गुणवान क्षत्रिय इच्छासे मारे तहां जानना १३
अथवा अश्वमेध स्वर्जित गोसव अभिजित् विश्वजि

ते विहित अग्निष्टुत इन्होंमेसे कोई एक यागकरै य
ह प्रायश्चित्त अज्ञानसे ब्राह्मणमारे तहां ब्राह्मण
आदि तीनों वर्णको जानना ७४ ब्रह्महत्या छोडा
नेके लिये थोडा भोजन करत संते इंद्रियोंके जी॰
ते हुए कोई एक वेदको पढ़त सौ योजन गमन
करै यह भी अज्ञानसे जातिमात्र ब्राह्मण वधमें ब्रा
ह्मण क्षत्रिय वैश्यको जानना ७५ अथवा वेद पढ़

जपन्वान्यतमं वेदं योजनानां
शतं व्रजेत् ब्रह्महत्यापनोदाय
मितभुङ्नियतेंद्रियः ७६ सर्वस्व
वेदविदुषे ब्राह्मणायोपपाद॰
येत् धनं वा जीवनायालं गृहं
वा सपरिच्छदं ७७ हविष्यभु॰
ग्वानुसरेत् प्रतिस्रोतः सरस्व॰
तीम् जपेद्वा नियताहारस्त्रिर्वै
वेदस्य संहिताम् ७८ ॥

हुए ब्राह्मणको संपूर्ण धनदेवै अथवा जीवन पर्यंत
भोजनके निमित्त ब्राह्मणको धन देवै अथवा साम॰
ग्री सहित गृह ब्राह्मणको देवै यह भी अज्ञानसे जा
ति मात्र ब्राह्मण वधमें ब्राह्मणको जानना ७७ अथ
वा हविष्य भोजन करत संते पश्चिम वाहिनी सरस्व
तीमें स्नान करै अथवा थोडा भोजन करत संते तीन
बेर वेदकी संहिताको पढ़ै यह ज्ञानसे जातिमात्र
ब्राह्मण वधमें ब्राह्मणको जानना ७८ ॥

गो ब्राह्मणका हित करत संते दाढी मोछ सहित मू
ड मुडायेनह कटाये ग्रामके समीपमें अथवा गो
के स्थानमें अथवा वृक्षके मूलमें वासकरे वनमें
कुटी बनाके रहे इस विकल्पके लिये कहाहै ७८
अथवा बारह वर्षके व्रतका प्रारंभ कियेहै तेरमध्यमें
ब्राह्मण गो इन्होंकी विपत्ति छोडानेके लिये प्राण
त्यागकरे तो उसी समयमें ब्रह्महत्यासे छूटताहै ७९

कृतवापनो वा निवसेद्ग्रामां
ते गो व्रजेपिवा आश्रमे वृक्ष
मूले वा गो ब्राह्मणहितेरतः ७८
ब्राह्मणार्थे गवार्थेवा सद्यः प्रा
णान्परित्यजेत् मुच्यते ब्रह्म
हत्याया गोप्ता गो ब्राह्मणस्य
च ७९ त्र्यवरं प्रतिरोद्धा वा स
र्वस्व मवजित्यवा विप्रस्य त
न्निमित्तेवा प्राणालाभे विमुच्य
ते ८० ॥ न चोराके लिये जा
ब्राह्मणका सर्वस्व यथा शक्ति बहाना व
लोहै उसके लानेके निमित्त यथाशक्ति बहाना व
हित यत्नकरे और तीन वेर युद्धकरे और ब्राह्मण
का चोरी गया सर्व धनको न भी लावे तो ब्रह्मह
त्यासे छूटताहै अथवा धन जानेसे शोक सहित
ब्राह्मण चोरके साथ युद्ध करनेसे प्राण त्यागमें प्र
वृत्त हो तो चोरी गया जो धन उसके समान धनदे
कर उसके प्राणकी रक्षाकरे तो भी ब्रह्महत्यासे छू

टता है इसस्थानपर ऐसी शंका होती है कि यह बा
तता उनासीके श्लोकमें लिख आये है तो पुनरुक्ति दो
ष पड़ा जिसका समाधान यह है कि इस प्रकारका
मरण छोड़कर दूसरे प्रकारसे मरे गो ब्राह्मण
के रक्षाके लिये तहां उनासीके श्लोकका विषय
जानना इसलिये पुनरुक्ति दोष न हुआ ८१ इस
रीतिसे नित्यही व्रतका धारण प्रणका धारण
निश्चित होकर ब्रह्मचर्य करने वाला बारह वर्ष

एवं दृढव्रतो नित्यं ब्रह्मचा॰
री समाहितः समाप्ते द्वादशे
वर्षे ब्रह्महत्यां व्यपोहति ८१
शिष्ट्वा वा भूमिदेवानां नरदे
व समागमे स्वमेनोऽवभृथ
स्नातो हयमेधे विमुच्यते ८२

समाप्त भये संते ब्रह्महत्यासे छूटता है ८१ अथवा
अश्वमेध यज्ञके अवभृथ स्नानमें अर्थात् अंतस्ना
नमें राजाके समागममें ब्रह्महत्या करने वाला
ब्राह्मण अपनी ब्रह्महत्याको निवेदन करके उ
न्होंके साथ स्नान करे तो ब्रह्महत्यासे छूटता है
यह प्रायश्चित्त स्वतंत्र है किसीका अंग नहीं है
८२ ॥

८२ ॥

क्यो कि ब्राह्मण धर्मका मूलहै और क्षत्रिय धर्मका
अग्रभागहै इस लिये दोनोंको अपने पापको जना-
के शुद्ध होताहै ८३ ब्राह्मण उत्पत्तिही करके देव-
ताओंको देवताहै और उसका उपदेश सबको मान

धर्मस्य ब्राह्मणो मूल मग्रं रा
जन्य उच्यते तस्मात्समाग-
मे तेषा मेनो विख्याप्य शुध्य-
ति ८३ ब्राह्मणः सम्भवेनैव
देवाना मपि दैवतम् प्रमाणं
चैव लोकस्य ब्रह्मात्रैव हि का
रणम् ८४ तेषां वेद विदो ब्रू
युस्त्रयोप्येनस्सु निष्कृतिं सा
तेषां पावनाय स्यात्पवित्रं
विदुषां हि वाक् ८५ ॥

ने योग्यहै इसमें वेदही कारणहै और उपदेशका मू
ल वेदहीहै ८४ वेद पढे हुए तीन ब्राह्मण जो प्रा-
यश्चित्त कहै सोई पवित्रहै क्यौं कि वेद पाठी ब्राह्म
णकी वाणीही पवित्रहै ८५ कहे हुए प्रायश्चित्तों
मे एक भी करे और ब्रह्मकी जाने तो ब्रह्म हत्या-

म॰
स्क॰ टी॰
भा॰
४२५

मे झूटताहै ८६ ब्राह्मणीमे ब्राह्मणसे उत्पन्न गर्भ
के नाशमे भी यही व्रतहै यज्ञकरत क्षत्रिय और
र वैश्य ब्राह्मणकी रजस्वला स्त्री इन्होमे कोई प
कके वधमें भी एवं कथित मंत्रोमें कोई एक व्र
तको करे ८७ साक्षीहोके झूठ बोलनेमें गुरुका

425

अनेनान्यतममास्थाय विधि
विप्रः समाहितः ब्रह्महत्या
कृतेपापे व्यपोहत्यात्म वत्तया
८६ हत्वा गर्भ मविज्ञात मेत
देव व्रतञ्चरेत राजन्यो वैश्यौ
वेजानो वात्रेयी मेव च स्त्रि
यम् ८७ उक्त्वा चैवानृतं सा
क्ष्ये प्रतिरुध्य गुरुं तथा अप
हृत्य च निःक्षेपं कृत्वा च स्त्री
सुहृद्वधम् ८८ ॥

मिथ्या दोष लगानेमें ब्राह्मणका सुवर्ण छोडके
रूपा आदि थाती हरनेमें और क्षत्रिय आदिका सु
वर्ण आदि थाती हरनेमें अग्निहोत्री ब्राह्मण
की स्त्री वधमें मित्रकी वधमें ब्रह्महत्याका व्र
त करना ८८ ॥

यह जो बारह वर्षका प्रायश्चित कहाहै सो विना इच्छासे ब्राह्मणके वधमें जानना और इच्छासे ब्राह्मण वधमें यह प्रायश्चित नहीं है कि तु इसका दूना है ९४ मोहसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ये तीनों वर्ण पैष्टी सुरापीके अग्निवर्ण अर्थात् अग्नि

इयं विशुद्धिरुदिता प्रमाप्याकामतो द्विजं कामतो ब्राह्मण वधे निष्कृतिर्न विधीयते ९४ सुरां पीत्वा द्विजो मोहादग्निवर्णां सुरां पिबेत् तया सकाये निर्दग्धे मुच्यते किल्बिषात्ततः ९० गोमूत्रमग्निवर्णं वा पिबेदुदकमेव वा पयो घृतं वा मरणाद्गोशकृद्रसमेव वा ९१ ॥

में तपाके लालवर्ण सुराको पीवे इस करके शरीर नष्ट होनेसे इस पापसे छूटते हैं ९० गोमूत्र अथवा जल गौका गोबरका रस इन्होंमें से कोई एकको अग्निवर्ण करके पीवे और इससे मरजावे तो शुद्ध होवे ९१ गो आदिके रोमसे वस्त्र बनाके

कृष्णगौका घीगोबर ३

म. स्मृ. टी. भा. ४२१

पहिरे ऊन जटाधारण करिके ऊपर सुरापात्र चिन्हसे
युक्त चाउर का कण तिलकी खरी इन दोनोंमेंसे
एकको रात्रिमें एकवार एक वर्ष तक भोजन क
रै तो सुरापानके दोषसे छूटै यह प्रायश्चित्त बि
ना जानके गौण सुरापानमें जानना ९२ मद्यके

कणान्वा भक्षयेदब्दं पिण्या
कं वा सकृन्निशि सुरापाना
पनुत्यर्थं बालवासा जटी ध्व
जी ९२ सुरा वै मलमन्नानां
पाप्मा च मल उच्यते तस्माद्ब्रा
ह्मणराजन्यौ वैश्यश्च न सुरा
म्पिबेत् ९३ गौडी पैष्टी च मा
ध्वी च विज्ञेया त्रिविधा सुरा
यथैवैका तथा सर्वा न पा
तव्या द्विजोत्तमैः ९४ ॥

मलको सुरा कहते हैं इसलिये ब्राह्मण क्षत्रिय
वैश्य सुराको न पीवै ९३ गौडी माध्वी पैष्टी तीन
प्रकारकी सुरा है क्रमसे गुडसे भई मधुसे भई पि
सानसे भई जैसी एक तैसीही तीनों इस लिये
ब्राह्मण तीनोंको न पीवै ९४ ॥

मद्य अर्थात् गौडी माध्वी पैष्टी तीनोंको छोडकर ग्यारह प्रकारके जो पुलस्त्य ऋषिने कहा है सो सब ग्यारहोंको गिनाते है कटहर दाख महुआ खजूर ताड इख मधु टंक मद्धी अर्थात् दारुका भेद मिरा अर्थात् द्रव्य विशेष नरियर इन्होंसे बनाया हुआ मांस हुआ आसाव अर्थात् मद्यका अवस्था

यक्षरक्षः पिशाचान्नं मद्यं मांसं सुरासवं तद्ब्राह्मणेन नात्तव्यं देवानामश्नता हविः ९५
अमेध्ये वा पतेन्मत्तो वैदिकं वाप्युदाहरेत् अकार्यमन्यत्कुर्याद्वा ब्राह्मणो मदमोहितः ९६
यस्य कायगतं ब्रह्म मद्येनाप्लाव्यते सकृत् तस्य व्यपैति ब्राह्मण्यं शूद्रत्वं च स गच्छति ९७ ।

विशेष इन सभकी इन राक्षस पिशाचका अन्नकर तेहे इसलिये देवतो की हविष्यको भोजन करने वाला ब्राह्मण इन सभको न पीवे ९५ मद्यपानसे मोहित होके ब्राह्मण अपवित्रमें गिरेगा वेदके मंत्रोको कहेगा नहीं करने योग्य वस्तुको करेगा इसलिये मद्यको न पीवे ९६ जिस ब्राह्मणके हृदयमें स्थित वेद एक भीरभी मद्यपान करनेसे हूं

म॰ देगा उसब्राह्मणका ब्रह्मतेज नष्ट होगा और वह
स्मृ॰ टी॰ ब्राह्मण शूद्रभावको प्राप्तहोगा ९७ यह सुरापा
भा॰ नका विचित्र प्रायश्चित्तकहा इसके अनंतर सोना
४२ चोरानेके प्रायश्चित्तकोकहैंगे ९८ ब्राह्मण सोना

४२७

एषा विचित्राऽभिहिता सुरापा
नस्य निष्कृतिः अत ऊर्द्ध्वं प्र
वक्ष्यामि सुवर्णस्तेय निष्कृ
तिं ९८ सुवर्णस्तेयकृद्विप्रो
राजान मभिगम्यतु स्वकर्म
ख्यापयन् ब्रूया न्माभवाननु
शास्त्विति ९९ गृहीत्वा मुस
लं राजा सकृद्धन्यात्तु तं स्वय
म् वधेन शुध्यति स्तेनो ब्रा
ह्मणस्तपसैव तु १०० ॥

चोराके राजाके पास जाकर कहै कि मैं सोना चो
रानेवाला हूं दंड मेरा आपकरें ९९ राजा मूसरको
लेकर आप एकवेर उसको मारे वधसे शुद्ध होता
है और ब्राह्मण तपसे शुद्धहोताहै १०० ॥

तपसे सोना चोरानेके पापको हर करनेकी इच्छा कर
न संते वल्कका खंड पहिरके वनमें ब्रह्महत्याके व्रत
को करै ९८ इन व्रतोंकरके चोरीके पापको ब्राह्मण
हर करै मातृगमनके पापको आगे जो व्रत कहेंगे उ
से हरकरै ९९ मातृगमन करने वाला अपने पाप

तपसा पनुत्सुत्स्व सुवर्णस्ते
यजं मलं चीरवासा द्विजोरण्ये
चरे द्रुमहणो व्रतम् ९८ एतै
र्व्रतै रपोहेत पापं स्तेयकृतं
द्विजः गुरुस्त्री गमनीयं तु
व्रतै रेभि रपानुदेत् ९९ गुरु
तल्पभिभाष्यैन स्तप्ते स्वप्याद
योमये सूर्मी ज्वलंती स्वाश्लि
ष्य मृत्युना स विशुध्यति १००

को कहके तप्त लोहके शयनमें सोवे अथवा लोह
की स्त्री बनाके अग्निमें तपाके उसका आलिंगन क
रै अर्थात् जिस प्रकारसे माताके शरीरको अपने
शरीरसे मिलन किया रहा उसी प्रकारसे मिले १००
अथवा लिंग और वृषण अर्थात् पेल्हड इन दोनों

म·
स्मृ· टी·
भा·
४२८

428

को काटके अपनी अंजलीमें रखके नैरृति दि
शा अर्थात् दक्षिण पश्चिम का कोनमें सीधा च
ला जावै जब तक न मरै १०४ अथवा खट्वाङ्ग अ
र्थात् खटिआका एक अंग धारण किए हुए वस्त्र
का खंड पहिरे हुए नख लोम केश दाढ़ी मोछको
रक्खे हुए जन रहित वनमें निश्चिंत होकर एक·

स्वयं वा शिश्नवृषणा वुत्कृ·
त्याधाय चाञ्जलौ नैरृतीं दि·
शमातिष्ठेदानिपातादजि
ह्मगः १०४ खट्वाङ्गी चीरवासा
वा श्मश्रुलो विजने वने प्रा
जापत्यं चरेत्कृच्छ्रमब्दमेकं
समाहितः १०५ चान्द्रायणं वा
त्रीन्मासानभ्यस्येन्नियतेन्द्रियः
हविष्येण यवाग्वा वा गुरुत
ल्पापनुत्तये १०६ ॥

वर्ष तक प्राजापत्य व्रतको करै यह प्रायश्चित्त अ
ज्ञानसे अपनी भार्या जानीके मातृगमनमें जान·
ना १०५ अथवा इंद्रियोंको जीतकर हविष्य अथवा
यवकी लपसी भोजन करता संते मातृगमनके
पापको दूर करनेके लिये तीन मासतक चान्द्रा·
यण व्रतको करै यह प्रायश्चित्त असाधी अथवा दू

सरी वर्णकी गुरुभार्याके गमन करनेमें
जानना १०६

इन व्रतोंसे महापातकी लोग अपने पापको हर
करै और उपपातकी लोग आगे जो व्रत कहैंगे उ
से अपने पापको हरकरै ९७ उपपातकी गौका
मारने वाला एक मास तक यवका सतुआ पी
वै नख लोम केस आदिको न हरनी और छुरासे

एतैर्व्रतैरपोहेयु र्महापातकि
नो मलं उपपातकिनस्त्वेव
मेभि र्नानाविधैर्व्रतैः ९७ उ
पपातकसंयुक्तो गोघ्नो मासं
से यवान्पिबेत् कृतवापो व
सेद्गोष्ठे चर्मणा तेन संवृतः
९८ चतुर्थकाल मश्नीया
दक्षार लवनं मितं गोमूत्रेण
चरेत्स्नानं द्वौ मासौ नियतें
द्रियः ९९ ।

कटायके गौके चर्मसे वेष्टित होके गौके स्थानमें
वासकरै ९८ एकदिन उपवास करके दूसरे दि
न पहिली वेर थोडा भोजन करै इंद्रियोंको जीते
हुए दो मासतक गोमूत्रसे स्नानकरै ९९ दिनमें

म॰
स्म॰ टी॰
भा॰
४२९

गौके पीछे चले खडे होकर गौके खुरसे उडती । धूलीको पीवै सेवाकरत संते नमस्कार करके रात्रिमे वीरासनसे बैठे ११ गौ खडी हो तो आपभी मत्सर अर्थात् दूसरेके शुभमें द्वेषसे रहित होके इंद्रियोंको जीते हुए खडा बैठे गौ चले तो आपभी

429

एतेश्चैते द्विजेहेषु महापातकिनो मलें उपपातकिन स्त्वेव मेभिर्नानाविधैव्रतैः १० उपपातक संयुक्तो गोघ्नो मासं यवान्पिवत् कृतवापो वसेद्गोष्ठे चर्मणा तेन संवृतः ११ चतुर्थकाल मश्नीया दक्षार लवणं मितं गोमूत्रेण चरेत्स्नानं द्वौ मासौ नियतेन्द्रियः ११२

इसके पीछे चले गौ बैठी तो आपभी बैठे ११ रोग और चोर बाघ आदिभयके कारण इन्होंसे युक्त गौ हो अथवा गिरीहोया कादवमे फसी । हो इसको उपायसे यथाशक्ति छोडावे ११२ ॥

गर्मी वर्षा शीतमें अतिवायु चलनेमें यथाशक्ति
गौकी रक्षा बिना किए अपनी रक्षा न करै
॥३॥ अपने अथवा दूसरेके गृहमें अथवा खलिहा
नमें या खेतमें भक्षण करती गौको न कहै और

उष्णे वर्षति शीतेवा मारुते ।
वाति वा भृशम् न कुर्वीतात्म
नस्त्राणं गोरकृत्वा तु शक्ति
तः ॥३॥ आत्मनो यदि वान्येषा
गृहे क्षेत्रेथवा खले भक्षयंती
न कथयेत्पिबंतं चैव वत्सकं
॥४॥ अनेन विधिना यस्तु गो
व्रती गामनुगच्छति स गोहत्या
कृतं पापं त्रिभिर्मासैर्व्यपो ।
हति ॥५॥

बछवाको पिलाती हो तो भी न कहै ॥४॥ गोका
मारने वाला मनुष्य इस विधिसे गोके पीछे चले
तो तीन मासमें गो हत्यासे छूटै ॥५॥ सुंदर प्रका
रसे व्रत करके एक बयल और दस गोको देवे ।

म·
स्मृ· टी·
भा·
४३·

कदाचित् इतना नहो सके तो वेद पढे हुए ब्राह्म
णको सब धन देवै ॥१६॥ आगे जो अवकीर्ण कहे
गे उसको छोड़कर ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ये उप
पातकसे युक्त होवे तो शुद्धिके लिये यही व्रत·

430

हुत्वैभेकादशागांश्च दद्यात्स्न
चरितव्रतः प्रविश्यमाने सर्वे·
ह्ल वेदविद्भ्यो निवेदयेत् ॥१६॥
एतदेव व्रतं कृच्छ्रं रुपपात·
किनो द्विजाः अवकीर्णव·
र्ज्ये शुद्ध्यर्थं चांद्रायणमथा
पि वा ॥१७॥ अवकीर्णीत्व का
णेन गर्दभेन चतुष्पथे पा
कयज्ञविधानेन यजेत नि·
र्ऋतिं निशि ॥१८॥

करै अथवा चांद्रायण व्रतको करै ॥१७॥ अवकीर्णी
चतुष्पथ अर्थात् चौरस्तेमें पाक यज्ञ विधानक
रके रात्रिमें निर्ऋति देवताके निमित्त काणा ग
दहासे यागकरै ॥१८॥ ॥

अग्निमें विधिपूर्वक समं सिंचन् मारुतः इसमंत्रसे वा
यु: इंद्र गुरु अग्नि इन्होंको घीसे आहुतिदेवै ११९ ब्राह्म
ण क्षत्रिय वैश्य ये तीनोंवर्ण व्रतमें स्थितहैं और इच्छा
से वीर्यपातकरै तो व्रतका लंघन भया इसवातको

हुत्वाग्नौ विधिवद्धोमा नंततश्च
समित्यृचा वातेंद्र गुरुवन्हीनां
जुहुया त्सर्पिषाहुतीः ११९
कामतो रेतस सेकं व्रतस्थस्य
द्विजन्मनः अतिक्रम व्रतस्या
हु र्धर्मज्ञा ब्राह्मवादिनः १२० मा
रुतं पुरुहूतं च गुरु पावक
मेवच चतुरो व्रतिनो भ्येति ब्रा
ह्मं तेजोव कीर्णिनः १२१ ॥

धर्मजाननेवाले ब्रह्मवादियोंने कहा १२० अवकीर्ण
अर्थात् ब्रह्मचर्यावस्थामें वीर्य गिरानेवालाका ब्रह्म
तेज वायु इंद्र गुरु अग्नि इन चारोंके पास जाताहै १२१
इसपापको छोड़नेके लिये गदहाका चाम पहिर

म.
स्मृ. टी.
भा.
४३१

के अपने कर्मको कहता संते सात घरसे भिक्षा मांगे १
२ इस भिक्षाको एकबेर भोजन करता संते सायं प्रातः
मध्याह्न कालमें स्नान करता संते रहै तो एक वर्षमें
शुद्ध होवे ॥१३॥ जाति भ्रंश करने वाले कर्मोंमे कोई

431

एतस्मि त्रेनसि प्राप्ते वसित्वा ग
ईभाजिने सप्तागारे चरेद्भैक्ष्यं
स्वकर्म परिकीर्त्तयन् ॥१२॥ तेभ्यो
लब्धेन भैक्ष्येण वर्त्तयेत्रैकका
लिकम उपस्पृशं त्रिषवणं त्व
ब्देन स विशुध्यति ॥१३॥ जातिभ्रं
शकरं कर्म कृत्वान्यतम मिच्छ
या चरेत्सांतपनं कृच्छ्रं प्राजा
पत्य मनिच्छया ॥१४॥

एक कर्मको इच्छासे करके सांतपन कृच्छ्र करै और
विना इच्छासे किया हो तो तो प्राजापत्य व्रत करै ब्रतों
का लक्षण आगे कहेंगे ॥१४॥

सेकरी करण कर्मोमें और अपात्री करण कर्मो॰
मे इच्छासे कोई एक कर्म करनेमें एक मास चां
द्रायण व्रतकरे और मलिनी करण कर्मोमें इच्छा
से कोई एक कर्म करनेमें तीन दिन यवकी ल
पसी भोजन करे १२५ अपने कर्ममे स्थित क्षत्रिय

संकरापात्रकृत्यासु मासं शो
धनमैन्दवं मलिनी करणी
येषु तप्तः स्याद्यावकै स्त्र्यहं
१२५ तुरीयो ब्रह्महत्यायाः
क्षत्रियस्य वधेः स्मृतः वैश्ये
ष्टमांशो वृत्तस्थे शूद्रे ज्ञेय
स्तु षोडशः १२६ अकामतस्तु
राजन्यं विनिपात्य द्विजोत्त
मः वृषभैक सहस्त्रागा दद्या
त्सु चरित व्रतः १२७ ॥

वैश्य शूद्र इन्होंके वधमें ब्रह्महत्या व्रतका चतर्थांश
अष्टमांश षोडशांश व्रत क्रमसे जानना ये सभव
न इच्छासे कर्म करनेमें जानना १२६ विना इच्छा
से क्षत्रियका वध करके ब्राह्मण एक वर्षतक
सहित हजार गो ब्राह्मणको देवे १२७ अथवा ज॰

दा धारण किए हुए नियमसे ग्रामके बाहर वृक्षके
मूलमें वास करते सेते ब्रह्महत्याका व्रत तीन व
र्षतक करै इच्छा रहित वधमें यह जानना १२८
अपने कर्ममें स्थित वैश्यका वध करके ब्राह्मण
एक वर्षतक ब्रह्महत्याकी व्रतको करै अथवा ह

अहौ चरेद्वा नियतो जटी ब्र
ह्महणो व्रतं वसन् दूरतरे
ग्रामा द्वृक्षमूल निकेतनः
२८ एतदेव चरेदब्दं प्रायश्चि
त्तं द्विजोत्तमः प्रमाप्य वैश्यं
वृत्तस्थं दद्याच्चैकशतं गवां
२९ एतदेव व्रतं कृत्स्नं षण्मा
सा च्छूद्रहा चरेत् वृषभैका
दशावापि दद्या द्विप्राय गाः
सिताः १३० ॥

त्याका व्रत तीन वर्ष तक करै इच्छा रहित वधमें
यह जानना २९ शूद्रका वध करने वाला ब्राह्म
ण छः मास ब्रह्महत्या व्रतको करै एक बैल श्वेत व
र्ण दश गौ ब्राह्मणको देवै इह बिना इच्छासे वधमें
जानना इन सभ व्रतकरनेमे कपालध्वजाको छोड
देना १३०

बिलाव नेउर नीलकंठ मेडुका कुक्कुर गोह उ
लूकोआ इन्होंमें कोई एकका वधकरके शूद्रह
त्या व्रतोंको करै ३। अथवा त्रिरात्र दुग्धपीवै इस
मैं अशक्त हो तो तीन रात चार कोश गमन
करै इसमें भी अशक्त हो तो तीन रात नदीमें।

मार्जार नकुलौ हत्वा चाषं
मण्डूकमेव च श्वगोधोलूक
काकांश्च शूद्रहत्या व्रतं चरे
त् ३। पयः पिबेत्त्रिरात्रं वा
योजनं वा ध्वजो व्रजेत् उप
स्पृशेत्स्रवंत्यांवा सूक्तं वा।
ऽब्दैवतं जपेत् ।३। अभ्रिका
र्ष्णायसीं दद्या सर्पं हत्वा।
द्विजोत्तमः पलालभारकं
षंढे सीसकं चैव माषकं ।४।

स्नानकरै इसमेंभी अशक्त हो तो आपोहिष्ठा इस
सूक्तका जपकरै यह बिना इच्छासे वधमें जान
ना ।३। सर्प वध करके चोखा आगका भागवाला
लोहदंड ब्राह्मणको देवै और नपुंसकको वधक
रके एकभार पुवरा और एक मासा सीसा इनदो
नोंको देवै ।४। सूअर तितिर खग्गा क्रौंच अयो

म. स्मृ. टी. भा. ४३३

न् रक्त मेंड्वाला करोङ्कलकें शाह करने पानीमे
गमन करने वाला इन्होंका वधकरके क्रमसे ए
क घडाभर घी एकद्रोण तिल दोवर्षका वछवा
तीन वर्षका वछवा को ब्राह्मणको देवे ।३४ हं
स बलाका अर्थात् विष केटिका पाहि विशाष
बगुला मोर वानर बाज भास इन सभोंमेसे को

घृतकुंभे वराहेतु तिलद्रो-
णं तु तित्तिरौ शुके द्विहाय
ने वत्से क्रौंचे हत्वा त्रिहाय
ने ३४ हत्वा हंसे बलाकां
च बकं बर्हिणमेवच वान
रं श्येन भासौ च स्पर्शयेद्ब्रा
ह्मणाय गाम ३५ वासो दद्या
द्धयं हत्वा पंचनीलान्वृषा
न्गजं अजमेषा वनड्वाहं
खरं हत्वैक हायनम ३६ ।

ई एकको वध करके क्रमसे वह पांच बैल ब्राह्म
णको गौ देवे ।३५ घोडा हाथी इन्होंके वध करके
क्रमसे वस्त्र पांच बैल ब्राह्मणको देवे बकरा भेडा
इन दोनोंमेसे कोई एकका वधकरके एक बैल
देवे गदहा का वध करके एक वर्षका वछवा
देवे ।३६

कच्ची मांसका भोजन करने वाली बाघ आदिका
वध करके दूध देनी गौको देवै और कच्ची मांसको
न भोजन करनेवाले मृग आदिको वध करके
बछिया देवै ऊंटका वधकरके एकरत्ती सोना दे

क्रव्यादांस्तु मृगान् हत्वा धे
नुं दद्यात्पयस्विनीं अक्रव्या
दान्वत्सतरीमुष्ट्रं हत्वा तु कृ
ष्णलं १३७ जीनकार्मुकबस्ता
वीन्पृथग्दद्याद्विशुद्धये चत
र्णामपि वर्णानां नारीर्हत्वा
नवस्थिता १३८ दानेन वध
निर्णेकं सर्पादीनामशक्नु
वन् एकैकशश्चरेत्कृच्छ्रं
द्विजः पापापनुत्तये १३९

वै १३८ ब्राह्मण आदि चारो वर्णकी व्यभिचारिणी
स्त्रीका वधकरके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र क्रम
से चर्मपुट धनुष बकरा भेड़ाको देवै १३८ दान कर
के संपूर्ण पापको छोड़ानेमें असमर्थ हो तो एक प

के वधमें एक एकमें

म॰ स्म॰ टी॰ भा॰ ४३४

क कृच्छ्र व्रत करे १३९ हाड सहित जीव अर्थात
गिरगिटान आदि सहस्त्रके वधमें और विना हाड
के जीव अर्थात डुंडुभ आदि गाडी भरके वधमें शू
द्र हत्या व्रतको करे १४० हाड सहित जीवके वध
में ब्राह्मण को कछु देवे और हाड रहित जीवके

अस्थिमतां तु सत्त्वानां सह
स्रस्य प्रमापणे पूर्णे चानस्य
नस्थ्नां तु शूद्रहत्याव्रतं चरेत्
॥ किंचिदेव तु विप्राय दद्या
दस्थिमतां वधे अनस्थ्नां चै
व हिंसायां प्राणायामेन शु
ध्यति ४१ फलदानां तु वृक्षा
णां छेदने जप्यमृक्शतं
गुल्मवल्लीलतानां च पुष्पि
तानां च वीरुधां १४२ ॥

कुब्जक आदि वल्ली अर्थात

वधमें प्राणायाम करे १४१ फलके देनेवाले वृक्ष
अर्थात आम्र आदि गुल्म अर्थात गुडूचि आदि लं
ता अर्थात वृक्षपर चढने वाली जो वीरुध अर्थात
कोहडा आदि इन्होंमेंसे एक एकके छेदनमें गाय
त्री आदि ऋचाका सौ बार जप करना १४२ ॥

फूले

अन्न आदिमें उत्पन्न जीव और गुड आदि रसमें उत्प
न्न जीव फल पुष्पमें उत्पन्न जीव इन्होंके वधमें
घृत भोजन करना ।४४। जाननेसे जो अन्न उत्पन्न
होताहै साठी आदि और आपसे वनमें जो उत्पन्न
होताहै तीनी आदि इन्होंका प्रयोजन रहित ह

अन्नाद्यजानां सत्वानां रसजा
नां च सर्वशः फल पुष्पोद्भ
वानां च घृत प्राशो विशोध
नं ४४ कृष्टजानामोषधीनां
जातानां च स्वयं वने वृथा
लंभेनुगच्छेद्गां दिनमेकं
पयोव्रतः ४५ एतैर्व्रतैरपो
ह्यं स्यादेनो हिंसा समुद्भव
ज्ञाना ज्ञानकृतं कृत्स्नं श्रु
णुतानाद्य भक्षणे ४६ ॥

दनमें एकदिन दूधपीके रहै और गौके पीछे ग
मन करै ।४५। जानके अथवा विना जानके किय
जो जीव वध उस पापको इन व्रतों करके दूर कर
ना योग्यहै और भोजनके योग्य जो वस्तु नहीहै
उसके भक्षणमें प्रायश्चित्तको सुनो ।४६। विना

म०
स्मृ० टी०
भा०
४२५

435

जानके गौड़ी माध्वी सुराको पीवै तो पुनः संस्कार
से शुद्ध होताहै और जानके पीवै तो मरणसे शुद्ध
होताहै यह शास्त्रकी मर्यादाहै ।१४६। ऐसी सुरा
पात्रमें स्थित गंध रहित जलके पीनेमें शंखपु

और मद्यपात्रमें २

अज्ञानाद्वारुणीं पीत्वा संस्का
रेणैव शुध्यति मतिपूर्वमनि
र्देश्यं प्राणान्तिकमिति स्थि
तिः ।१४६। अपः सुराभाजन॰
स्था मद्यभाण्डस्थितास्तथा ॰
पंचरात्रं पिबेत्पीत्वा शंखपु
ष्पीशृतं पयः ।१४७। स्पृष्ट्वा द
त्वा च मदिरां विधिवत्प्रतिगृ
ह्य च शूद्रोच्छिष्टाश्च पीत्वापः
कुशवारि पिबेत्त्र्यहं ।१४८ ॰

ष्पी औषधी पके दूधको पांच रात पीवै ।१४७ सुराके
छूके देके लेके और शूद्रका जूठा जलको पीके कु
शोंसे पके जलको तीन दिन पीवै ।१४८ ॥

सोमयागको करने वाला ब्राह्मण सुरापीने वालेका
गंधको सूंघके जलमें तीनवेर प्राणायाम करके घी
को भोजन करनेसे शुद्ध होताहै ॥४॥ अज्ञानसे वि
ष्टा मूत्र सुरासे छूई गई वस्तु इन तीनोंमेंसे कोई

ब्राह्मणस्य सुरापस्य गंध मा
घ्राय सोमपः प्राणानप्सु त्रि
रायम्य घृतं प्राश्य विशुध्यं
ति ॥४॥ अज्ञानात्प्राश्य विण्मू
त्रं सुरा संसृष्टमेवच पुनः सं
स्कार मर्हंति त्रयोवर्णा द्विः
जातयः ॥५॥ वपनं मेखला दं
डो भैक्ष्यचर्या व्रतानि च नि
वर्तंते द्विजातीनां पुनः सं
स्कार कर्मणि ॥६॥ ॥

एकको भोजन करके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य पुनः
संस्कारके योग्य होतेहै ॥५॥ पुनः संस्कारमें मुंडन
मेखला दंड भिक्षा ये चारो नही पाते ॥६॥ भोजन
करनेके योग्य जिसका सूत्र नहीहै इसका सूत्र औ

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
४३९

436

र स्त्री शूद्र इन्होंका जूठा अन्न भक्षणके योग्य नहीं
जो मांस इन्होंका भक्षण करके यवोंके सत्तुओंको
सातदिन पीवै १५२ शुक्त अर्थात् स्वभावसें मधुर
रसकालसे जलमें वास आदिसे आमिल होना क
षाय अर्थात् बहेड़ा आदि ये पवित्रभी हो तो इन॰

अभोज्यानां च भुक्तान्नं स्त्री॰
शूद्रोच्छिष्टमेव च जग्ध्वा मां
स मभक्ष्यं च सप्तरात्रं यवान्
पिबेत् १५२ शुक्तानि च कषा
यांश्च पीत्वा मेध्यान्यपि द्विज॰
स्तावद्भवत्यप्रयतो यावत्तन्न
व्रजत्यधः १५३ विड्वराह खरो॰
ष्ट्राणां गोमायोः कपिकाक
योः प्राश्य मूत्र पुरीषाणि द्वि
जश्चान्द्रायणं चरेत् १५४ ॥

को पीके तब तक अशुद्ध रहताहै तब तक ये सब
पचैन १५३ ग्रामका शूकर गदहा ऊंट सियार वान
र कौआ इन्होंका मूत्र और विष्ठाको भो जन कर
के ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य चान्द्रायण व्रतको करै
१५४ ॥

रक्खी मांस भूमिमें उत्पन्न छत्राक अर्थात् कुकु
रमुत्ता और भक्षणके योग्य है अथवा नहीं है
इस प्रकार से जो मांस जानी नही गई है वह
मांस सूना अर्थात् वधस्थानमें रक्खी हो इन्हो
मेंसे कोई एकके भक्षणमें पूर्वकथित व्रतको
करै ५५ कच्ची मांसके भोजन करने वाले वा

अज्ञातानि प्रशस्ता मांसानि
भौमानि कवकानि च अज्ञा
तं चैव सूनास्थं मेतदेव व
तं चरेत् ५५ क्रव्याद शूक
रोष्ट्राणां कुक्कुटानां च भक्ष
णे नरकाक खराणां च त
प्तकृच्छ्रं विशोधनम् ५६ मा
सिकान्नं च योऽश्नीयाद सम
वर्तको द्विजः स त्रीण्यहा
न्युपवसे देकाहं चोदके व
सेत् ५७

कुक्कुर ग्रामका सूकर ऊंट ग्रामका कुक्कुट मनु
ष्य आदि ग्रामका सूकर ऊंट ग्रामका कुक्कुट मनुष्यके मांसके
भक्षणमें तप्तकृच्छ्र व्रतको करै ५६ ब्रह्मचारी
मासिक श्राद्धके अन्नको भोजन करके तीन दि
न उपवास करै और एक दिन जलमें वास करै ५७

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
४३२

437

ब्रह्मचारी अज्ञानसे मधु और मांस इन दोनोंमें
से एकका भक्षण करके प्राजापत्य कृच्छ्रको
करके व्रत शेषको समाप्ति करै ।५८ बिलाबि
कौआ मूसा कुत्ता नेउर इन्होंमेंसे कोई कोई ए-
कका जूठा वस्तुका भोजन करके वह सुवर्च-
ला केश और बडे कीडे इन दोनोंमेंसे कोई एक

ब्रह्मचारी तु योऽश्नीयान्मधु
मांसं कथंचन स कृत्वा प्रा-
कृतं कृच्छ्रं व्रतशेषं समाप-
येत् ।५८ बिडालकाकाखूं-
च्छिष्टं जग्ध्वा श्वनकुलस्य च
केशकीटावपन्नं च पिबेद्ब्र-
ह्म सुवर्चलाम् ।५९ अभोज्य-
मन्नं नात्तव्यमात्मनः शुद्धि-
मिच्छता अज्ञानभुक्तं तूत्ता-
र्यं शोध्यं वाप्याशु शोधनैः ६०

से मिली हुई वस्तुको भोजन करके वह सुवर्चला
औषधीसे पक्व जलको पीवै ।५९ अपनेको शुद्धि
का इच्छा करने वाला भोजनके योग्य जो वस्तु न
हीं है उसको भोजन न करै और अज्ञानसे भोजन
किए हो तो वमन अर्थात् उलटी करै यह न होस
के तो प्रायश्चित्त करके अपनी आत्माको शुद्ध जल
हो करै ६०

भोजनके योग्य जो वस्तु नहीहै उसके भोजनमें यह प्रायश्चित्त कहा चोरीके पापका प्रायश्चित्त को सुनो ११ ब्राह्मणके गृहसे इच्छाकरके धान्य को चोराके कृच्छ्रव्रतको एकवर्षतक शुद्धिके लिये ब्राह्मण करै परंतु देशकाल द्रव्य परिमा

एषोनाद्यादनस्योक्तो ब्रताना
विविधो विधिः स्तेयदोषा-
पहर्तॄणां ब्रतानां श्रूयतां
विधिः ११ धान्यान्नधनचौ
र्याणि कृत्वा कामाद्द्विजो
त्तमः स्वजातीयगृहादेव
कृच्छ्राब्देन विशुध्यति १२ म
नुष्याणां तु हरणे स्त्रीणां
क्षेत्रगृहस्य च कूपवापीज-
लानां च शुद्धिश्चान्द्रायणं स्मृ
तं १३

ण स्वामि गुण आ दिके अपेक्षा करके अधिकभी जानना इसी रीतिसे आगे जो कहेंगे उसमें भी जानना १२ मनुष्य स्त्री खेत गृह बावली कूपोंका जल इन्होंके हरणमें चांद्रायण व्रत करना १३ थोड़ी मोलवाली और थोड़ी प्रयो

जनेवाली वस्तुके हरणमें सांतपन कृच्छ्र करे
और चोराई वस्तु जिसकी हो उसको देवे यह वा
त सब चोरीके प्रायश्चित्तमें जानना १६४ भक्ष्य
अर्थात् चबेना आदि भोज्य अर्थात् भात आदि
यान अर्थात् सवारी शय्या आसन पुष्प मूल ।

द्रव्याणामल्पसाराणां स्ते
यं कृत्वान्यवेश्मतः चरेत्सा
न्तपनं कृच्छ्रं तन्निर्यात्यात्म
शुद्धये ६४ भक्ष्यभोज्यापह
रणे यानशय्यासनस्य च पु
ष्पमूलफलानां च पंचग॰
व्यं विशोधनं ६५ तृणका॰
ष्ठद्रुमाणां च शुष्कान्नस्य
गुडस्य च चैलचर्मामिषा॰
णां च त्रिरात्रं स्यादभोजनं
६६

फल इन्होंमें से कोई एकके हरणमें पंचगव्य अ
र्थात् गौका दूध दही घी मूत गोबरको पीवे ६५
तृण काष्ठ सूखा हत अन्न गुड वस्त्र चाम मांस इन्हों
मेंसे कोई एकके चोरानेमें तीनदिन उपवास क
रना ६६

मणि मोती मोंगा तामा रूपा लोहा कांसा पत्थ
र इन्होंमेंसे कोई एकके चोरानेमें बारह दिन तक
चाउरका कणको भोजन करना १७ कपास की
डा ऊर्णा इन्होंसे भए वस्त्र एक खुरवाले पशु प
क्षी गंध ओषधी रस्सी इन्होंमेंसे एकके चोरानेमें
तीन दिनतक दूध पीना यहां सब वस्तुके हरण
में एक रूप प्रायश्चित्त कहा सो कैसे बने ऐसी

मणिमुक्ता प्रवालानां ताम्र-
स्य रजतस्य च अयः कांस्यो
पलानां च द्वादशाहं कणा
न्नता १७ कर्पास कीटजोर्णा
नां द्विशफैकशफस्य च प
क्षि गंधौषधीनां च रज्वाश्चै
व त्र्यहं पयः १८ एते व्रते व
पोह्येन पापेस्तु शकते द्विजः
अगम्यागमनीय ऽ व्रते रे
भि रपाकृतम् १९ ॥

आशंका भई इसका समाधान यह है कि चोराई
वस्तुको तो स्वामीको दिया और चोरी तो सभकी
एकही है इस लिये एक रूप प्रायश्चित कहा इसी
रीतिसे चोरीमें जहां एक रूप प्रायश्चित्त है तहां
जानना १८ इन व्रतोंसे चोरीके पापका हरकरे
और गमनके योग्य जो स्त्री नहीं है उसके गमन
में जो पाप है उसको आगे जो व्रत कहेंगे उससे ह

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
अ॰ ११

439

रकरै ६९ सगी बहिन मित्र पुत्र इन्होंकी स्त्री कुमा
री चांडाली इन्होंमेंसे कोई एकके साथ अज्ञानसे रम
ण करके मातृगमनका प्रायश्चित करै ७० मोसी
की बेटी और मोसी फूफूकी बेटी सगे भाईकी ल
डकी इन्होंमेसे कोई एकके साथ रति करै तो चां

गुरुतल्पव्रतं कुर्याद्रेतः
सिक्त्वा स्वयोनिषु सख्युः पु
त्रस्य च स्त्रीषु कुमारीष्वन्त्य
जासु च ७० पैतृष्वस्रेयीं भगि
नीं स्वस्रीयां मातुरेव च मा
तुश्च भ्रातुस्तनयां गत्वा चा
न्द्रायणं चरेत् ७१ एतास्तिस्र
स्तु भार्यार्थे नोपयच्छेत्तु ब
द्धिमान् ज्ञातित्वेनानुपेया
स्ताः पतति ह्युपयन्नधः ७२

न्द्रायणव्रतकरै परन्तु ये सभ अज्ञानसे एक वेर पर
पुरुषके साथ रति किए हो तब जानना कौन कि
प्रायश्चित थोडाहै इसलिये यह कहतेहैं ७१ बुद्धि
मान पुरुष पूर्वकथित भाईकी लडकीको छोडक
र तीनोंकिसाथ विवाह नकरै और करै तो नरकमें
जाताहै ७२

गौको छोड़कर घोड़ी आदि पशु और रजस्वला स्त्री
और कोई एक संबंधसे रहित स्त्री और जल इन्होंमें
वीर्यपात करके सांतपन कृच्छ्र करै ।७३। गाडी जल
दिन इन्होंमें पुरुष अथवा स्त्रीके साथ रति करके

अमानुषीषु पुरुष उदक्यायाम
मयोनिषु रेतः सिक्त्वा जले च
व कृच्छ्रं सांतपनं चरेत् ७३ ।
मैथुनं तु समासेव्य पुंसि योः
षिति वा द्विजः गोयानेप्सु दि
वा चैव सवासाः स्नानमाचरे
त् ७४ चांडालांत्य स्त्रियोगत्वा
भुक्त्वा च प्रतिगृह्य च पतत्य ज्ञा
नतो विप्रा ज्ञानात्साम्यं तु ग
च्छति ७५

वस्त्र सहित स्नान करै ।७४ अज्ञानसे चांडाली और म्ले
च्छ आदिकी स्त्री इन्होंके अन्नका भोजन करके और
इन्होंसे प्रतिग्रह करके ब्राह्मण पतित होताहै और
ज्ञानसे तो इन्होंके सम होताहै ।७५ परपुरुषमें र

म॰
स॰ टी॰
भा॰
४४॰

440

न स्त्रीको भर्ता एक गृहमें रोकके रक्खे और जो व्रत पुरुषको परस्त्री गमनमें है सो व्रत इस स्त्रीको करावे १७॥ अपने जातिके पुरुषके साथ एकवेर रति करनेसे स्त्री दोषी भई इसका प्रायश्चित्त करके फेर अपने जातिवाले पुरुषके साथ रतिकरे वह स्त्री

विप्रदुष्टां स्त्रियं भर्ता निरुंध्यादेकवेश्मनि यत्पुंसः परदारेषु तच्चैनां चारयेद्व्रतम् १७ साचे त्पुनः प्रदुष्येत्तु सदृशेनोपमंत्रिता कृच्छ्रं चांद्रायणं चैव तदस्याः पावनं स्मृतम् ॥ १७ यत्करोत्येकरात्रेण वृषली सेवनाद्द्विजः तद्भैक्ष्यभुग्जपन्नित्यं त्रिभिर्वर्षैर्व्यपोहति १८ ॥

प्राजापत्य व्रत और चांद्रायण व्रतको करै १७ शूद्रकी स्त्रीके साथ एकरात रति करके ब्राह्मण क्षत्रिय जो पापकरते हैं उनको दूर करनेके लिये तीनवर्ष तक भिक्षामांगके भोजन करता भया जप करता रहे १८ ॥

चारो वर्णोंकी पापका प्रायश्चित्त यह कहा अब पति
तों के साथ संसर्ग करने वालेके प्रायश्चित्तको सुनो
८७ पतितोंके साथ एक वर्षतक एक सवारी अथ
वा एक आसनपर बैठे एक पंक्तिमें भोजन करै तो
उस पुरुषके सम होता है और पतितोंके यज्ञ करावे

एषा पापकृतामुक्ता चतुर्णा
मपि निष्कृतिः पतितैः संप्र
युक्तानामिमाः शृणुत निः
ष्कृतीः ८७ संवत्सरेण पत
ति पतितेन सहाचरन् याज
नाध्यापनाद्यौनान्न तु याना
सनाशनात् ८८ योयेन पति
तेनैषां संसर्गं याति मानवः
स तस्यैव व्रतं कुर्यात्तत्संस
र्गविशुद्धये ८९ ॥

अथवा जनेऊ करा के गायत्री सुनावे अथवा विवा-
ह आदि संबंध करै तो तुरंत उसके सम होता है ८८
जिस पतितके साथ जो संसर्ग करै सो संसर्ग विशुद्ध
के लिये उसीका व्रत करै ८९ सपिंड बांधव बाहर

ज्ञाके ज्ञाति ऋत्विक गुरुके समीपे निंदित दिन-
में सायंकालमें पतितको जल देवै ।८२। दासी जं-
लसे पूर्ण घटको प्रेतकी नाईं पश्चात् दक्षिणमुख
होके पांवसे फेंककाय देवै श्रौर बांधवोंके सहित

पतितस्योदकं कार्यं सपिंडैर्बा
धवैर्बहिः निंदितेहनि सायाह्ने
ज्ञात्यृत्विग्गुरुसन्निधौ ।८२। दा-
सी घटमपां पूर्णं पर्यस्येत्प्रे
तवत्पदा अहोरात्रमुपासीर
न्नशौचं बांधवैः सह ।८३। नि
वर्तेरंश्च तस्मात्तु संभाषण-
सहासने दायाद्यस्य प्रदानं
च यात्रा चैवहि लौकिकी ।
८४

सपिंड लोग एक दिन उपवास करैं ।८३। उस पति
तके साथ बैठना बोलना उसको भाग देना उसके
लोकका व्यवहार श्रौर इन सभको त्याग करैं
।८४

जेठा भाईसे गुण करके अधिकहो तो जेठांशको पावे और जेठा भाईको जेठाई और जेठांशी इनदो नोंकी निवृत्ति होतीहै ८५ जब पतितने प्रायः श्चित्त को किया तब उसके साथ सपिंड लोगज

ज्येष्ठता च निवर्त्तेत ज्येष्ठा वाप्यं च यद्भवेत् ज्येष्ठांशं प्राप्नुया च्चास्य यवीयान् गुणतोऽधिकः ८५ प्रायश्चित्ते तु चरिते पूर्णं कुंभ मपांनवं तेनैव सार्द्धं प्रास्येयुः स्नात्वा पुण्ये जलाशये ८६ सत्वप्सु तं घटं प्रास्य प्रविश्य भवनं स्वकं सर्वाणि ज्ञाति कार्याणि यथा पूर्वं समाचरेत् ८७ ॥

लसे पूर्ण नया घड़ाको पुण्य जलाशयमें स्नान करके फरकाय देवै ८६ वह पतित जलमें घड़ाको डालकर अपने गृहमें प्रवेश करके ज्ञातिके संपूर्ण कार्यको पूर्वकी नाई करे ८७ पतिता स्त्रीमेंभी

म॰ यही विधिहै और पतिता स्त्रीके गृहके समीपमें
स्मृ॰ टी॰ वास देना और भोजन पानी वस्त्रभी देना १८८ वि
भा॰ ना प्रायश्चित्त किए पापियोंके साथ कोई अर्थका
४४२ न करै और जब प्रायश्चित्त कर चुके तब निंदाभी

442

एतदेव व्रतं कुर्य्युर्योषित्सु ।
पतितास्वपि वस्त्रान्नपानं दे
यं तु वसेयुश्च गृहान्तिके १८८
एनस्विभिरनिर्णिक्तैर्नार्थं ।
किंचित्समाचरेत् कृतनिर्णे
जनांश्चैव न जुगुप्सेत कर्हिचि
त् १८९ बालघ्नांश्च कृतघ्नांश्च
विशुद्धानपि धर्मतः शरणा
गतहन्तॄंश्च स्त्रीहन्तॄंश्च न सं
वसेत् १९० ॥

दुमी न करै १८९ बालक उपकार शरणागत स्त्री इन्होंमें
से कोई एकका नाश करने वाला शास्त्रोक्त प्राय
श्चित्त किए भी हो तो उसके साथ न करना १९०।
वास

जिस ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यकी गायत्री विधिसे क
ही नगई हो उसको तीन कृच्छ्र व्रत कराके यथा
विधि फेर जनेऊ करना ॥१९१॥ विरुद्ध कर्म करने
वाला अर्थात् निषिद्ध शूद्र सेवा करनेवाला औ
र वेदको नहीं पढनेवाला ब्राह्मण क्षत्रिय वै

येषां द्विजानां सावित्री नानू
च्येत यथाविधि तांश्चारयि
त्वा त्रीन्कृच्छ्रान्यथाविध्युप
नाययेत् ॥१९१॥ प्रायश्चित्तं चि
कीर्षन्ति विकर्मस्थास्तु ये द्वि
जाः ब्रह्मणा च परित्यक्ता
स्तेषामप्येतदादिशेत् ॥१९२॥
यद्गर्हितेनार्जयन्ति कर्मणा
ब्राह्मणा धनं तस्योत्सर्गेण
शुध्यन्ति जप्येन तपसैव च ॥१९३॥

श्य प्रायश्चित्त करनेकी इच्छा करै तो इनको भी ती
न कृच्छ्र व्रतका उपदेश करना ॥१९२॥ निंदित कर्म
करके जो धन ब्राह्मण अर्जन करते हैं उस धन
के त्यागसे और जप तप करके शुद्ध होता है ॥१९३॥

निश्चिंत होके एक मास तक नित्यही तीन हज़ा
र गायत्रीका जपकरना संते गौके स्थानमें
वास करत दूधका आहार करत असत्प्रतिग्रह
से ब्राह्मण छूटता है १५४ गौके स्थानसे फेर आ
या ऊपर उपवासकरके दुर्बल नम्र ब्राह्मणको

जपित्वा त्रीणि सावित्र्याः स
हस्राणि समाहितः मासं गो
ष्ठे पयः पीत्वा मुच्यते सत्प्र॰
ति ग्रहात् १५४ उपवासकृ
शं तं गोव्रजात्पुनरागतं प्र॰
णतं प्रतिपृच्छेयुः साम्यं सौ
म्येच्छसीति किम् १५५ सत्यमु
क्त्वा तु विप्रेषु विकिरेद्यव सं
गवां गोभिः प्रवर्तिते तीर्थे
कुर्युस्तस्य परिग्रहम् १५६ ॰

भले लोग पूछे कि हे ब्राह्मण हमारे सभके समा॰
न होनेकी इच्छा करते हो का १५५ तब वह ब्राह्म
ण कहे कि फेर असत्प्रतिग्रह न करैंगे सत्य कहे॰
तेहे ऐसा कहके गौके भोजनके लिये घास देवे
उसके दिए घासको गौ भोजन करै तब भले लो
ग उसका ग्रहण करै १५६ ॥

व्रात्योंके यज्ञकराके पिता गुरु आदिसे भिन्न निषि
द्ध दाह आदि मरण श्राद्ध करके और मारण प्रयो
ग करके अहीन नामवाली याग करके तीन कृ
च्छ्र करै १९७ शरणागत त्याग करके वेद पढा
नेके योग्य जो नहीं उसको वेद पढाके एक ब

व्रात्यानां याजनं कृत्वा परे
षामन्त्यकर्म च अभिचार
महीनं च त्रिभिः कृच्छ्रैर्व्यपो
हति १९७ शरणागतं परि
त्यज्य वेदं विप्लाव्य च द्विजः
संवत्सरं यवाहारस्तत्पा
पमपसेधति १९८ श्वसृगा
लखरैर्दष्टो ग्राम्यैः क्रव्या
द्भिरेव च नराश्वोष्ट्रवराहै
श्च प्राणायामेन शुध्यति १९९

र्ष तक यवाका आहार करके रहे १९८ कुत्ता सि
यार गदहा मनुष्य घोडा सूअर ग्रामवासी जो वि
लारि आदि इन्होंमेंसे कोई एक करके काटा गया
पुरुष प्राणायामसे शुद्ध होताहै १९९ कच्ची मां

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
४४४

444

स भोजन करनेवाला और अपांक्त्य अर्थात् एवं जो
कहे आये हैं पंक्तिमें रहने के योग्य नहीं सो एक
मास तक दो दिन उपवास करके तीसरे दिन सा॰
यंकालमें भोजन करै और संहिता का जपकरै
देवकृतस्यैनसोऽवयजनमसि इस आदि आठ मं
त्र करके आठवेर होम करै नित्यही तब शुद्धि हो

षष्ठान्नकालता मासं संहिता
जप एव वा होमाश्च शाकला
नित्यमपांक्त्यानां विशोधनं
२० उष्ट्रयानं समारुह्य खर॰
यानं च कामतः स्नात्वा तु
विप्रो दिग्वासाः प्राणायामे
न शुध्यति २१ विनाद्भिरप्सु
वाप्यार्तः शारीरं सन्निवेश्य
च सचैलो बहिराप्लुत्य गा
मालभ्य विशुध्यति २२ ॥

तो है २० ऊंटसे अथवा गदहासे युक्त जो गाडी आ
दि तिसपर इच्छासे चढके और नंगा होके स्नान
करके प्राणायाम करै २१ उचित मनुष्य विना
जलके विष्टा और मूत्रके त्याग करै अथवा जल
हीमें इस कर्मको करै तो ग्रामसे बाहर जाके न
दी आदिमें वस्त्रसहित स्नान करके गौको छूके

शुद्ध होता है २२

वेदमें कथित नित्यकर्मको न करनेमें और ब्र
ह्मचर्य्य व्रतके लोपमें एक दिन उपवास करना
२·३ ब्राह्मणको हूं ऐसा कहके और बडे लोगों
को तूम ऐसा कहके स्नान और उन्होंको प्रसन्न

वेदोदितानां नित्यानां कर्म-
णां समतिक्रमे स्नातकव्रत
लोपे च प्रायश्चित्तमभोजनं २·
हुंकारं ब्राह्मणस्योक्त्वा त्वंका
रं च गरीयसः स्नात्वा नश्न
न्नहः शेषमभिवाद्य प्रसाद
येत् २·४ ताडयित्वा तृणेन
वापि कंठे वा बद्धवाससा
विवादे वा विनिर्जित्य प्रणि
पत्य प्रसादयेत् २·५ ॥

करके प्रणाम करके एकदिन उपवास करै २·४
ब्राह्मणको तृणसे भी ताडन करके और विवाद
में जीतके वस्त्रसे कंठके बांधिके प्रणाम करके
प्रसन्न करै २·५ ब्राह्मणके वधके लिये शस्त्रको

उठावै और मारै न तो भी सौ वर्षतक नरकमें रह
ताहै और वध करके हजार वर्षतक नरकमें र
हताहै २६ मारनेसे ब्राह्मणके शरीरसे रुधिर पृ
थिवीकी जितनी धूलिके रजको पकडताहै ति

अवगूर्य्य त्वब्दशतं सहस्र मं
भिहत्य च जिघांसया ब्राह्म
णस्य नरकं प्रतिपद्यते २६
शोणितं यावतः पांसून्संगृ
ह्णाति महीतले तावन्त्यब्द
सहस्राणि तत्कर्ता नरके व
सेत २७ अवगूर्य्य चरेत्कृच्छ्र
मतिकृच्छ्रं निपातने कृच्छ्रा
तिकृच्छ्रौ कुर्वीत विप्रस्योत्पा
द्य शोणितं २८ ॥

तिने हजार वर्षतक मारने वाला नरकमें वास क
रताहै २७ ब्राह्मणके मारनेके लिये शस्त्र उठाके
कृच्छ्र व्रत करै मारनेमें अतिकृच्छ्र व्रत करै मारने
में अतिकृच्छ्रव्रत करै और रुधिर निकारनेमें कृच्छ्र
अतिकृच्छ्र दोनों करै २८

जिस पापका प्रायश्चित्त नहीं कहा है उस पाप
को दूर करनेके लिये उसकी शक्ति और पाप
दोनोंके देखके प्रायश्चित्तका कल्पना करना
२.४ जिस उपायोंसे पापको मनुष्य दूर करते
हैं और उन उपायोंको देव ऋषि पितरोंने कहा
उन उपायों के हम कहेंगे २९ प्राजापत्य व्रतक
रने संते तीन दिन प्रातःकालमें तीन दिन सा

अनुक्तनिष्कृतीनां तु पापा
नामपनुत्तये शक्तिं चावेक्ष्य
पापं च प्रायश्चित्तं प्रकल्पये
त् २.४ यैरभ्युपायैरेनांसि
मानवो व्यपकर्षति तान्वो
ऽभ्युपायान्वक्ष्यामि देवर्षि
पितृसेवितान् २९ त्र्यहं प्रा
तस्त्र्यहं सायं त्र्यहं मद्याद
याचितं त्र्यहं परं च नाश्नी
या प्राजापत्यं चरन्द्विजः ३०

यंकालमें भोजन करे तीन दिन बिना मांगे
जो जो मिले उसको जो भोजन करे अंतमें तीन
दिन उपवास करे ग्रासकी संख्या और परिमाण
को कहते हैं छबीस ग्रास प्रातःकाल बतीस
ग्रास सायंकाल बिना मांगेमें चौबीस ग्रास शु
गाके अंड प्रमाण अथवा जितना मुखमें जाय
के हविष्यान्न भोजन करना और बलको भोज

म॰
स॰टी॰
अ॰
४४।
446

न नकरना ॥ ११ ॥ गौका मूत्र गोबर दूध दही घी कुशा सहित जल इन सभको एकत्र करके एक दिन पीवे और दूसरे दिन उपवास करे यह सांतपन कृच्छ्र कहाता है और जब पूर्व कथित छवों वस्तुको एक एक दिनमें एक एक वस्तुको भोजन करे और सतापदिन उपवास करे तब महा सांतपन कृच्छ्र कहाता है ॥ १२ ॥ अतिकृच्छ्रव्रतकरते संते एक दि

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पिः कुशोदकं एकरात्रोपवासश्च कृच्छ्रं सांतपनं स्मृतम् ॥ १२ ॥ एकैकं ग्रासमश्नीयात् अहानि त्रीणि पूर्ववत् अहं चोपवसेदेकं अतिकृच्छ्रं चरन्द्विजः ॥ १३ ॥ तप्तकृच्छ्रं चरन्विप्रो जलक्षीर घृतानिलान् प्रति अहं पिबेदुष्णान् सकृत्स्नायी समाहितः ॥ १४ ॥

न प्रातःकालमें एक ग्रास और एक दिन सायंकालमें एक ग्रास और एक दिन विना मांगेसे मिलनेमें एक ग्रास उसको भोजन करे और तीन दिन उपवास करे ॥ १३ ॥ तप्तकृच्छ्र व्रत करते संते निश्चित होके स्नान करके गरम जल दूध घी वायु इन चारोंमें से एक एकको एक वेर तीन दिन पीवे मात्रा और परिमाणको कहते हैं छः पल भर

जल तीन पल भर दूध एक पल भर घी ॥ १४ ॥

चित्त सावधान करके इंद्रियोंको अपने वश करके
बारह दिन तक उपवास करै यह व्रत सब पापको
दूर करनेवाला है २१५ तीनों कालमें अर्थात् प्रातः
सायं मध्याह्नमें करत सते एक एक ग्रासको कृ
ष्णपक्षमें घटावै और शुक्लपक्षमें बढावै अर्थात्
शुक्लपक्षकी पूर्णमासीके पंद्रह ग्रास भोजन करै
और कृष्णपक्षमें परिवामें चौद ग्रास इसी प्रकार

यतात्मनोऽप्रमत्तस्य द्वादशा
हमभोजनं पराको नाम कृ
च्छ्रोऽयं सर्वपापापनोदनः २१५
एकैकं ह्रासयेत्पिंडं कृष्णे शु
क्ले च वर्द्धयेत् उपस्पृशंस्त्रि २१६
षवणमेतच्चांद्रायणं स्मृतं
एवमेव विधिं कृत्स्नमाचरे
द्यवमध्यमे शुक्लपक्षादिनि
यतश्चरंश्चांद्रायणं व्रतम् ए

से एक एक ग्रासको घटाते हुए अमावस्यामें उप
वास होगा फेर शुक्लपक्षके परिवासे एक एक ग्रा
सको बढाते हुए पूर्णमासीको पंद्रह ग्रास होगा
यह पिपीलिका मध्य चांद्रायण कहाता है जैसे
यव मध्यमें मोटा रहता है पिपीलिका अर्थात् चिं
उटी जैसे आगे पीछे मोटी रहती है मध्यमें पतली
रहती है तैसे यह व्रत है २१६ इसीको शुक्लपक्षमें

म॰
स्मृ॰टी॰
भा॰
४४२

447

आरंभ करै तो यवमध्य चांद्रायण कहाताहै जैसे य
व मध्यमें मोटा रहताहै आदि अंतमें पतला रहता
है २१७ यति चांद्रायण करते संते इंद्रियोंको वश
किए हुए हविष्यका आठ ग्रासको मध्याह्न सम॰
यमें एकमास तक भोजन करै जिस पत्तेसे चा॰

अष्टावष्टौ समश्नीयात्पिंडान्
मध्यंदिने स्थिते नियतात्मा
हविष्याशी यतिचांद्रायणं
चरन् २१८ चतुरः प्रातरश्नीया
त्पिंडान्विप्रः समाहितः चतु
रोस्तमिते सूर्ये शिशुचांद्रा
यणं स्मृतं २१९ यथा कथंचि
त्पिंडानां तिस्रोशीतीः समा
हितः मासेनाश्नन्हविष्यस्य
चंद्रस्यैति सलोकतां २२०

क१ है इस पत्तमें आरंभ करै २१८ शिशु चांद्रायण करते
संते निश्चिंत होकर प्रातःकालमें चार ग्रास और रात्रि
में चार ग्रास भोजन करै २१९ किसी प्रकारसे निश्चिं
त होके एक माससे हविष्यका २४० ग्रासको भोजन

करै चंद्रलोकमें जावै २२०॥
करै

से सम्पूर्ण पापको नाशके लिये रुद्र आदित्य वसु
वायु बडे ऋषिलोग इन सभोंने इस व्रतको कि
या ॥ आप प्रतिदिन महाव्याहृतिसे होमकरे
अहिंसा सत्य अक्रोध कोमलता इन सभको ग्रह
णकरै ॥ रात्रिमें और दिनमें वस्त्र सहित स्ना

एतद्रुद्रास्तथादित्या वसव
श्चाचरन्व्रतं सर्वा कुशलमा
क्षाय मरुतश्च महर्षिभिः ॥
महाव्याहृतिभि र्होमः कर्त
व्य स्वय मन्वहं अहिंसा सत्य
मक्रोध मार्जवं च समाचरेः
त् ॥ त्रिरह्नि निशायां च स
वासा जल माविशेत् स्त्री शू
द्र पतिता श्चैव नाभिभाषेत
कर्हिचित् । २३ ॥

न करै यह स्नान कथित चान्द्रायणको छोडकर अ
र्थात् यव मध्य पिपीलिका मध्यको छोडकर दूस
रे चान्द्रायणमें जानना क्योंकि इन दोनोमें तो त्रि
काल स्नान लिखाहै और स्त्री शूद्र पतित इन्होंसे
भाषण व्रत करनेवाला न करै ॥ २३ ॥ रात्रिमें और

दिनमें खडारहै अथवा बैठारहै शयन न करै साम-
र्थ्य नहो तो भूमिमें शयन करै ब्रह्मचारी रहै अर्था
त् स्त्रीसे संभोग न करै मूंजकी मेखला और पाला
शका दंड इन दोनोंसे युक्तरहै गुरुदेवता ब्राह्मण
इन्होंका पूजन करै २२४ गायत्री और पवित्र मंत्र
इन्होंका यथाशक्ति जपकरै यह बात सभ व्रतमें जा
नना २२५ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ये सभ इन व्रतोंक

स्थानासनाभ्यां विहरेदशक्तो
ऽधः शयीत वा ब्रह्मचारी व्रती
च स्याद्गुरुदेवद्विजार्चकः २२४
सावित्रीं च जपेन्नित्यं पवित्रा
णि च शक्तितः सर्वेष्वेव व्रते
ष्वेवं प्रायश्चित्तार्थमादृतः २२५
एतैर्द्विजातयः शोध्या व्रतै
राविष्कृतैनसः अनाविष्कृत
पापांस्तु मंत्रैर्होमैश्च शोधये

रके किप ह्रुप पा त् २२६ पको हरकरै और जो
पाप प्रकाशित नहीं है अर्थात् गुप्त है उसको मंत्र
और होम करके हरकरै इसस्थानमें ऐसी आशंका
होतीहै कि परिषत् अर्थात् धर्मशास्त्रियोंकी सभा
को निवेदन करैंगे तब वह मंत्र और होमका उपदे
श करैंगे तबतो प्रकाशित पापहुआ अप्रकाशित
पापकैसे होगा तो इसका समाधान यह है कि इस
देके वहानेसे पूछै तब अपना पाप अप्रकाशित भ
या २२६ ॥

कहना पछताना तपस्या करना वेद पढ़ाना इ॰
न्हीं करके पापकरने वाला पापसे छूटताहै और
आपत्कालमें दान करके पापसे छूटताहै परंतु
जो पाप प्रकाशित हुवाहै उसको कहना अप्रका
शित पापको न कहना एक प्राजापत्य व्रत स्थान
में एक धेनु देना एक मासमें अढाई धेनु भई वा

ख्यापने नानुतापेन तपसा
ध्ययने नच पापकृन्मुच्यते ।
पापा तथा दानेन चापदि २७
यथा यथा नरोधर्मं स्वयं कृ
त्वानुभाषते तथा तथा त्वचे
वाहिस्तेनाधर्मेण मुच्यते
२८ यथा यथा मन स्तस्य दु
ष्कृतं कर्म गर्हति तथा तथा
शरीरं तत्तेना धर्मेण मुच्यते
२२९

रह वर्षमें ३०॰ धेनु होतीहै २२७ जैसेके त्वचासे
सर्प छूटताहै तैसे प्रकाशित पापको जैसे जैसे
कहताहै तैसे तैसे मनुष्य पापसे छूटताहै २२८
पापकरनेवाले मनुष्यका मन जैसे जैसे दुष्कर्मसे
की निंदाकरताहै तैसे तैसे उस अधर्मसे उसकी

शरीर छूटताहै २२९ पापकरके संताप करै तो उस पापसे छूटताहै मैं फेर ऐसा न करूंगा ऐसी निवृत्ति करके वह पापी पवित्र होताहै २३० इस प्रकारकर- के मनसे परलोकमें कर्म फलोदय को मन वाणी

कृत्वा पापं हि संतप्य तस्मात्
पापात्प्रमुच्यते नैवं कुर्यां पु
नरिति निवृत्त्या पूयते तु सः
३० एवं संचिंत्य मनसा प्रेत्य
कर्म फलोदयं मनोवाङ्मूर्ति
भिर्नित्यं शुभकर्म समाचरे
त् ३१ अज्ञानाद्यदिवा ज्ञाना
त्कृत्वाकर्म विगर्हितं तस्मा
द्विमुक्तिमन्विच्छन् द्वितीयं
न समाचरेत् २३२ ॥

शरीरसे नित्यही शुभ कर्मको करै २३१ अज्ञानसे अथवा ज्ञानसे निंदित कर्मको करके उस कर्मसे छूटनेकी इच्छा करता संता दूसरे निंदित कर्मको न करै और दूसरे निंदित कर्मको करै तो दूना प्रायश्चित करै २३२

जिस प्रायश्चित्त करनेसे पापीके मनको संतोष न हो तो उस प्रायश्चित्त फेर करै जब तक मनको संतोष न हो तब तक करता रहै २३३ देवता और मनुष्य इन्द्रोंके सुखका मूल मध्य अंत तप है यह बात वे-

यस्मिन्कर्मण्यस्य कृते मनसः
स्यादलाघवं तस्मिंस्तावत्तपः
कुर्याद्यावत्तुष्टिकरं भवेत् २३३
तपोमूलमिदं सर्वं दैवमानु
षके सुखं तपो मध्यं बुधैः प्रो
क्तं तपोंतं वेददर्शिभिः २३४
ब्राह्मणस्य तपो ज्ञानं तपः क्ष
त्रस्य रक्षणं वैश्यस्य तु तपो
वार्ता तपः शूद्रस्य सेवनं २३५

दके देखने वालोंने कहा २३४ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इन्होंका क्रमसे ज्ञान रक्षा वार्ता अर्थात् खेती करना आदि सेवा तप है २३५ इंद्रियोंके जीते हुए ऋषिलोग चर अचर तीनों लोकको तपहीसे दे-

खतीहै २३६ औषध अरोग विद्या अर्थात् ब्रह्मकर्म रू
प वेदार्थ ज्ञान और वेद पठन नानाप्रकारकी स्वर्गमें
स्थित येसभ तप करके सिद्ध होतीहै २३७ जो वस्तु॰
दुःखसे तरने योग्य मिलने योग्य करने योग्य जान॰

450

ऋषयः संयतात्मानः फल
मूलानिलाशनाः तपसैव
प्रविशंति त्रैलोक्यं सचराच
रं २३६ औषधान्यगदो विद्या
दैवी च विविधा स्थितिः तपसै
व प्रसिध्यंति तपस्तेषां हि सा
धनम् २३७ यद्दुस्तरं यद्दुरापं
यद्दुर्गं यच्च दुष्करम् सर्वं तु
तपसा साध्यं तपो हि दुरतिक्र
मम् २३८

ने योग्यहै सो तपसे होने सकताहै जो न होसके उ॰
सके होनेमें तपही सामर्थ्यहै तपका उल्लंघन ब
डा कठिन है २३८ ॥

महापातकी आदिलेके जितने पापकरने वाले ये
सभ तपसे शुद्ध होतेहैं ३३ बडे बडे सर्प पतंग
अर्थात् सलभ पशु पत्नी अचर अर्थात् जो चल
नसकै जीव ये सभ तपके बलसे स्वर्गमें जातेहैं

महापातकिनश्चैव शेषाश्चा
कार्यकारिणः तपसैव सु
तप्तेन मुच्यन्ते किल्बिषात्
ततः ३३ कीटाश्चाहि पतंगा
श्च पशवश्च वयांसि च स्था
वराणि च भूतानि दिवं या
न्ति तपो बलात् ३४ यत्किं
चिदेनः कुर्वन्ति मनोवाङ्मू
र्तिभिर्जनाः तत्सर्वं निर्दह
न्त्याशु तपसैव तपोधनाः ३५

३४ मन वाणी शरीर से जो कुछ पाप करतेहैं
सो सभ तपही से नष्टहोताहै ३५ यज्ञमें तपसे
शुद्ध ब्राह्मणका दिया हुआ हविष्य को देवता
ग्रहण करतेहैं और इन्होंके ईप्सित वस्तुको ब
ढातेहैं ३६ प्रजापति अर्थात् हिरण्यगर्भने इ

स शास्त्रको तपही से उत्पन्न किया और ऋषियोंने
तपसे इसको पाया २४३ तपहीसे संपूर्ण जंतुको
दुर्लभ जन्म होताहै इस बातको देखते हुए दे

तपसैव विशुद्धस्य ब्राह्मण॰
स्य दिवौकसः इज्याश्च प्रति
गृह्णन्ति कामान्संवर्द्धयन्ति॰
च २४२ प्रजापति रिदं शास्त्रं
तपसैवा सृजत्प्रभुः तथैव
वेदानृषय स्तपसा प्रतिपे॰
दिरे २४३ इत्येतत्तपसो देवा
महाभाग्यं प्रचक्षते सर्वस्या
स्य प्रपश्यन्त स्तपसः पुण्य
मुत्तमम् २४४ ॥

वता लोग सबका मूल तपको जानकर तपको
माहात्म्य कहतेहैं २४४ ॥

महायज्ञको और यथाशक्ति वेदाभ्यासको करने
वाले महापातकको भी जल्दी नाश करते हैं ४५
जिस प्रकारसे तेजसे बढी हुई अग्निकाटको फ
टपट दहन करती है तिसी प्रकारसे वेदको जा

वेदाभ्यासे न्वहं शक्त्या म
हायज्ञ क्रिया क्षमा नाश
यंत्याशु पापानि महापात
कजान्यपि ४५ यथैधस्ते
जसा वह्निः प्राप्तं निर्दहति
क्षणात् तथा ज्ञानाग्निना
पापं सर्वं दहति वेदवित
४६ इत्येतदेनसा मुक्तं प्रा
यश्चित्तं यथाविधि अत ऊ
र्ध्वं रहस्यानां प्रायश्चित्तं नि
बोधत २४७ ॥

नने वाला ज्ञान रूपी अग्निसे संपूर्ण पापको दहन
करताहै २४६ प्रकाशित पापोंका यह प्रायश्चित्त ४
को जानो २४७ प्रणव और सात व्याहृति इन्होंसे
गायत्री इससे सोलह प्राणायाम प्रतिदिन एकमा
स तक करै तो गर्भ मारनेको पापको हर करता

कहा इससे अनंतर अप्रकाशित पापके प्रायश्चित्त ४

म॰
स्व॰ टी॰
भा॰
४५२

452

है यह प्रायश्चित ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इन्होंकोहै
ही और शूद्र इन्होंको मंत्रमे अधिकार नहीहै २
४८ कौत्स ऋषिने देखाजो सूक्त अपनः शोशुच
दघं यह और वसिष्ठ ऋषिने देखा जो सूक्त प्रति
स्तोमभिरुषसं वसिष्ठाया यह माहित्रसूक्त महि
त्रीणा मवोस्तु यह शुद्धवत्य एतानिंद्र स्तवाम यह
ह तीन ऋचा इन्होंके प्रतिदिन एक मास तकसे

सव्याहृति प्रणवकाः प्रा॰
णायामस्तु षोडश अपि भ्रू
णहनं मासा पुनंत्यहरहः
कृताः ४८ कौत्सं जप्त्वाप
इत्येतद्वासिष्ठं च प्रतीत्यृचं
माहित्रं शुद्धवत्यश्च सुरापो
ऽपि विशुध्यति ४९ सकृज्जप्त्वा
स्य वामीयं शिवसंकल्पमे
व च अपहृत्य सुवर्णं तु ब्रा
ह्मणो भवति निर्मलः २५० ।

लह वेर जपकरै तो सुरापान करनेवाला शुद्ध हो
ताहै २४९ एक वेर प्रतिदिन एक मास तक अस्य
वामीय मस्य वामस्य पलितस्य इसको और शिव
संकल्प अर्थात यज्जाग्रतो दूरं यह वाजसनीयी
शाखामे पठित मंत्रको जपकरै तो ब्राह्मणका सो
ना चोरानेवाला शुद्ध होताहै २५० ॥

हविष्यंतमजरं स्वर्विदं यह उन्नीस ऋचा और ततमें
हो उवितै यह आठ ऋचा सहस्रशीर्षा यह सोलह
ऋचा इन्होंके सोलह वेर प्रतिदिन एक मासतक ॰
जपकरै तौ मातृगमनेसे पापसे छूटताहै २५१ अ
वति हेलो वरुणयोः यह ऋचा यत्किंचिदं वरुण
देवो जल यह ऋचा इन्होंको एक वेर एक वर्षतक

हविष्यंतीय मभ्यस्य नतेम
ह्यतीति च जपित्वा पौरुष
सूक्तं मुच्यते गुरुतल्पगः ५१
एनसां स्थूलसूक्ष्माणां चिकी
र्षन्नपनोदनम् अवेत्यृचं ज
पेदब्दं यत्किंचिदमितीति वा
५२ प्रतिगृह्याप्रतिग्राह्यं भु
क्त्वा चान्नं विगर्हितं जपंस्तर
त्समंदीयं पूयते मानवस्त्र्य
हात् ५३ ॥

जपकरै तौ छोटे वडे पापको अर्थात् महापातक
उपपातक आदिको नाशकरताहै २५२ नहीं ग्रह
ण करणे योग्य वस्तुको ग्रहण करके और निंदित
अन्नको भोजन करके तरत्समंदिवं यह चार ऋ॰
चाको तीन दिन जप करै २५३ सोम रुद्रा धार॰
ये पृणाम स्वयं यह चार ऋचा अर्यमणं वरुणं मि

तृच यह तीन ऋचा इन्होंमेंसे एक एकको एकवे
र एक मास तक नदीमें स्नान करके जपकरै तो
बहुत पापोंसे छूटताहै २५४ इंद्र मित्रं वरुण मं
ग्नि त्रयः यह सात ऋचाको छः मासतक जपकरै
तो सभपापोंसे छूटताहै जलमें मूत्र विष्ठा आदिको

सोमारौद्रं तु बह्वेना मासम
भ्यस्य शुध्यति स्रवन्त्यामाचर
न्स्नान मर्य्यम्णा मिति च तृ·
चं २५४ अब्दार्द्ध मिन्द्र मित्येत
देनस्वी सप्तकं जपेत् अप्रश
स्तं तु कृत्वाप्सु मास मासी
त भैक्षभुक् २५५ मन्त्रैः शाक
लहोमीयै रब्दं हुत्वा घृतं द्वि
जः सुगुर्व्वप्यपहन्त्येनो जप्त्वा
वा नम इत्यृचम् २५६ ॥

करने वाला एक मास तक भिक्षा मांगके भोजन
करै २५५ देवकृतस्य इन आदि शाकल होम मंत्रोंसे
एकवर्षतक जपकरै तो महापातक ब्राह्मण क्ष
त्रिय वैश्य नाश करतेहैं २५६ ॥

घी का होम करै अथवा नमः इंद्रस्य इस ऋचा करके एक
वर्षतक २

ब्रह्महत्या आदि महापातकमें से कोई एकपापसे युक्त
हो निश्चिंत होकर गौ के पीछे गमन करै और भिक्षामा
गके भोजन करै इंद्रियोंके जीते हुए एक वर्ष तक प्र
तिदिन पावमानी ऋचाको जपकरै तो शुद्धहोताहै
५७ वनमें निश्चिंत होकर वेदसंहिता को तीन वेर अ

महापातक संयुक्तोऽनुगच्छे
द्गाः समाहितः अभ्यस्याब्द
पावमानी भैक्षाहारो विशुध्य
ति ५७ अरण्ये वा त्रिरभ्यस्य प्र
यतो वेद संहिता मुच्यते पा
तकै सर्वै त्रिशोधित्वाचम
र्षेण ५८ अहं स्नपवेसु मुक
ह्निको भुपद्यत्रपः मुच्यते
पातकै सर्वै त्रिशोधित्वाद
मर्षेण २५९

भ्यासकरै और तीन वेर पराक व्रतकरै तो सब पापसे
छूटताहै ५८ इंद्रियोंके जीते हुए प्रतिदिन प्रातः सा
यं मध्याह्नकालमें स्नान करत संते जलमें तीन वेर
ऋतंच सत्यं यह अघमर्षण सूक्तको जप करके सब
पापसे छूटताहै २५९ जिस प्रकारसे सब यज्ञोंका रा

म॰
स्व॰ टी॰
भा॰
४५४

जो अश्वमेध यज्ञ सब पापको दूरकरताहै तिसेही कारसे अघमर्षण सूक्त सब पापको दूरकरताहै २६॰ तीनों लोकको हनन करके और जहां तहां भोजन करके ऋग्वेदको धारण करै तो कोई पा

यथाश्वमेधः क्रतुराट् सर्वपापनोदनः तथाघमर्षणं सूक्तं सर्वपापापनोदनम् २६॰ हत्वा लोकानपीमांस्त्रीनश्नन्नपि यतस्ततः ऋग्वेदं धारयन्विप्रो नैनः प्राप्नोति किंचन २६१ ऋक्संहितां त्रिरभ्यस्य यजुषां वा समाहितः साम्नां वा सरहस्यानां सर्वपापैः प्रमुच्यते २६२

पको नहीं पाताहै २६१ निश्चिन्त होकर ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेदकी संहितामेंसे कोई एक संहिताको तीनवीर अभ्यास करके सब पापसे छूटताहै २६२

जिस प्रकारसे अगाध जलमें माटीका ढेला डाला
तो जलदी नष्ट होताहै तिसी प्रकारसे सभपाप
तीनो वेदके पाठमें डूबताहै २६३ इस वातको जो जा
ने सो वेद जानने वाला कहाताहै २६४ इतिश्री

यथा महाह्रदं प्राप्य क्षिप्रं·
लोष्टं विनश्यति तथा दुश्च
रितं सर्वं वेदे त्रिवृति मज्ज·
ति २६३ ऋचो यजूंषि चान्या
नि सामानि विविधानि च
एष ज्ञेयस्त्रिवृद्वेदो यो वेदै
नं स वेदवित् २६४ आद्यं यत्त्र्य
क्षरं ब्रह्म त्रयी यस्मिन्प्रति·
ष्ठिता स गुह्योऽन्यस्त्रिवृद्वेदो
यस्तं वेद स वेदवित् २६५
इति मानवे धर्मशास्त्रे भृगु·
प्रोक्तायां संहितायामेकाद
शोऽध्यायः ११

मनुस्मृति भाषा टीकायां कुल्लक भट्ट व्याख्यानुसारि·
ण्यां श्री बाबू देवीदयाल सिंह कारितायां श्री कंपनी
संस्कृत पाठशालीय गुलजार शर्म्म पंडित कृतायां
मेकादशोऽध्यायः ११ ॥ सभ ऋषिसे लोग भृगु·

456

ऋषि कहतेहैं कि हे पापरहित भृगुऋषि अपने वि
धिपूर्वक चारो वर्णोंको धर्मको कहा अब हम कर्मो
के शुभाशुभ कर्मफलोंको विधि पूर्वक कहिए १
धर्मात्मा मनुके पुत्र भृगुऋषि उन महर्षियोंसे बो

चातुर्वर्ण्यस्य कृत्स्नोऽयमुक्तो
धर्मस्त्वयानघ कर्मणां फल
निर्वृत्तिं शंस नस्तत्त्वतः परां
१ स तानुवाच धर्मात्मा मह
र्षीन्मानवो भृगुः अस्य सर्व
स्य शृणुत कर्मयोगस्य नि
र्णयं २ शुभाशुभफलं कर्म
मनोवाग्देहसंभवं कर्मजा
गतयो नृणामुत्तमाधम
मध्यमाः ३ ॥

ले कि हे ऋषिलोग संपूर्ण कर्मयोगके निर्णयको
हमसे सुनिए २ मन देह वाणीसे उत्पन्न शुभाशुभ
वाला जो कर्म है उससे उत्पन्न मनुष्योंकी गति उत्तम
मध्यम अधम होती है ३ ॥

आगे जो दशलक्षण कहेंगे उससे युक्त देहधारण करने वाला पुरुषका मन देह वाणीसे उत्पन्न उत्तम मध्यम प्रथम कर्ममें प्रवृत्ति करनेवाला मनको जानो ४ पर द्रव्यमें ध्यान मनसे अनिष्ट चिंतन नास्तिकपना य

तस्येह त्रिविधस्यापि त्र्यधिष्ठानस्य देहिनः दश लक्षणयुक्तस्य मनो विद्या त्प्रवर्तकं ४ परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसा निष्ट चिंतनं वितथाभिनिवेशश्च त्रिविधं कर्म मानसं ५ पारुष्य मनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वशः असंबद्ध प्रलापश्च वाङ्मयं स्या च्चतुर्विधं ६

ह तीनप्रकारके मानस अर्थात् मनसे उत्पन्न कर्म है ५ अप्रिय कथन असत्य भाषण परदोष कथन अ योजन रहित बोलना यह चार प्रकारका वाचिक अ र्थात् वाणीसे उत्पन्न कर्म है ६ बिना दिये वस्तुका

ग्रहण करना विना विधिके जीव मारना परस्त्रीके
साथ रति करना यह तीन प्रकारका शारीर अर्थात्
शरीरसे उत्पन्न कर्म है ७ शरीरसे उत्पन्न शुभाशुभक
र्मके फलको क्रमसे मन वाणी शरीरसे देही पुरु

अदत्तानामुपादानं हिंसा चै
वाविधानतः परदारोपसेवा
च शारीरं त्रिविधं स्मृतम् ७
मानसं मनसैवायमुपभुंक्ते
शुभाशुभं वाचा वाचा कृतं
कर्म कायेनैव च कायिकं ८
शरीरजैः कर्मदोषैर्याति स्था
वरतां नरः वाचिकैः पक्षिमृ
गतां मानसैरंत्यजातिताम् ९

ष भोग करता है ८ शरीर वाणी मनसे उत्पन्न कर्म ।
करके क्रमसे स्थावर अर्थात् जो चल न सके पक्षी
और पशु अंत्यजाति अर्थात् चांडाल आदि इन्होंके
भावको प्राप्त होता है ९ ॥

जिसका वाणी मन शरीर ये सभ कर्मसे निषिद्ध
कथन असत्संकल्प निषिद्ध व्यापार इन्होंको त्या
ग किये है वही त्रिदंडी कहाता है क्यौं कि दमनसे
दंड कहाता है तीनसे तीनो वस्तुका दमन किया
इसलिये वह त्रिदंडी है १० संपूर्ण जीवौंमें इन तीनों

वाग्दंडोथ मनोदंडः काय
दंड स्तथैवच यस्यैते निहि
ता बुद्धौ त्रिदंडीति स उच्य
ते १० योस्यात्मनः कारयि
ता तं क्षेत्रज्ञं प्रचक्षते यः
करोति तु कर्माणि सभूता
त्मोच्यते बुधैः ११ त्रिदंडमेत
न्निक्षिप्य सर्वभूतेषु मानवः
कामक्रोधौ तु संयम्य ततः
सिद्धिं नियच्छति १२ ॥

दंडको अर्थात् मनो दंड कायदंड वाणी दंडको स्था
पन करके काम क्रोधको रोकके सिद्धिको पाता है
शरीरको कर्ममें प्रवृत्ति कराने वाला क्षेत्रज्ञ कहा
ता है और जो कर्म करता है सो भूतात्मा अर्थात् श
रीर कहाता है यह बात पंडित लोग कहते हैं १२ ॥

म॰
स॰ टी॰
भा॰
४५७

457

सर्वदेहवालोंके साथ उत्पन्न अंतरात्मा जीव ना
म वाला जिसको महत् कहते हैं सो भिन्न है जिस
जन्ममें सब लोग सुख दुःखका क्षेत्रज्ञ अनुभव कर
ता है अर्थात् सुख दुःखका भोग करता है १४ मह
तत्व और क्षेत्रज्ञ ये दोनो पृथिवी आदि पंच महा

जीवसंज्ञोन्तरात्मान्यः सहजः
सर्वदेहिनां येन वेदयिते स
र्वं सुखं दुःखं च जन्मसु १४
लादिभिर्भूतसंघैः सो महान्
क्षेत्रज्ञ एव च उच्चावचेषु भू
तेषु स्थितेन ते व्याप्य तिष्ठतः
१४ असंख्या मूर्तयस्तस्य नि
ष्पतन्ति शरीरतः उच्चावचा
नि भूतानि सततं चेष्टयन्ति
याः १५ ॥

भूतों करके ऊंच नीच योनियोंमें परमात्माको पकड
के रहते हैं १४ परमात्माके शरीरसे ऊंच नीच यो
नियोंमें स्थित देहको सदा कर्ममें प्रेरण करने वाले
असंख्य मूर्ति अर्थात् जीव निकलते हैं १५ ॥

परलोकमें पापियों के दुःख भोग करनेके लिये पृथिवी
आदि पंचभूतोंके भाग अर्थात् अंशोंसे एक दूसरी अवश्य श
रीर अर्थात् लिंग शरीर उत्पन्न होती है ॥१६॥ उस शरीरसे
यमके यातना अर्थात् तीव्रवेदनाको अनुभव करके
अर्थात् दुःख भोगकरके वह शरीर जिससे उत्पन्न हुए
है उसीमें लीनहोजाती है अर्थात् पृथिवी आदि पांचभू

पञ्चभ्य एव मात्राभ्यः प्रेत्य दुष्कृ
तिनां नृणां शरीरं यातनार्थी
यं मन्यदुत्पद्यते ध्रुवम् ॥१६॥ ते
नानुभूय ता यामीः शरीरेणेह
यातना तास्वेव भूतमात्रासु
प्रलीयन्ते विभागशः ॥१७॥ सो
नुभूया सुखोदर्कान् दोषान्
विषयसंगजान् व्यपेत कल्म
षोभ्येति तावेवोभौ महौजसौ
॥१८॥

तोंसे निकले रहे जो अंश सो पांच भूतोंमे मिलजाते है
॥१७॥ लिंग शरीरमें स्थित जीव विषय संगसे उत्पन्न पाप
को भोग करके निष्पाप होके बडे पराक्रम वाले महा
न् और परमात्मा इन दोनोंकी आश्रय करता है ॥१८॥ आ
लस्य रहित महान् और परमात्मा ये दोनो साथ होकर

म॰ स्मृ॰टी॰ भा ४५८

458

र जिस धर्म और अधर्मसे युक्त जीव इस लोकमें प
रलोकमें सुख और दुःखको पाताहै उस धर्मको
और भोगसे बंध हुए पापको विचारतेहैं १९ जब
जीव बहुत धर्मको करताहै और थोडा पापको ।

तौ धर्मं पश्यतस्तस्य पापं चा
तन्द्रितौ सह याभ्यां प्राप्नोति
संपृक्तः प्रेत्येह च सुखासुखे
१९ यद्याचरति धर्मं स प्रायः
शो धर्ममल्पशः तैरेव चावृ
तो भूतैः स्वर्गे सुखमुपाश्नुते
२० यदि तु प्रायशो धर्मं सेव
ते धर्ममल्पशः तैर्भूतैः स परि
त्यक्तो यामी प्राप्नोति यात
नाः २१

करताहै तब परलोकमें सुखको पाताहै २० और
जब बहुत पापको करताहै और थोडा धर्मको क
रताहै तब परलोकमें दुःखको पाताहै २१ ॥

यमकी यातनाको भोगकर पापसे रहित होकर फे
र जहांसे उत्पन्न है लिंगशरीर तिसमें फेर विभागसे
प्रवेश करताहै २२ अपने चेतसे इस जीविकी यह ग॰

यामीस्ता यातनाः प्राप्य स
जीवो वीतकल्मषः तान्ये॰
व पंचभूतानि पुनरभ्येति॰
भागशः २२ एता हृष्ट्वास्य॰
जीवस्य गतीः स्वेनैव चेत॰
सा धर्मतो धर्मतश्चैव धर्मे
समाधत्सदा मनः २३ सत्व
रजस्तमश्चैव जीवियाद॰
त्मनो गुणान् यैर्व्याप्येमा॰
न्स्थितो भावा न्महान्सर्वान्
विशेषतः २४

ति देखके सर्वकाल धर्ममें मनका योगकरे २३ सत्व
रज तम यह तीन आत्मा जो महतत्व इसके गुण है
जिन गुणोंसे व्याप्तहोके सभ वस्तमें महान् स्थित
है २४ तीनों गुणोंमेंसे जो गुण अधिक जिस शरी

म॰ रेमैंहैं उस शरीरको तद्गुण आय अर्थात् बढ़त
स्व॰ टी॰ उसगुणवाला वह गुण करताहै २५ सत्व ज्ञानहै
ए॰ तम अज्ञानहै राग अर्थात् इष्ट वस्तुमें अभिलाषा
४५१ द्वेष अर्थात् अनिष्ट वस्तुमें रोष ये दोनो रजोहैं २

459

यो यैर्देषां गुणो देहे साक
ले नातिरिच्येत सततं तं-
द्गुण आय ते कौति शरी-
रिणं २५ सत्वं ज्ञानं तमो
ज्ञानं रागद्वेषौ रजः स्मृतौ
प्रवृत्याभि सहैतेषां सर्वभू
ताश्रितं वपुः २६ तत्र यत्प्री
ति संयुक्तं किंचिदात्मनि
लक्षयेत् प्रशान्तमिव शुद्धा
भं सत्वं तदुपधारयेत् २७ ।

न तीनों गुणोंमे संपूर्ण जगत व्याप्तहै २६ जब आ
त्माको प्रीति संयुक्त प्रशान्त शुद्ध स्वरूप देखे त
ब सत्व गुणको जाने २७ ॥

तमोगुणको जाने वह ४

जब आत्माको दुःखसंयुक्त अप्रसन्न देखै तब रजोगुण
को जाने वह रजोगुणको सर्व शरीर वालेको दुर्नि॰
वारहै २८ जब आत्माको मोह संयुक्त विषय स्वरूप
अप्रकट देखै तबै तमोगुण तर्कके योग्य नहीं है ।

यत्तु दुःख समायुक्त मप्री
तिकर मात्मनः तद्रजोप्रति
घं विद्या त्सततं हारिदेहिना
म् २८ यत्तु स्या न्मोह संयुक्त
मव्यक्तं विषयात्मकं अप्रत
र्क्य मविज्ञेयं तमस्तदुपधा
रयेत् २९ त्रयाणा मपि चैते
षां गुणानां यः फलोदयः
अग्र्यो मध्यो जघन्यश्च तंप्र
वक्ष्याम्य शेषतः ३० ॥

और जानने के योग्य नहीं है २९ इन तीनों गुणोंका
जो फलोदय श्रेष्ठ मध्यम नीच है उन सबको हम
कहैंगे ३० वेदाभ्यास तप ज्ञान पवित्रता इंद्रियोंका

जीतना धर्म क्रिया आत्मचिंता सभ सत्वगुणके ॰
लक्षणहै ३१ वस्तुके आरंभमें रुचि अधीरता अस
त्कार्य्य ग्रहण सदा विषय सेवा ये सभ रजोगुण

वेदाभ्यासस्तपो ज्ञानं शौच
मिंद्रिय निग्रहः धर्म क्रिया
त्मचिंता च सात्विकं गुण ल
क्षणं ३१ आरंभ रुचिताधैर्य्य
मसत्कार परिग्रहः विषयोप
सेवा चाजस्रं राजसं गुणल
क्षणं ३२ लोभः स्वप्नोधृतिः
क्रौर्य्यं नास्तिक्यं भिन्नवृत्ति
ता याचिष्णुता प्रमादश्च ता
मसं गुण लक्षणं ३३ ॥

के लक्षणहै ३२ लोभ स्वप्न अधीरता कठोरता ना॰
स्तिकपना अनाचारता मांगना अनवधानता ये
सभ तमोगुणके लक्षणहै ३३ ॥

भूत भविष्य वर्तमान यह तीनों कालमें रहने वाले ती
नों गुणोंका संक्षेप करके क्रमसे गुण लक्षण यह
जानने योग्य है ३४ जो कर्म करके और करते संते
और करनेकी इच्छा करते संते लज्जाको प्राप्त होय

त्रयाणामपि चैतेषां गुणानां
त्रिषु तिष्ठतां इदं सामासिकं
ज्ञेयं क्रमशो गुणलक्षणं ३४
यत्कर्म कृत्वा कुर्वंश्च करिष्यं
श्चैव लज्जति तज्ज्ञेयं विदुषा
सर्वं तामसं गुणलक्षणम्
३५ येनास्मिन् कर्मणा लो
के ख्यातिमिच्छति पुष्कलां
न च शोचति संपत्तौ तद्विज्ञे
यं तु राजसम् ३६ ॥

हो उस कर्मको तामस गुण लक्षण जाने ३५ इस लोक
मे जिस कर्म करके बडी प्रसिद्धता होनीके इच्छा कर
ताहै और असंपत्तिमे शोक नही करताहै उस कर्मको
राजस गुण लक्षण जाने ३६ जो कर्म वेदार्थको सर्वा

त्मकरके जाननेकी इच्छा करताहै और जिसक
र्मको करतसंते लज्जा नहीं होती और जिसकर्म
करके पुरुषकी आत्मा संतुष्ट होतीहै उसकर्म
को सत्वगुण लक्षण जानै ३७ तमोगुणका लक्ष

यत्सर्वे नेच्छति ज्ञातुं यन्न ल
ज्जति चाचरन् येन तुष्यति
चात्मास्य तत्सत्वगुणलक्षणं
३७ तमसो लक्षणं कामो रज
सस्त्वर्थ उच्यते सत्वस्य लक्ष
णं धर्मः श्रेष्ठमेषां यथोत्तरं
३८ येन यांस्तु गुणेनैषां संसा
रान्प्रतिपद्यते तान्समासेन
वक्ष्यामि सर्वस्यास्य यथाक्र
मं ३९

ण कामहै रजोगुणका लक्षण अर्थहै सत्वगुणका
लक्षण धर्महै इन्होंमें उत्तर उत्तर श्रेष्ठहै ३८ जिस
गुणकरके जिस गतिको जीव पाताहै उन संसा
रों जगतके गतिको संक्षेपसे मैं कहूंगा ३९ ॥

सत्वगुणवाले देव भावको रजोगुणवाले मनुष्यभाव॰
को तमोगुणवाले तिर्यगभाव अर्थात् तिरछा चलने॰
वाले मनुष्यभावको तमोगुणवाले प्राप्त होतेहै यह
तीन प्रकारकी गतिहै ४० सत्व आदि तीन गुण करके
तीन प्रकारकी गति जो कहा सो देशकाल आदि भेद

देवत्वं सात्विका यांति मनुष्य
त्वं च राजसाः तिर्यक्त्वं ताम
सा नित्य मित्येषा त्रिविधा ग॰
तिः ४० त्रिविधा त्रिविधैषा तु
विज्ञेया गौणिकी गतिः अध
मा मध्यमाग्र्या च कर्म विद्या
विशेषतः ४१ स्थावराः कृमि
कीटाश्च मत्स्याः सर्पाः सक
च्छपाः पशवश्च मृगाश्चैव ज
घन्या तामसी गतिः ४२ ॥

करके संसारका कारण करण भेदसे प्रथम मध्यम उत्त
म भेद करके फेर तीन प्रकारकी गति जानना ४१ हे
त और छोटे बडे कीडे मछली सर्प कछुआ पशु मृग
इन सभ गतिको तमो गुणकी नीच गति जानना ४२

म० स्मृ० टी० भा० ४१२

462

हाथी घोड़ा शूद्र म्लेच्छ सिंह व्याघ्र सूअर इन सब ग
तिको तमोगुणकी मध्यम गति जानना ४३ नट प
ती कपटसे धर्म करने वाला पुरुष राक्षस पिशाच
इन गतिको तमोगुणकी उत्तम गति जानना ४४ ।
व्रात्य क्षत्रियसे सवर्णा भार्यामें उत्पन्न जो दशवें अ
ध्यायमें कह आएहैं झल्ल अर्थात लाठीसे प्रहार क

हस्तिनश्च तुरंगाश्च शूद्रा म्ले
च्छाश्च गर्हिताः सिंहा व्याघ्रा
वराहाश्च मध्यमा तामसी ग
तिः ४३ चारणाश्च सुपर्णाश्च
पुरुषाश्चैव दांभिकाः रक्षांसि
च पिशाचाश्च तामसीषूत्तमा
गतिः ४४ झल्ला मल्ला नटाश्चै
व पुरुषाः शस्त्रवृत्तयः द्यूतपा
न प्रसक्ताश्च जघन्या राजसी
गतिः ४५

रने वाले मल्ल अर्थात बाहुसे युद्ध करने वाले नट
अर्थात रंगावतारक रंग कहिए सभा उसका अवता
रक कहिये बनानेवाला शस्त्रसे जीनेवाले जूआ
खेलने वाले मदिरा पीनेवाले पुरुष इन सब गति
को रजोगुणकी नीच गति जानना ४५ ॥

राजा क्षत्रिय राजाका पुरोहित शास्त्रार्थ प्रिय पुरुष
इन सभ गतिको रजोगुणकी मध्यम गति जानना
४६ गंधर्व गुह्यक यक्ष देवतोंके अनुचर अर्थात् देव
तोंकी पीछे चलने वाले विद्याधर आदि अप्सरा इन
सभ गतिको रजोगुणकी उत्तम गति जानना ४७

राजानः क्षत्रियाश्चैव राज्ञो
चैव पुरोहिताः वादयुद्ध प्र
धानाश्च मध्यमा राजसीगतिः
४६ गंधर्वा गुह्यका यक्षा वि
बुधानुचराश्चये तथैवाप्सर
सः सर्वा राजसी हुत्तमागतिः
४७ तापसा यतयो विप्राः ये
च वै मानिकागणाः नक्षत्रा
णि च दैत्याश्च प्रथमा सात्वि
की गतिः ४८

तपस्वी यती ब्राह्मण वैमानिक गण अर्थात् अप्सरा
को छोड़कर पुष्पक विमान पर चढ़कर चलने वा
ले नक्षत्र दैत्य इन सभ गतिको सत्वगुणकी नीच
गति जानना ४८ यज्ञ करने वाले ऋषि देवता वेद

ध्रुव आदि ज्योतिर्गण वत्सर पितृगण साध्यगण इन इन सब गतिको सत्वगुणकी मध्यम गति जानना ४९ ब्रह्मा और संसारके उत्पन्न करनेवाले सब प्रजापति धर्म महतत्त्व माया इन सब गतिको सत्वगुणकी उत्तम गति जानना ५॰ मन वाणी शरीर ये तीनों कर्मके साधन है अर्थात् यही तीनों

यज्वान ऋषयो देवा वेदाः ज्योतींषि वत्सराः पितरश्चैव साध्याश्च द्वितीया सात्विकी गतिः ४९ ब्रह्मा विश्वसृजो धर्मो महानव्यक्त मेव च उत्तमो सात्विकी मेतो गति माहु र्मनीषिणः ५॰ एष सर्वः समुद्दिष्टस्त्रिप्रकारस्य कर्मणः त्रिविधस्त्रिविधः कृत्स्नः संसारः सार्वभौतिकः ५१

से कर्म होता है इन्हींके भेदसे तीन प्रकारके कर्म सत्व रज तम भेद करके हुए फेर नीच मध्यम उत्तम भेद करके एक एकमें तीन प्रकारसे नव प्रकारके पंच भूतसे उत्पन्न सम्पूर्ण संसार है उसको मैंने दिखानेके लिये कहा इसलिये जो नहीं कहा सो भी गति ग्रन्थान्तरोंमें दिखनेके योग्य है ५१ ॥

नरमें प्रथम मूर्ख पुरुष इंद्रियोंके प्रसंगसे धर्मके
त्यागसे निंदित गतिको पातेहैं ५२ इस लोकमें क्रम
से यह जीव जिस जिस कर्म करके जिस जिस यो॰
निमें जाताहै इन सबको जानो ५३ बहुत वर्षतक

इंद्रियाणां प्रसंगेन धर्मस्या
सेवनेन च पापान्संयाति सं
सारान विद्वांसो नराधमाः
५२ यां यां योनिं तु जीवोयं
येन येनेह कर्मणा क्रमशो
याति लोकेस्मिं तत्सर्वं नि
बोधत ५३ बहून्वर्षगणान्घ
ोरान् नरकान्प्राप्य तत्क्ष॰
यात् संसारान्प्रतिपद्यंते म॰
हापातकिन स्त्विमां ५४ ।

घोर नरकके भोगसे पापोंको हरकर शेष पापसे म
हापातकी पुरुष इन संसारोंको पातेहैं ५४ कुत्ता
सूअर गदहा ऊंट गौ बकरी भेड मृग पक्षी चांडाल पु
क्कस इन्होंकी योनिमें ब्राह्मणको मारने वाला जा

ताहै ५५ छोटे बडे कीडे पतंग विष्टाके भोजन क
रने वाले पक्षी मारनेका स्वभाव वाले अर्थात् बा
घ आदि इन्होंकी योनिमे सुरापान करने वाला ब्रा

464

श्व सूकरखरोष्ट्राणां गोजावि
मृगपक्षिणां चांडाल पुक्कशा
नां च ब्रह्महा योनि मृच्छति
५५ कृमि कीट पतंगानां वि
ड्भुजां चैव पक्षिणां हिंस्राणां
चैव सत्वानां सुरापो ब्राह्म॰
णो व्रजेत् ५६ लूताहि सरटा
नां च तिरश्चां चांबु चारिणां
हिंस्राणां च पिशाचानां स्तेनो
विप्रः सहस्रशः ५७ ॥

ह्मण जाताहै ५६ मकरी सर्प गिरगिट जलचर टेढे
चलनेवाले जीव पिशाच मारनेका स्वभाव वाले जी
व इन्होंकी योनिमे सोना चोराने वाला ब्राह्मण हजा
रों वेर जाताहै ५७

तृण अर्थात् दूब आदि गुल्म अर्थात् स्कंध रहित लता अ
र्थात् गडुचि आदि कच्चा मांस भोजन करने वाले अर्था
त् गिद्ध आदि दंष्ट्री अर्थात् सिंह आदि क्रूर कर्म करके
जिसकी शोभाहै अर्थात् बाघ आदि इन्होंकी योनिमें
मातृगमन करनेवाला सैकरों बेर जाताहै ५८ जीव
के मारनेका स्वभाववाले कच्चा मांस भोजन योग्य अ
र्थात् बिलार आदि होतेहै भोजन योग्य जो वस्तु नही
है उसके भोजन करने वाले छोटे कीड़े होतेहै महा॰

तृण गुल्म लतानां च क्रव्यादा
न्दंष्ट्रिणा मपि क्रूरकर्म कृता
न्चैव शतशो गुरुतल्पगः ५८
हिंस्रा भवंति क्रव्यादाः कृमयो
भक्ष भक्षिणः परस्परादिनस्ते
नाः प्रेतान्त्यस्त्री निषेविणः ५९
संयोगं पतितै र्गत्वा परस्यैव
च योषितं अपहृत्य च विप्रस्वं
भवति ब्रह्मराक्षसः ६० ॥

पातकीको छोड़कर जो चोरहै परस्पर मांस भोजन
करने वाले होतेहै अर्थात् वह उसकी मांसको भोज
न करताहै और वह उसकी मांसको भोजन करताहै
चांडालकी स्त्रीसे रति करने वाला प्रेत होताहै ५९ पति
तोके साथ संयोग परस्त्रीसे रत ब्राह्मणका सोना चो
राना इन्होंमेंसे कोई एक कर्म करके ब्रह्मराक्षस होता
है ६० लोभसे मणि मोती मूंगा और नाना प्रकारके र
त्न इन्होंके हरणसे सोनार होताहै ६१ धान्य कांसज
ल मधु दूध रस घी इन्होंके हरणसे क्रम करके मू

सा हंसा प्लव नामवाला पक्षी दंश अर्थात् बनकी
माछी कौआ कुत्ता नेउर होताहै ६२ मांस वपा अर्था
त् चरबी तेल नून दही इन्होंके हरणसे क्रम कर
के गिद्ध मद्गु अर्थात् जलचर पक्षी तैलपायिक प

मणिमुक्तप्रवालानि हृत्वा ।
लोभेन मानवः विविधानि
च रत्नानि जायते हेमकर्तृषु
६१ धान्यं हृत्वा भवत्याखुः कां
स्यं हंसो जलं प्लवः मधु दंश
पयः काको रसं श्वा नकुलो ।
घृतम् ६२ मांसं गृध्रो वपां म
द्गुस्तैलं तैलपकः खगः चीं ।
रीवाकस्तु लवणं बलाका
शकुनि दधि ६३ कौशेयं तित्ति ।
रिं हृत्वा क्षौमं हृत्वा तु दर्दु
रः कार्पासतान्तवं क्रौंचो गो ।
धा गां वाग्गुदो गुडम् ६४ ॥

क्षी कीड़ा बलाका पक्षी होताहै ६३ कौशेय अर्था
त् कीड़ाके पेटमेंसे जो सूत निकाला गया उसका
वस्त्र क्षौम अर्थात् तीसीके त्वचासे बना वस्त्र कपा
सके सूतसे वस्त्र गौ गुड इन्होंके हरणसे क्रमकरके
तित्तिर पक्षी मेंडका क्रौंच गोह वाग्गुद अर्थात् गेडुरा
पक्षी होताहै ६४

शुभ गंध अर्थात् कस्तूरी आदि पत्र शाक अर्थात् ब-
थुआ आदि पत्र साग सिद्धान्न अर्थात् भात सत्तुआ आ-
दि असिद्धान्न अर्थात् ब्रीहि यव आदि इन्होंके हरणेसे
क्रमकरके छुछुंदर मयूर श्वाविन् साही होताहै १५
अग्नि गृहोपस्करण अर्थात् सूप मूसर आदि गृहके उ-
पयोगी वस्त्र लालवस्त्र इन्होंके हरणेसे क्रम करके

छुछुंदरि शुभान् गंधान् पत्र
शाकं तु बर्हिणः श्वाविल्कृता
न्नं विविधमकृतान्नं तु शल्य-
कः १५ बको भवति हृत्वाग्नि
गृहकारी ह्युपस्कर रक्तानि
हृत्वा वासांसि जायते जीव
जीवकः १६ वृको मृगेभं व्या
घ्रोश्वं फलमूलं तु मर्कटः ।
स्त्रीमृक्षः स्तोकको वारि या
नान्युष्ट्रः पशून् गजः १७ ।

बगला गृहकारी अर्थात् बिलनी चकोर होताहै १६
मृग और हाथी इन दोनोंमेंसे एकको हरण करके
भेडिआ होताहै घोडाके हरणेसें बानर होताहै स्त्री ज
ल सवारी जो कहाहै इसको छोडकर पशु इनके ह
रणेसे क्रमकरके भालू चातक पक्षी अर्थात् पपी
हा ऊंट बकरा होताहै १७ जो ऊख पराई द्रव्यहै

इन दोनोमेंसे एकके
वाच होताहै फल और मूल
हरणसे ८

म० स्व० टी० भा० ४६६

466

उसके हरणमें और देवतोंको अनिवेदित हवि के भोजनसे अवश्य तिर्यग्भाव अर्थात् टेढे च लनेवाले जीवकी योनिको प्राप्त होताहै १८ स्त्री भी पूर्व कथित कर्म करके पूर्व कथित जीवों

यद्वा तद्वा परद्रव्य मपहृत्य
बलान्नरः अवश्यं याति ति
र्यक्त्वं जग्ध्वा चैवाहुतं हविः
१८ स्त्रियो ऽप्येतेन कल्पेन हृ
त्वा दोष मवाप्नुयुः एतेषा
मेव जन्तूनां भार्यात्व मुपया
ताः १९ स्वेभ्यः स्वेभ्यस्तु
कर्मभ्यः च्युता वर्णा ह्यनाप
दि पापान्संसृत्य संसारा न्प्रे
ष्यतां याति शत्रुषु २० ॥

की स्त्री होतीहै १९ आपत्कालके अभावमें चारो वर्ण अपने कर्मोंसे रहित होकर पापयोनिमें जा के शत्रुओंकी अपने दास होतेहैं २० ॥

अपने धर्मसे रहित ब्राह्मण वमन अर्थात् उलटी कि
ए गई वस्तु उसका भोजन करनेवाला उल्कामुख ना
म वाला प्रेत होताहै अपने धर्मसे रहित क्षत्रिय वि
ष्टा अथवा भोजन करनेवाला कटपूतन नाम वा
ला प्रेत होताहै १८ अपने धर्मसे रहित वैश्य पीब

वान्ताश्युल्कामुखः प्रेतो वि
प्रो धर्मात्स्वकाच्युतः अमे
ध्यकुणपाशी च क्षत्रियः क
टपूतनः १८ मैत्राक्षज्योति
कः प्रेतो वैश्यो भवति पूयभु
क् चैलाशकश्च भवति शूद्रो
धर्मात्स्वकाच्युतः १९ यथा
यथा निषेवन्ते विषयान्विष
यात्मकः तथा तथा कुशल
ता तेषां तेषूपजायते २०॥

भोजन करनेवाला मैत्राक्षज्योतिक नामवाला प्रेत
होताहै अपने धर्मसे रहित शूद्र वस्त्र भोजन करने
वाला प्रेत होताहै १९ विषयमें आत्माके लगाने वा
ला पुरुष जैसा विषयोंको सेवन करताहै तैसा तै
सा विषयोंमें प्रवीण होताहै २० छोटी बुद्धिवाले

म॰
स्क॰ टी॰
भा॰
४६७

४६७

वे सब दुष्पाप कर्मोंके अभ्याससे निन निन योनि
में दुःखको पाते हैं १४ चौथी अध्यायमें कहे हुए
जो तामिस्र असिपत्र वन बंधन छेदन आदि नर
कमें दुःख पाते हैं १५ नाना प्रकारके पीडा पाते हैं

अभ्यासात्कर्मणां तेषां पापा
नामल्पबुद्धयः सम्प्राप्नुवं
ति दुःखानि तासुतास्विह ।
योनिषु १४ तामिस्रादिषु ।
चोग्रेषु नरकेषु विवर्तनम्
असिपत्र वनादीनि बंधन
छेदनानि च १५ विविधा ।
श्चैव संपीडाः काकोलूकैश्च
भक्षणम् करंभ वालुका ता
पान् कुंभीपाकांश्च दारुणा
न् १६

कौआ उल्लू पक्षी इन्होंसे भोजन किए जाते हैं तपे
बालूके तापको पाते हैं अति दारुण कुंभीपाक
के दुःखें भोग करते हैं १६ ॥
कौ

नित्यही बहुत दुःखवाली निषिद्ध योनिमें उत्पत्ति
शीत तापसे पीडा नानाप्रकारके भय इन सभको पा
तेहैं ३३ वारंवार गर्भमें वास दारुण जन्म बंधन कष्ट
परकी सेवा इन सभको पातेहैं ३८ बंधु और प्रियइ

सेभवाश्च वियोगाश्च दुःखशो
काश्च नित्यशः शीततापाभि
घाताश्च विविधानि भयानि
चा ३३ गर्भसंक्रमवासश्च वास
जन्म च दारुणं बंधनानि च
कष्टानि परप्रेष्यत्वमेव च ३८
बंधु प्रिय वियोगाश्च वासं चै
व च दुर्जनैः द्रव्यार्जनं च ना
शो च मित्रामित्रस्य वाजनम्
३९

ष्टोंके साथ वियोग दुर्जनोंके साथ वास द्रव्यार्जनका
नाश मित्र और शत्रु इन्होंकी प्राप्ति इन स
प्रवास द्रव्यनाश मित्र और शत्रु इन्होंकी प्राप्ति इन स
भको पातेहै ३९ उपाय रहित बडी अवस्था व्याधिसे
दुःख नानाप्रकारके क्लेश दुर्जय मृत्यु इन सभको

म०
स्क० टी०
भा०
४६८

468

पातेहै ८०. जिस जिस भावसे जिस जिस कर्मको से
वताहै तैसी शरीरसे तिस तिस फलको भोग कर
ताहै अर्थात् सात्विक राजस तामस भाव करके
स्नान दान योग आदिकोंसे तो सत्वादिक रजोधिक

जरां चैवाप्रतीकारां व्याधिभि
श्चोपपीडनं क्लेशांश्च विवि
धांस्तांस्तान्मृत्युमेवच दुर्ज
यं ८०. यादृशेन तु भावेन य
द्यत्कर्म निषेवते तादृशेन
शरीरेण तत्तत्फल मुपाश्नु
ते ८१ एषसर्वः समुद्दिष्टः क
र्मणांवः फलोदयः नैःश्रे०
यसकरं कर्म विप्रस्येदं नि०
बोधत ८२

तमोधिक शरीर करके स्नान दान योग आदि कर्मों०
के फलको भोग करताहै ८१. कर्मोंके फलका उद
य संपूर्ण यह मैंने कहा इसके अनंतर ब्राह्मणके
मोक्षहित कर्मको जानो ८२ ॥

वेदाभ्यास जप ज्ञान इंद्रियोंका संयम अहिंसा गुरुसेवा
ये सभ कर्म मोक्षके हित बडा है ८३ इन सभ कर्मोंमें
कोई कर्म पुरुषोंके मोक्षके लिये अतिहित है ८४ स
भ कर्मोंमें आत्मज्ञान अर्थात् अपनेको पिछानना श्रेष्ठ

वेदाभ्यास तपोज्ञान मिंद्रिया
णां च संयमः अहिंसा गुरुसे
वा च निःश्रेयसकरं परं ८३
सर्वेषा मपि चैतेषां शुभाना
मिह कर्मणां किंचित् श्रेयः
स्करतरं कर्मोक्तं पुरुषं प्रति
८४ सर्वेषा मपि चैतेषां मात्म
ज्ञानं परं स्मृतं तद्ध्यग्र्यं सर्व
विद्यानां प्राप्यते ह्यमृतं ततः
८५ षण्णा मेषां तु सर्वेषां कर्म
णां प्रेत्य चेह च श्रेयस्करतरं
ज्ञेयं सर्वदा कर्म वैदिकं ८६

है क्यों कि इसीसे मोक्ष होता है ८५ पूर्व कथित वेदा
भ्यास आदि छः कर्मोंसे इस लोकमें परलोकमें वेदो
क्त कर्म अर्थात् आत्मज्ञान सर्वकालमें मोक्षके हि
त जानने योग्य है ८६ आत्मज्ञानसे पूर्व कथित पां

का

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
४११

469

वो कर्म होजातेहै ८७ वैदिक अर्थात् वेदोक्त कर्म
दो प्रकारकेहै एक प्रवृत्त दूसरा निवृत्त सुख और अ
भ्युदयको देनेवाला प्रवृत्तहै अर्थात् ज्योतिष्टोम आ
दियज्ञसे सुखदेनेवाला स्वर्गादि फलहोताहै परं
तु संसारमें फेर लआताहै इस लिये प्रवृत्त कहाता
है और निःश्रेयस अर्थात् मोक्ष उसके लिये जोक

वैदिके कर्मयोगे तु सर्वाण्ये
तान्यशेषतः अन्तर्भवंति क
मशस्तस्मिंस्तस्मिन् क्रिया
विधौ ८७ सुखाभ्युदयकं कर्म
नैःश्रेयसिकमेव च प्रवृत्तं च
निवृत्तं च द्विविधं कर्म वैदि
कं ८८ इह चामुत्र वा काम्यं
प्रवृत्तं कर्म कीर्त्यते निष्कामं
ज्ञानपूर्वं तु निवृत्तमुपदि
श्यते ८९

र्म सो नैःश्रेयसिक कहाताहै ८८ इसलोकमें और प
रलोकमें कामनाके लिये जो कर्म सो प्रवृत्त कहा
ताहै ज्ञानपूर्वक जो कर्म सो निवृत्त कहाताहै
८९ ॥

अर्थात संसारमे फेर नही लयाता है

प्रवृत्त कर्म करनेसे देवतोंके सम होताहै निवृत्तक
र्म करनेसे पृथिवी आदि पांच भूतोंको जीतताहै
अर्थात् इन्हींहीसे शरीर होताहै इन्होंको जीतनेसे
पुनर्जन्म नही होताहै ९० सब भूतोंमें अपनी आ
त्माको और सब भूतोंको अपनी आत्मामें देखता स

प्रवृत्तं कर्म संसेव्य देवानामे
ति साम्यतां निवृत्तं सेवमा ।
नस्तु भूतान्यत्येति पंचवै ९० स
र्वभूतेषु चात्मानं सर्वभूतानि
चात्मनि समंपश्यन्नात्मया ।
जी स्वाराज्य मधिगच्छति ९१
यथोक्तान्यपि कर्माणि परि
हाय द्विजोत्तमः आत्मज्ञाने
शमे च स्याद्वेदाभ्यासे च यत्न
वान् ९२ ॥

ने आत्माका याग करने वाला पुरुष स्वाराज्य अर्था
त् ब्रह्मभावको पाताहै ९१ ब्राह्मण यथोक्त कर्म अ
र्थात् अग्निहोत्र आदि कर्मको त्यागकर ब्रह्मध्यान
इंद्रिय जय ॐकार उपनिषद आदि वेदाभ्यास इन्हों
में यत्न करे ९२ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यके जन्मके स

म॰
स्मृ॰ टी॰
भा॰
ध३॰

470

फल करने वाले आत्मज्ञान वेदाभ्यास आदिकर्म
है परंतु ब्राह्मणको तो विशेष करके इस लिये उ
स कर्मको पाके कृत कृत्य होता है अर्थात् कर॰
ने योग्य वस्तुको करचुकता है ९३ पितर देव म
नुष्य इन्होंका वेद नित्य नेत्र है वेद और शास्त्र ये
दोनो अशक्य है और अप्रमेय है अर्थात् तर्क कर

एतद्धि जन्मसाफल्यं ब्राह्म॰
णस्य विशेषतः प्राप्यैतत्कृ
तकृत्यो हि द्विजो भवति ना
न्यथा ९३ पितृदेव मनुष्या॰
णां वेदः चक्षुः सनातनम्
अशक्यं चाप्रमेयं च वेदशा
स्त्र मिति स्थितिः ९४ या वेद
बाह्याः स्मृतयो याश्च काश्च
कुदृष्टयः सर्वास्ता निष्फलाः
प्रेत्य तमो निष्ठा हि ताः स्मृ॰
ताः ९५

ने योग्य नहीं है य ह शास्त्रकी मर्यादा
है ९४ वेदसे बाहर जो स्मृति और दृष्टार्थ वाक्य अ
र्थात् चैत्य वंदनसे स्वर्ग होता है चैत्य कहिए चौत
रा और चार्वाक मत ये सभ निष्फल है क्यों कि उन्हों
का मूल वेद है वह सभ तमो निष्ठ है अर्थात् तमोगु

णसे भरे हैं ९५

वेदसे बाहर जो वाक्यहै सो पुरुषकी बनाईहै इस
लिये अनित्यहै अर्थात् उत्पत्ति विनाश सहितहै
और अनित्य वस्तुका प्रमाण नहींहै और स्मृति
आदि जो वाक्यहै सो तो नित्यहै क्योंकि इन्होंका
मूल वेदहै इसलिये इन्होंका प्रमाणहै ९६ चारो

उत्पद्यंते च्यवंते च यान्यतो
न्यानि कानिचित् तान्यर्वा
कालिकतया निष्फलान्य
नृतानि च ९६ चातुर्वर्ण्यं त्र
यो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमाः
पृथक् भूतं भव्यं भविष्यंच
सर्वं वेदात्प्रसिध्यति ९७ श
ब्दः स्पर्शश्च रूपंच रसो गंध
श्च पंचमः वेदादेव प्रसूयंते
प्रसूति गुणकर्मतः ९८ ।

वर्ण तीनों लोक भिन्न भिन्न चारो आश्रम भूत भवि
ष्य वर्तमान जो कुछ कर्महै सो सब वेदहीसे प्र
सिद्ध होताहै ९७ सत्व रज तम इन गुणोंसे उत्प
न जो शब्द स्पर्श रूप रस गंध ये सब वेदही से उ
त्पन्न होतेहैं ९८ नित्यही सर्व जीवको धारण क
रने वाला जो वेद शास्त्रहै सोई पुरुषको श्रेष्ठ

रुषार्थ है यह मैं अर्थात् श्रेष्ठ मानता हूं ९९ सेना
पतिका कर्म राज्य दंड देना सर्व लोकका स्वामि
ता इन सबके योग्य वेद शास्त्र जानने वाला है

बिभर्ति सर्वभूतानि वेदशा
स्त्रं सनातनं तस्मादेतत्परं
मन्ये यज्जंतोरस्य साधनं ९९
सेनापत्यं च राज्यं च दंडने
तृत्वमेव च सर्वलोकाधि
पत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति
१०० यथा जातबलो वह्नि
र्दहत्यार्द्रानपि द्रुमान् तथा
दहति वेदज्ञः कर्मजं दोष
मात्मनः १०१

१०० जिस प्रकारसे बढी अग्नि गीले वृक्षको दहन
करती है तिस प्रकारसे वेद जानने वाला अपने
कर्मसे उत्पन्न दोषको दहन करता है १०१ ॥

वेद शास्त्र का मुख्य अर्थ जानने वाला कोई आश्रम
मे वास करत संते मोक्ष के योग्य होता है १२ जो अ
ज्ञ नही जानता इससे एक ग्रंथ पढने वाला बडा
है इससे पढे हूए को अर्थ जानने वाला बडा है इस
से व्यवसायी अर्थात् वेदोक्त कर्म करने वाला बडा

वेद शास्त्रार्थ तत्त्वज्ञो यत्र त
त्राश्रमे वसन् इहैव लोके ति
ष्ठन् स ब्रह्मभूयाय कल्पते १२
अज्ञेभ्यो ग्रंथिनः श्रेष्ठा ज्ञानि
भ्यो व्यवसायिनः धारिभ्यो ॰
ज्ञानिनः श्रेष्ठा ज्ञानिभ्यो व्य
वसायिनः १३ तपो विद्या च
विप्रस्य निःश्रेयसकरं परम्
तपसा किल्बिषं हंति विद्यया
मृत मश्नुते १४ ॥

है १३ तप अर्थात् अपना धर्म करना विद्या अर्थात्
आत्मज्ञान ये दोनों ब्राह्मण के मोक्ष का श्रेष्ठ उपाय
है क्यों कि तपसे पाप को नाश करता है और विद्या
से मोक्ष को पाता है १४ धर्म का तत्त्व जानने की इच्छा

करने वाला पुरुष प्रत्यक्ष अनुमान नानाप्रकारके
शास्त्रोक्त शब्द इन तीनों प्रमाणको अच्छे प्रकारसे
जाने १०५ वेद और स्मृति इन दोनोंको अच्छे तर्कसे
जो अनुसंधान करताहै सोई धर्मको जानताहै ।

प्रत्यक्षं चानुमानं च शास्त्रं च
विविधागमं त्रयं सुविदितं ।
कार्यं धर्मशुद्धिमभीप्सता १०५
आर्षं धर्मोपदेशं च वेदशा ।
स्त्राविरोधिना यस्तर्केणानु
संधत्ते स धर्मं वेद नेतरः १०६
नैःश्रेयसमिदं कर्म यथोदि
तमशेषतः मानवस्यास्य
शास्त्रस्य रहस्यमुपदिश्यते
१०७ ॥

इतरा नहीं १०६ भृगुजी कहतेहैं कि मोक्षदेने वाले
संपूर्ण कर्मको मैंने कहा अब इस शास्त्रकी गुप्त
बातको कहताहूं १०७ ॥

जो धर्म मैंने नहीं कहा उस धर्मको श्रेष्ठ ब्राह्मण कहै सो ।
करना शंका न करना ८ जिसने संपूर्ण वेदको धर्मसे
पढा वही श्रेष्ठ ब्राह्मण कहाताहै क्योंकि वेदके प्रत्यक्ष
करनेमे वही कारणहै ९ दशके ऊपर अथवा तीन

अनाम्नातेषु धर्मेषु कथं स्या ।
दिति चेद्भवेत् यं शिष्टा ब्राह्मणा
ब्रूयुः स धर्मः स्यादशंकितः ८
धर्मेणाधिगतो यैस्तु वेदः सप
रिबृंहणः ते शिष्टाः ब्राह्मणा ।
ज्ञेयाः श्रुति प्रत्यक्ष हेतवः ९
दशावरा वा परिषद्यं धर्मं परि
कल्पयेत् त्र्यवरा वापि वृत्तस्था
तं धर्मं न विचालयेत् १० ॥

के ऊपर ब्राह्मण समुदाय जोहै सो परिषत कहाताहै सो
जिस धर्मको कहै सो धर्म करना उसका लंघन न कर
ना १० तीनों वेदको एक शाखाको पढने वाला श्रु ।
ति स्मृतिसे विरोध रहित न्यायशास्त्रको पढनेवाला

म॰ स्मृ॰ टी॰ भा॰ ४२३

423

मीमांसा धर्मशास्त्र निरुक्त इन सभोंको जाननेवा-
ला ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ दश से उपरेहो सो प
रिषत कहातीहै ॥१११ ऋग्यजुः साम इन तीनो वेदके
शाखाको पढने वाला और स्मृति पुराण इसका
अर्थ जानने वाला तीन ब्राह्मण धर्मके संशयको हरै

त्रैविद्यो हैतुक स्तर्की नैरुक्तो
धर्मपाठकः त्रयश्चाश्रमिणः
पूर्वे परिषत्स्याद्दशावरा ॥१११
ऋग्वेदविद्यजुर्विच्च सामवेद-
विदेवच त्र्यवरा परिषज्ज्ञेया ध
र्म संशय निर्णये ॥११२ एकोपि
वेदविद्धर्मं यं व्यवस्येद्द्विजोत्त-
मः स विज्ञेयः परोधर्मो नाज्ञा
नामुदितो युतैः ॥११३ ॥

करै ॥११२ अर्थ सहित वेदको पढने वाला स्मृति पुराण
मीमांसा न्याय इन सभोंका अर्थ जानने वाला एक
भी जिस धर्मको कहै सोई धर्म है दश सहस्र मूर्ख कहै
है सो धर्म नहीहै ॥११३ ॥

वत और मंत्र इन्होंसे रहित केवल जाति हीसे जीने
वाले हजार भीहों तो पवित्र नहीं कहतेहैं ॥ ८ ॥ त
मोगुणसे युक्त मूर्ख धर्मको न जानने वाला जो पा
पका प्रायश्चित्त कहतेहैं इसको वह पाप सौ टुकग्र

अव्रताना ममंत्राणां जातिमा
त्रोप जीविनां सहस्रशः समेत
ानां परिषत्त्वं न विद्यते ॥ ८ ॥
यं वदंति तमोभूता मूर्खा ध
र्ममतद्विदः तत्पापं शतधा
भूत्वा तद्वक्तृन् नु गच्छति ॥ ५ ॥
एतद्वोभिहितं सर्वं निःश्रेयस
करं परम् अस्मादप्रच्युतो विप्रः
प्राप्नोति परमां गतिम् ॥ ६ ॥

होके पढ़ंचताहै ॥ ५ ॥ भृगुजी कहतेहैं कि हे ऋषिः
यो आप लोगोंसे कल्याण देनेवाला जो धर्महै इस
को कहा इस धर्मसे च्युत नहो ब्राह्मण तो परमगति
को पाताहै ॥ ६ ॥ लोकका हित करन सेते भगवान

म०
स्० टी०
भा०
४२४

454

देवने इस प्रकारसे परम गुह्य धर्मको हमसे क-
हा ॥ १७ ॥ निश्चिन्त होके आत्मामें संपूर्णको देखे इस
को देखत सन्ते अधर्ममें मनको न करै ॥ १८ ॥ संपूर्ण

एवं स भगवान्देवो लोकानां
हितकाम्यया धर्मस्य परमं
गुह्यं ममेदं सर्वमुक्तवान् ॥ १७ ॥
सर्वमात्मनि संपश्येत्सत्त्वा
सत्त्वसमाहितः सर्वं ह्यात्म-
नि संपश्यन्नाधर्मे कुरुते म-
नः ॥ १८ ॥ आत्मैव देवताः स-
र्वाः सर्वमात्मन्यवस्थितं आ-
त्मा हि जनयत्येषां कर्मयो-
गं शरीरिणाम् ॥ १९ ॥

संपूर्ण देवता आत्मा है आत्माने संपूर्ण स्थित है संपूर्ण
शरीरवालेके कर्मयोगको आत्मा उत्पन्न करता है ॥ १९ ॥

हृदयके आकाशमें बाहरके आकाशको लीनकरै
चेष्टा और स्पर्श इन्द्रियोंके कारण भूत देहकी वायुमें
बाहरकी वायुको और उदरके तेजमें बाहरके तेज
को देहके जलमें बाहरके जलको पृथिवी का भा
गजो शरीरहै उसमें बाहरकी पृथिवी को लीन क
रै अर्थात् एक रूप करै ४ मनमें चंद्रको श्रोत्रमें ।

ं मनिविशोये वेश चेष्टनेन्स
श्रोत्रे दिशं श्रोत्रेंध्वनिना दिशः
त्वचं वायौ च भूतेषु ।२४।
मनः स्पृहे दिशः श्रोत्रे कोत
विष्णु बले हरे वाच्यग्नि मित्र
मन्मेर्गे प्रजने च प्रजापतिं
।२८। अवशासितारं सर्वेषां मणी
योम मणोरपि रुक्माभं स्व
प्नधी गम्य विद्यात्तं पुरुषं ।
परम् ।२८।

दिशाको पाद इंद्रियमें विष्णुको बलमें इन्द्रको वाणी
इंद्रियमें अग्निको पायु अर्थात् मार्ग इंद्रियमें मित्रको
उपस्थ अर्थात् लिंग भाग इंद्रियमें प्रजापतिको ली
नकरै ।२८। सभोंका शासन करने वाला छोटेसे भी
छोटा सुवर्णके समान कांति वाला स्वप्नकी बुद्धि
सहश ज्ञान करके ग्रहण योग्य पुरुष जो है उस

को सर्वोत्कृष्ट जाने १२२ मनुजीको कोई मनुकोई
अग्निकोई प्रजापतिकोई इंद्रकोई नित्य ब्रह्म कह
तेहैं १२३ यह आत्मा संपूर्ण प्राणियोंकी पृथिवी ।
आदि पंच महाभूतोंकी मूर्ति करके व्यापित होके

एतमेके वदंत्यग्निं मनुमेके प्र
जापतिम् इंद्रमेके परेप्राण
मपरेब्रह्म शाश्वतम् १२३ ए
ष सर्वाणि भूतानि पंचभि ।
र्व्याप्य मूर्तिभिः जन्मवृद्धि ।
क्षयैर्नित्यं संसारयति चक्र
वत् १२४ एवं यः सर्वभूतेष
पश्यत्यात्मानमात्मना सस
र्वसमतामेत्य ब्रह्माभ्येति प
रंपदम् १२५

जन्मवृद्धि क्षयकरके नित्यही चक्रकी नाईं संसर ।
ण करताहै १२४ इसरीतिसे जो पुरुष सब भूतोंमें
आत्मा करके आत्माको देखताहै सो सबकी सम ।
ताको पाके उत्कृष्ट पदको पाताहै १२५ ॥

भृगु ऋषिका कहा हुआ मनुके शास्त्रको पठन ।
करत संते नित्यही आचार सहित ब्राह्मण क्षत्रिय
वैश्य होतेंहैं और यथेष्ट गतिको पावेंहै १२६ इ
तिश्री मनुस्मृति भाषा टीकायां कुल्लुक भट्ट व्याख्या

इत्येतन्मानवं शास्त्रं भृगु ।
प्रोक्तं पठन् द्विजः भवत्या ।
चारवान्नित्यं यथेष्टां प्राप्नुया
द्गतिम् १२६ इति मानवे ध
र्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहि
तायां द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

नुसारिण्यां श्री बाह्देवीदयालसिंह कारितायां श्री
कम्पनी संस्कृत पाठशालीय गुलजारशर्म पंडित
कृतायां द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

यह मनुस्मृतीका पुस्तक श्रीमन्महाराजा साहिब
रणवीरसिंह बहादर जी सी एस आइ इंद्र महेंद्र
सिपर सलतनत जंबू काश्मीर व तिब्बतादिपति
के पढनेकाहै ॥

